

M.A. 3RD POL.SCI.

तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक विश्लेषण

Chapter-1

****तुलनात्मक राजनीति**** (Comparative Politics) राजनीति विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जो विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन ***तुलनात्मक दृष्टिकोण*** से करती है।

☐ ****तुलनात्मक राजनीति का अर्थ (Meaning of Comparative Politics):****

तुलनात्मक राजनीति का अर्थ है विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों, सरकारों, राजनीतिक संस्थाओं, नीति-निर्माण प्रक्रियाओं, राजनीतिक संस्कृति, और राजनीतिक व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन। इसमें यह देखा जाता है कि विभिन्न देशों की राजनीतिक व्यवस्थाएँ किस प्रकार कार्य करती हैं, उनके बीच समानताएँ और भिन्नताएँ क्या हैं, और किन कारकों से राजनीतिक संस्थाएँ प्रभावित होती हैं।

☐ ****तुलनात्मक राजनीति की परिभाषाएँ (Definitions of Comparative Politics):****

1. ****लेस्टर मिलब्राथ (Lester Milbrath):**** > "तुलनात्मक राजनीति वह अध्ययन है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों की संस्थाओं और प्रक्रियाओं की तुलना की जाती है।"
2. ****जी. ए. एल. मुनरो (G. A. L. Munro):**** > "तुलनात्मक राजनीति का उद्देश्य विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों का वैज्ञानिक अध्ययन करना है, जिससे उनके सामान्य सिद्धांतों को समझा जा सके।"
3. ****रॉबर्ट ए. डाहल (Robert A. Dahl):**** > "तुलनात्मक राजनीति राजनीति विज्ञान की वह शाखा है, जो विभिन्न देशों की सरकारों और राजनीतिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करती है।"
4. ****रॉय मैक्रीडिस (Roy Macridis):**** "तुलनात्मक राजनीति का उद्देश्य है — संस्थाओं की तुलना करने की बजाय प्रक्रिया, कार्य और व्यवहार पर ध्यान देना।"

****तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति (Nature of Comparative Politics)**** तुलनात्मक राजनीति राजनीति विज्ञान की एक विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक शाखा है, जो विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, विचारधाराओं और व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन करती है। इसकी प्रकृति को समझने के लिए हमें इसके दृष्टिकोण, दायरे, और अध्ययन की विधियों पर ध्यान देना होता है।

****तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति की प्रमुख विशेषताएँ:****

1. ****तुलनात्मक विश्लेषणात्मक प्रकृति**** तुलनात्मक राजनीति विभिन्न देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं, सरकारों, और संस्थाओं की तुलना करती है। यह तुलना समानताओं और भिन्नताओं को समझने के लिए की जाती है।
2. ****वैज्ञानिक एवं पद्धतिगत प्रकृति**** यह शाखा वैज्ञानिक तरीकों, जैसे- अवलोकन, विश्लेषण, डेटा संग्रह और तुलनात्मक विधियों का उपयोग करती है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण के आगमन के बाद तुलनात्मक राजनीति अधिक वैज्ञानिक बन गई है।
3. ****व्यवहारवादी दृष्टिकोण का समावेश**** 20वीं शताब्दी के बाद तुलनात्मक राजनीति में केवल संस्थाओं का नहीं, बल्कि राजनीतिक व्यवहार, संस्कृति, दृष्टिकोण, और क्रियाकलापों का भी अध्ययन किया जाने लगा है।
4. ****अंतर्राष्ट्रीय एवं पार-सांस्कृतिक दृष्टिकोण**** तुलनात्मक राजनीति विभिन्न देशों की सरकारों और राजनीतिक व्यवस्थाओं का पार-सांस्कृतिक अध्ययन करती है, जिससे वैश्विक राजनीतिक समझ विकसित होती है।
5. ****सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रकृति**** यह न केवल राजनीतिक सिद्धांतों को जन्म देती है, बल्कि विभिन्न राजनीतिक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान भी सुझाती है। इससे नीति-निर्माण में मदद मिलती है।
6. ****गतिशील एवं परिवर्तनीय**** तुलनात्मक राजनीति स्थिर नहीं है; यह समय, समाज और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। यह नए विचारों, आंदोलनों और तकनीकों के अनुसार खुद को अनुकूलित करती है।

7. **सरकार से परे अध्ययन* यह केवल सरकार या राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें *राजनीतिक दलों, दबाव समूहों, सामाजिक आंदोलनों, विचारधाराओं, राजनीतिक संस्कृति* आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति (Nature of Comparative Politics) तुलनात्मक राजनीति राजनीति विज्ञान की एक विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक शाखा है, जो विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, विचारधाराओं और व्यवहारों का *तुलनात्मक अध्ययन* करती है। इसकी प्रकृति को समझने के लिए हमें इसके दृष्टिकोण, दायरे, और अध्ययन की विधियों पर ध्यान देना होता है।

☐ **तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति की प्रमुख विशेषताएँ:**

1. **तुलनात्मक विश्लेषणात्मक प्रकृति** तुलनात्मक राजनीति विभिन्न देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं, सरकारों, और संस्थाओं की तुलना करती है। यह तुलना समानताओं और भिन्नताओं को समझने के लिए की जाती है।

2. **वैज्ञानिक एवं पद्धतिगत प्रकृति** यह शाखा वैज्ञानिक तरीकों, जैसे- अवलोकन, विश्लेषण, डेटा संग्रह और तुलनात्मक विधियों का उपयोग करती है। व्यवहारवादी दृष्टिकोण के आगमन के बाद तुलनात्मक राजनीति अधिक वैज्ञानिक बन गई है।

3. **व्यवहारवादी दृष्टिकोण का समावेश** 20वीं शताब्दी के बाद तुलनात्मक राजनीति में केवल संस्थाओं का नहीं, बल्कि राजनीतिक व्यवहार, संस्कृति, दृष्टिकोण, और क्रियाकलापों का भी अध्ययन किया जाने लगा है।

4. **अंतर्राष्ट्रीय एवं पार-सांस्कृतिक दृष्टिकोण** तुलनात्मक राजनीति विभिन्न देशों की सरकारों और राजनीतिक व्यवस्थाओं का पार-सांस्कृतिक अध्ययन करती है, जिससे वैश्विक राजनीतिक समझ विकसित होती है।

5. **सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रकृति** यह न केवल राजनीतिक सिद्धांतों को जन्म देती है, बल्कि विभिन्न राजनीतिक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान भी सुझाती है। इससे नीति-निर्माण में मदद मिलती है।

6. ****गतिशील एवं परिवर्तनीय**** तुलनात्मक राजनीति स्थिर नहीं है; यह समय, समाज और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। यह नए विचारों, आंदोलनों और तकनीकों के अनुसार खुद को अनुकूलित करती है।

7. ****सरकार से परे अध्ययन**** यह केवल सरकार या राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ***राजनीतिक दलों, दबाव समूहों, सामाजिक आंदोलनों, विचारधाराओं, राजनीतिक संस्कृति*** आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

****संक्षेप में:**** ****"तुलनात्मक राजनीति एक वैज्ञानिक, विश्लेषणात्मक, बहुआयामी और व्यवहार उन्मुख अध्ययन है, जो विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं की तुलनात्मक समीक्षा के माध्यम से राजनीति की सार्वभौमिक समझ विकसित करता है।"**

Chapter -2

तुलनात्मक राजनीति का विकास

****तुलनात्मक राजनीति के विकास की विवेचना (Development of Comparative Politics)****

तुलनात्मक राजनीति का विकास एक ****ऐतिहासिक****, ****वैचारिक**** और ****पद्धतिगत**** प्रक्रिया से होकर गुज़रा है। यह विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक अनेक चरणों में हुआ है। प्रत्येक चरण में तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का ****दृष्टिकोण****, ****विधियाँ****, और ****विषय-वस्तु**** बदलती रही है।

****तुलनात्मक राजनीति के विकास के प्रमुख चरण:****

1. प्राचीन काल (Ancient Period):**

प्रमुख विचारक: ****प्लेटो, अरस्तू**** तुलनात्मक राजनीति की शुरुआत ****अरस्तू**** से मानी जाती है। अरस्तू ने 158 राज्यों की तुलना कर उनकी शासन प्रणालियों को वर्गीकृत किया:

राजतंत्र (Monarchy), अरिस्टोक्रेसी (Aristocracy), लोकतंत्र (Democracy) आदि।

* अरस्तू को "तुलनात्मक राजनीति का जनक" कहा जाता है। अरस्तू ने कहा: ****"राजनीति का उद्देश्य है – उत्तम शासन प्रणाली की खोज।**"**

****2. मध्यकाल (Medieval Period):****

▣ प्रमुख विशेषताएँ:

यह काल धार्मिक और नैतिक मूल्यों से प्रभावित था।

* तुलनात्मक अध्ययन पर ज्यादा बल नहीं था।

* चर्च और धर्म आधारित शासन पर अधिक ध्यान था। तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति

****सैद्धांतिक**** और ****आदर्शवादी**** रही। ****3. प्रारंभिक आधुनिक काल (Renaissance to 19th Century):**** प्रमुख विचारक: ****मैकवेली, लॉक, रूसो, मॉटेस्क्यू**** की पुस्तक ****"The Spirit of Laws"** में तुलनात्मक विधियों का उपयोग किया गया। शासन संस्थाओं, कानूनों और

राजनीतिक विचारधाराओं की तुलना शुरू हुई। राजनीति को धर्म से अलग कर **धर्मनिरपेक्ष** और यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया गया।

4. पारंपरिक दृष्टिकोण (Traditional Approach – 19वीं सदी तक):

प्रमुख विशेषताएँ: अध्ययन का केन्द्र बिंदु **राज्य और उसकी संस्थाएँ** थीं।

* विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका की तुलना होती थी।

* अध्ययन **कानूनी और संस्थागत** था।

* तुलनात्मक अध्ययन **वर्णनात्मक (descriptive)** और **आदर्शवादी (normative)** था।

* 5. व्यवहारवादी क्रांति (Behavioural Revolution – 1950s के बाद):

प्रमुख विचारक: **डेविड ईस्टन, गैब्रियल आलमंड, सिडनी वर्बा**

1950 के दशक में तुलनात्मक राजनीति में एक **बड़ी क्रांति** आई – जिसे **व्यवहारवादी क्रांति** कहा जाता है। फोकस संस्थाओं से हटकर **व्यक्ति, समूह, राजनीतिक संस्कृति और व्यवहार** पर आ गया। अनुसंधान में **आंकड़ों, सर्वेक्षणों, सांख्यिकीय विधियों** का उपयोग हुआ। राजनीति को एक **सामाजिक विज्ञान** के रूप में देखने की शुरुआत हुई।

डेविड ईस्टन ने राजनीति को **“Authoritative Allocation of Values”** कहा।

* 6. उत्तर-व्यवहारवादी चरण (Post-Behavioural Phase – 1970s के बाद):

प्रमुख विशेषताएँ: केवल वैज्ञानिक विधियों पर निर्भरता को चुनौती दी गई।

* राजनीतिक अध्ययन को **समस्या-केन्द्रित** और **प्रासंगिक (relevant)** बनाने पर जोर।

* **“मूल्य और तथ्य”**, दोनों के संतुलन की बात।

* विकासशील देशों, सामाजिक आंदोलनों, मानव अधिकारों जैसे मुद्दे भी अध्ययन में शामिल हुए।

* 7. समकालीन चरण (Contemporary Phase – वर्तमान समय):

प्रमुख प्रवृत्तियाँ: वैश्वीकरण, पर्यावरण, पहचान की राजनीति (identity politics), डिजिटल राजनीति आदि पर ध्यान।* तुलनात्मक अध्ययन में अब *गहराई (depth)* और *विविधता (diversity)* दोनों हैं।* क्वालिटेटिव और क्वांटिटेटिव दोनों पद्धतियों का प्रयोग हो रहा है।* लोकतंत्र की गुणवत्ता, शासन की पारदर्शिता, और जन भागीदारी पर बल।

*निष्कर्ष (Conclusion):**"तुलनात्मक राजनीति ने प्राचीन काल के संस्थागत और आदर्शवादी दृष्टिकोण से लेकर आधुनिक समय के वैज्ञानिक, व्यवहारवादी और बहुआयामी दृष्टिकोण तक एक लंबी यात्रा तय की है। आज यह केवल सरकारों की तुलना नहीं, बल्कि राजनीतिक जीवन के हर पहलू का तुलनात्मक और गहन अध्ययन करती है।"***

2 **तुलनात्मक राजनीति का सन 1945 के बाद विकास**द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) के बाद तुलनात्मक राजनीति का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। 1945 के बाद इस क्षेत्र में एक **नई क्रांति** आई, जिसे हम **व्यवहारवादी क्रांति** (Behavioural Revolution) कहते हैं। इससे पहले तक तुलनात्मक राजनीति मुख्यतः **संस्थाओं की कानूनी और औपचारिक संरचना** का अध्ययन करती थी, लेकिन अब इसका दृष्टिकोण अधिक **व्यवहारपरक, वैज्ञानिक, और व्यापक** बन गया।

*1945 के बाद तुलनात्मक राजनीति के विकास की मुख्य प्रवृत्तियाँ:***

1. व्यवहारवादी क्रांति (Behavioural Revolution) – 1950s–1960s**

प्रमुख प्रवर्तक:

डेविड ईस्टन (David Easton)

* **गैब्रिएल आलमंड (Gabriel Almond)**

* **सिडनी वर्बा (Sidney Verba)**

□ प्रमुख विशेषताएँ: ध्यान का केन्द्र **राजनीतिक व्यवहार** की ओर स्थानांतरित हुआ।*
राज्य और संस्थाएँ अब अध्ययन का एक हिस्सा मात्र रहीं, *व्यक्ति और समाज* प्रमुख केंद्र बने।*वैज्ञानिक पद्धति**, **सांख्यिकीय विश्लेषण**, **डेटा संग्रह**, और **सर्वेक्षणों** का प्रयोग बढ़ा।

उदाहरण: गैब्रिएल आलमंड का *Structural Functional Approach*

* वर्बा का *Comparative Civic Culture Study*

2. विकासशील देशों की राजनीति का उदय (Rise of Political Studies in Developing Countries)1945 के बाद कई **नए स्वतंत्र राष्ट्र** अस्तित्व में आए (जैसे भारत, अफ्रीकी देश, एशियाई राष्ट्र)।

* इन देशों की राजनीतिक समस्याओं (जैसे अस्थिरता, सैन्य शासन, भ्रष्टाचार) पर तुलनात्मक अध्ययन शुरू हुआ।

* *"राजनीतिक विकास"*, *"राष्ट्र निर्माण"*, और *"आधुनिकीकरण सिद्धांत"* जैसे विषय उभरे।

प्रमुख विचारक:**लूसियन पाइ (Lucian Pye)** **एस. एन. ईसेनस्टैड (S. N. Eisenstadt)**

☐ **3. उत्तर-व्यवहारवादी चरण (Post-Behavioural Phase) — 1970s के बाद**

प्रतिक्रिया क्यों हुई?

व्यवहारवाद को अत्यधिक वैज्ञानिक और *"प्रासंगिकता से विहीन"* कहा गया।

* यह जन समस्याओं को हल करने में असफल रहा।

☐ डेविड ईस्टन का नारा:*Relevance and Action**" (राजनीति का अध्ययन समाज के लिए उपयोगी और सक्रिय होना चाहिए)

विशेषताएँ: सामाजिक न्याय, मानव अधिकार, गरीबी, लैंगिक असमानता जैसे मुद्दों का समावेश

* **मूल्य (values)** और **तथ्य (facts)** दोनों पर ध्यान

*4. समकालीन प्रवृत्तियाँ (Contemporary Trends) — 1990s से वर्तमान तक**

वैश्वीकरण का प्रभाव:विश्व की राजनीतिक व्यवस्थाएँ आपस में अधिक जुड़ गईं।

* वैश्विक तुलना (Global Comparison) पर बल☐ नए अध्ययन क्षेत्र:

* पहचान की राजनीति (Identity Politics)* पर्यावरणीय राजनीति

- * सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल लोकतंत्र
- * शासन की पारदर्शिता (Good Governance)
- * लोकतंत्र की गुणवत्ता (Quality of Democracy)

▣ अध्ययन की नई विधियाँ:

मिक्स्ड मेथड (quantitative + qualitative)

- * केस स्टडीज़ और फ़िल्ड वर्क
- * राजनीतिक नेटवर्क विश्लेषण

*सारणीबद्ध रूप में – 1945 के बाद तुलनात्मक राजनीति का विकास**

| चरण | समय | प्रमुख विशेषताएँ

| प्रमुख विचारक

| व्यवहारवादी | 1950–1960 | वैज्ञानिक, व्यवहार पर बल | ईस्टन, आलमंड, वर्बा |

| विकासशील देशों पर फोकस | 1950s–70s | नव स्वतंत्र राष्ट्रों का अध्ययन | लूसियन पाइ |

| उत्तर-व्यवहारवादी | 1970s–80s | मूल्य + तथ्य, प्रासंगिकता | ईस्टन (Post-behavioural) |

| समकालीन चरण | 1990s–वर्तमान | वैश्वीकरण, डिजिटल राजनीति, विविधता | विभिन्न समकालीन विद्वान |

निष्कर्ष (Conclusion): "1945 के बाद तुलनात्मक राजनीति ने संस्थागत अध्ययन से बाहर निकल कर एक वैज्ञानिक, बहुआयामी, और व्यवहार-केंद्रित रूप लिया। अब यह एक जीवंत और प्रासंगिक अनुशासन बन गया है, जो आधुनिक समाजों की जटिलताओं को समझने में सक्षम है।"

☐ ****तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की वर्तमान स्थिति**** आज के वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और सामाजिक बदलावों के युग में तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन और अधिक ****प्रासंगिक****, ****व्यापक**** और ****बहुआयामी**** हो गया है। अब यह केवल सरकारों और संस्थाओं की तुलना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज की जटिल राजनीतिक वास्तविकताओं को समझने का एक ****वैज्ञानिक और व्यावहारिक उपकरण**** बन गया है।

****तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की वर्तमान स्थिति की प्रमुख विशेषताएँ:****

1. ****अंतर-विषयी (Interdisciplinary) दृष्टिकोण**** आज तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान आदि से जोड़कर किया जा रहा है।

* राजनीतिक व्यवहार को सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भों में समझा जा रहा है।

☐ 2. ****आधुनिक मुद्दों का समावेश**** अब अध्ययन का केंद्र केवल ****संस्थाएँ और शासन**** नहीं, बल्कि—

****लैंगिक समानता (Gender Equality)****

****पर्यावरणीय राजनीति (Environmental Politics)****

* ****मानवाधिकार (Human Rights)****

* ****आतंकवाद और कट्टरवाद****

* ****सामाजिक आंदोलनों****

* ****पहचान की राजनीति (Identity Politics)**** जैसे विषय भी शामिल हैं।

3. ****विकासशील देशों पर अधिक ध्यान**** तुलनात्मक राजनीति अब सिर्फ पश्चिमी देशों तक सीमित नहीं है। भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, नाइजीरिया आदि जैसे देशों की ****राजनीतिक अस्थिरता****, ****लोकतंत्र की गुणवत्ता****, ****भ्रष्टाचार****, ****जातीय संघर्ष**** जैसे मुद्दों पर गहन अध्ययन हो रहा है। ☐ 4. ****डिजिटल और सूचना युग का प्रभाव**** सोशल मीडिया, फेक न्यूज, साइबर राजनीति और डिजिटल लोकतंत्र तुलनात्मक राजनीति के नए अध्ययन क्षेत्र बन चुके हैं।

* डिजिटल उपकरणों के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी और जनमत की दिशा बदल रही है।

5. ****नए शोध उपकरण और विधियाँ (New Tools & Methodologies)****

गुणात्मक (Qualitative) और परिमाणात्मक (Quantitative) विधियों का मिश्रण

* फील्ड स्टडी, केस स्टडी, इंटरव्यू, डेटा विश्लेषण

* सॉफ्टवेयर आधारित अनुसंधान (जैसे: SPSS, R, NVivo)

6. ****लोकतंत्र की गुणवत्ता और शासन की पारदर्शिता पर फोकस****

तुलनात्मक अध्ययन अब यह जानने का प्रयास करता है कि कौन-सा शासन मॉडल ज्यादा ****उत्तरदायी (responsive)****, ****पारदर्शी (transparent)**** और ****जन-केंद्रित (people-centric)****

7. ****वैश्वीकरण और क्षेत्रीय एकीकरण का प्रभाव**** तुलनात्मक राजनीति अब केवल *राष्ट्रों की तुलना* तक सीमित नहीं है। ****EU, ASEAN, SAARC****, जैसे क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका का विश्लेषण भी इसका हिस्सा है। वैश्विक चुनौतियों (जैसे जलवायु परिवर्तन, महामारी, प्रवासन) पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

8. ****सैद्धांतिक विविधता (Theoretical Pluralism)**** अब तुलनात्मक राजनीति में केवल एक सिद्धांत पर निर्भर नहीं रहा जाता।

* ****मार्क्सवाद, नव-संस्थागतवाद, उत्तर-आधुनिकता, स्त्रीवाद, संरचनावाद**** आदि विचारधाराएँ एक साथ विमर्श का हिस्सा बन रही हैं।

निष्कर्ष (Conclusion):*********"तुलनात्मक राजनीति आज एक जीवंत, विकसित और प्रासंगिक अनुशासन है, जो तेजी से बदलती वैश्विक और स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियों को समझने का प्रयास कर रहा है। यह अध्ययन अब केवल संस्थाओं की तुलना नहीं, बल्कि राजनीतिक व्यवहार, संस्कृति, विचारधाराओं और नीतियों की बहुआयामी तुलना का साधन बन गया है।"******

Chapter-3

तुलनात्मक राजनीति: परंपरागत तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य, उपयोगिता एवं समस्याएँ

****तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की पारंपरिक पद्धतियों की विवेचना**** तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन प्रारंभ में ****संस्थागत, वर्णनात्मक और आदर्शवादी दृष्टिकोण**** पर आधारित था। इसे ही हम ****पारंपरिक पद्धति**** (Traditional Approach/Methods) कहते हैं। यह दृष्टिकोण मुख्यतः ****द्वितीय विश्व युद्ध से पहले**** प्रचलित था, जिसमें राज्य की संस्थाओं, उनके ढांचे, विधिक नियमों और अधिकारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता था।

पारंपरिक पद्धतियों की प्रमुख विशेषताएँ: **** 1. संस्थागत दृष्टिकोण (Institutional Approach)**** राज्य की ****राजनीतिक संस्थाओं**** (जैसे: विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका) का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता था। यह देखा जाता था कि कौन-सी संस्था कैसे काम करती है, उसका ढांचा क्या है। *उदाहरण:* ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली बनाम अमेरिका की राष्ट्रपति प्रणाली का अध्ययन।

**** 2. विधिक (कानूनी) दृष्टिकोण (Legal Approach)**** संविधान, कानून, अधिकार और कर्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन। सरकार की वैधता, अधिकारक्षेत्र और शक्तियों पर जोर। राजनीतिक संस्थाओं को "कानूनी संस्थाओं" के रूप में देखा जाता था।

□ **** 3. आदर्शवादी दृष्टिकोण (Normative Approach)**** अध्ययन में यह देखा जाता था कि "राजनीतिक संस्थाएं कैसी होनी चाहिए", न कि वे वास्तव में कैसी हैं। * मूल्य आधारित, नैतिक और दर्शनपरक दृष्टिकोण। * इसमें ****"उत्तम शासन प्रणाली की खोज**** को प्राथमिकता दी जाती थी।

□ 4. **वर्णनात्मक पद्धति (Descriptive Method)**

* तथ्यों और संस्थाओं का केवल **वर्णनात्मक विश्लेषण** होता था, आलोचनात्मक या व्यवहार आधारित नहीं।

* तुलनात्मक अध्ययन में गहराई या विश्लेषणात्मकता की कमी थी।

□ 5. **पश्चिम-केंद्रित अध्ययन (Eurocentric Focus)**

* केवल पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों की प्रणालियों का अध्ययन होता था।

* विकासशील देशों की राजनीति, संस्कृति, परंपराएं और समस्याएं उपेक्षित थीं।

□ **प्रमुख विचारक (Main Thinkers):**

| विचारक | योगदान

|

| ----- | ----- |

| ****अरस्तू**** | शासन के प्रकारों की तुलना की - पहली तुलनात्मक विधि का प्रयोग |

| ****मोंटेस्क्यू**** | विधि और संस्थाओं की तुलनात्मक पद्धति (*The Spirit of Laws*) |

| ****लॉक, रूसो, मैकियावेली**** | आदर्श राजनीतिक संस्थाओं की व्याख्या की |

□ ****पारंपरिक पद्धतियों की सीमाएँ (Limitations):****

1. ****वास्तविक राजनीतिक व्यवहार की अनदेखी****

* जनता, मतदाता, दबाव समूह, आंदोलनों आदि की भूमिका की उपेक्षा।

2. ****तथ्य की बजाय आदर्शों पर जोर****

* यह बताया गया कि राजनीति कैसी ***होनी चाहिए***, न कि जैसी ***है***।

3. ****विकासशील देशों की उपेक्षा****

* केवल यूरोपीय और अमेरिकी प्रणालियों पर फोकस रहा।

4. **अनवैज्ञानिक पद्धति**

* न तो डेटा का उपयोग होता था, न ही वैज्ञानिक विधियों का।

□ *निष्कर्ष (Conclusion):**

> **"तुलनात्मक राजनीति की पारंपरिक पद्धतियाँ राजनीति को संस्थाओं और कानूनों तक सीमित रखती थीं। हालांकि इन पद्धतियों ने राजनीतिक अध्ययन की नींव रखी, लेकिन व्यवहार, समाज और संस्कृति जैसे पहलुओं की अनदेखी के कारण ये सीमित साबित हुईं। इसी कारण 1950 के बाद व्यवहारवादी पद्धति का उदय हुआ।"**

□ **परंपरागत दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताओं का आलोचनात्मक अध्ययन**

(Critical Evaluation of the Main Features of Traditional Approach in Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति में ****परंपरागत दृष्टिकोण**** (Traditional Approach) वह प्रारंभिक पद्धति है जिसमें राज्य, सरकार और राजनीतिक संस्थाओं का ****कानूनी और संस्थागत ढंग से अध्ययन**** किया जाता था। यह दृष्टिकोण प्राचीन काल से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध (1945) तक प्रभावी रहा।

****मुख्य विशेषताएँ एवं उनका आलोचनात्मक अध्ययन:****

1. **संस्थात्मकता पर बल (Emphasis on Institutions)******

****विशेषता:****

* राज्य की विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका आदि संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता था।

* शासन प्रणाली (जैसे लोकतंत्र, तानाशाही) की तुलना संस्थागत ढांचे के आधार पर होती थी।

****आलोचना:****

- * इससे *राजनीतिक व्यवहार, सामाजिक संदर्भ* और *जन-सहभागिता* की उपेक्षा हुई।
- * यह नहीं बताया गया कि ये संस्थाएं *वास्तव में कैसे काम करती हैं*।

□ 2. **कानूनी एवं संवैधानिक दृष्टिकोण (Legal & Constitutional Focus)**

विशेषता:

- * कानूनों, संविधानिक प्रावधानों और अधिकारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- * शासन की वैधता (legitimacy) और शक्ति की संरचना पर बल।

आलोचना:

- * संविधान और कानून का अध्ययन पर्याप्त नहीं है अगर **वास्तविक राजनीतिक शक्ति** गैर-संवैधानिक तत्वों के हाथ में हो।
- * जैसे: कई अधिनायकवादी देशों में *संविधान तो लोकतांत्रिक है*, लेकिन व्यवहार तानाशाही है।

□ 3. **आदर्शवादिता (Normative Orientation)**

विशेषता:

- * यह बताने का प्रयास किया गया कि "राजनीतिक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए"।
- * नीति और मूल्यों पर ज़ोर।

आलोचना:

- * राजनीति के यथार्थ पक्ष की अनदेखी की गई।
- * व्यावहारिक समस्याओं के समाधान नहीं दिए गए।
- * * "कैसा होना चाहिए" * पर बल था, * "कैसा है" * यह नहीं बताया गया।

□ 4. **वर्णनात्मकता (Descriptive Nature)**

विशेषता:

* राजनीतिक संस्थाओं और प्रणालियों का केवल *वर्णन* किया गया।

* तुलनात्मक अध्ययन सतही स्तर पर किया गया।

****आलोचना:****

* विश्लेषणात्मक गहराई की कमी रही।

* न ही कारण बताए गए, न ही प्रभाव; केवल विवरण।

□ 5. **यूरो-केंद्रितता (Eurocentric Bias)**

****विशेषता:****

* अध्ययन का केंद्र ****यूरोप और अमेरिका**** की राजनीतिक प्रणालियाँ रहीं।

****आलोचना:****

* एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे विकासशील देशों की समस्याओं और विशिष्टताओं की उपेक्षा की गई।

* उपनिवेशवाद, जातीय संघर्ष, गरीबी जैसे मुद्दों का कोई विश्लेषण नहीं किया गया।

□ 6. **अवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Non-scientific Approach)**

****विशेषता:****

* अध्ययन दर्शनशास्त्रीय और नैतिक था, वैज्ञानिक नहीं।

* डेटा, अनुभवजन्य अध्ययन, या सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग नहीं होता था।

****आलोचना:****

* इसे ****"अतिशय अमूर्त और सैद्धांतिक"*** कहा गया।

* यह पद्धति ***विश्वसनीय निष्कर्ष*** निकालने में असमर्थ रही।

□ ****उदाहरण के रूप में:****

* **अरस्तू** ने शासन के प्रकारों को वर्गीकृत किया, लेकिन शासन कैसे बदलते हैं – इसका वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं दिया।

* **मॉटेस्क्यू** ने शक्तियों के पृथक्करण की वकालत की, पर व्यवहारिक कार्यान्वयन पर चर्चा नहीं की।

□ *निष्कर्ष (Conclusion):*

> * "परंपरागत दृष्टिकोण ने तुलनात्मक राजनीति की नींव रखी और संस्थागत समझ को जन्म दिया, लेकिन यह व्यवहार, समाज और संस्कृति जैसे राजनीतिक यथार्थों से कटे हुए थे। इसकी वर्णनात्मकता, आदर्शवादिता, और यूरोप-केंद्रितता ने इसके महत्व को सीमित कर दिया। यही कारण था कि 1950 के बाद व्यवहारवादी दृष्टिकोण का उदय हुआ, जिसने तुलनात्मक राजनीति को एक वैज्ञानिक, व्यवहारपरक और समसामयिक अनुशासन बनाया।"*

□ तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागम

(Modern Approaches to Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति में **1945 के बाद** विशेष रूप से **व्यवहारवादी क्रांति** के बाद कई नए उपागम (approaches) विकसित हुए। इन उपागमों ने राजनीति के अध्ययन को अधिक **वैज्ञानिक, बहुआयामी, और प्रासंगिक** बनाया है। आधुनिक उपागम पारंपरिक संस्थागत

दृष्टिकोण से हटकर राजनीति के ****व्यवहार, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचनाओं**** आदि पहलुओं को भी शामिल करते हैं।

□ तुलनात्मक राजनीति के प्रमुख आधुनिक उपागम:

1. ****व्यवहारवादी उपागम (Behavioural Approach)****

- * 1950-60 के दशक में उभरा।
- * राजनीति को ****व्यक्तियों, समूहों, और राजनीतिक व्यवहार**** के संदर्भ में समझना।
- * ***सर्वेक्षण***, ***सांख्यिकीय विश्लेषण*** और ***डेटा संग्रह*** पर जोर।
- * उद्देश्य: राजनीति को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित करना।

2. ****संरचनावादी उपागम (Structural Approach)****

- * राजनीतिक संस्थाओं और उनके आपसी संबंधों का अध्ययन।
- * सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला कारक माना जाता है।
- * *मार्क्सवाद* इसका प्रमुख उदाहरण, जहाँ आर्थिक आधार को राजनीति का मूल माना जाता है।
- * सामाजिक वर्ग, शक्ति संरचनाओं और आर्थिक हितों का विश्लेषण।

3. **नव-संस्थागतवाद (Neo-Institutionalism)**

- * पारंपरिक संस्थागत दृष्टिकोण का आधुनिक संस्करण।
- * संस्थाओं को स्थायी और परिवर्तनशील दोनों माना जाता है।
- * संस्थाएं राजनीतिक व्यवहार और निर्णयों को आकार देती हैं।
- * राजनीतिक प्रक्रिया में नियम, मानदंड, और प्रथाओं का विश्लेषण।

4. **सांस्कृतिक उपागम (Cultural Approach)**

- * राजनीतिक संस्कृति, मान्यताओं, और मूल्यों पर बल।
- * राजनीतिक प्रणाली की स्थिरता या अस्थिरता को समझने के लिए राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन।
- * *गैब्रिएल आलमंड* और *सिडनी वर्बा* के कार्य प्रसिद्ध हैं।

5. **तत्वमीमांसा (Rational Choice Theory)**

- * राजनीतिक निर्णयों को *तर्कसंगत* निर्णय के रूप में मानता है।
- * व्यक्ति और समूह अपने हितों के अनुसार निर्णय लेते हैं।
- * आर्थिक सिद्धांतों का राजनीति में प्रयोग।
- * आलोचना: सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की उपेक्षा।

6. **राज्य-संदर्भ (State-Centric Approach)**

- * राज्य को प्रमुख इकाई मानता है।
- * राज्य की भूमिका, शक्तियां और उसकी प्रभावशीलता पर जोर।

* राजनीतिक विकास, राज्य बनाम समाज की टकराहट पर अध्ययन।

7. **नारीवादी दृष्टिकोण (Feminist Approach)**

- * राजनीति में लिंग और शक्ति के सम्बन्धों का अध्ययन।
- * महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, अधिकार और उत्पीड़न पर ध्यान।
- * परंपरागत पुरुष केंद्रित दृष्टिकोण की आलोचना।

8. **वैश्वीकरण का उपागम (Globalization Approach)**

- * वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण।
- * राष्ट्रीय राज्य की सीमाओं के पार राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संबंध।
- * वैश्विक संगठनों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और ट्रांसनेशनल आंदोलनों का अध्ययन।

□ *निष्कर्ष:**

> **"आधुनिक तुलनात्मक राजनीति के उपागम बहुआयामी और अंतर-विषयक हैं। वे पारंपरिक संस्थागत दृष्टिकोण से परे जाकर राजनीति को व्यवहार, संस्कृति, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं के संदर्भ में समझने की कोशिश करते हैं। ये उपागम राजनीति को एक जीवंत, गतिशील और व्यावहारिक अनुशासन बनाते हैं।"

□ आधुनिक दृष्टिकोण के विकास के कारण

(Reasons for the Development of Modern Approaches in Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति में **आधुनिक दृष्टिकोण** के विकास के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं, जो पारंपरिक पद्धतियों की सीमाओं को पार करते हुए राजनीतिक अध्ययन को अधिक **वैज्ञानिक**, **व्यवहारिक**, और **समसामयिक** बनाने की आवश्यकता से उत्पन्न हुए।

□ **आधुनिक दृष्टिकोण के विकास के मुख्य कारण:**

1. **पारंपरिक दृष्टिकोण की सीमाएँ**

- * पारंपरिक दृष्टिकोण मुख्यतः **संस्थागत और विधिक** था, जो राजनीति को केवल संरचनाओं तक सीमित करता था।
- * यह व्यवहार, सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक पहलुओं को अनदेखा करता था।
- * राजनीतिक व्यवहार और जन-सहभागिता की अनदेखी से वास्तविकता का सटीक अध्ययन संभव नहीं था।

2. **वैज्ञानिक विधियों की आवश्यकता**

- * राजनीति को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में समझने और अध्ययन करने के लिए **वैज्ञानिक पद्धतियों** जैसे सर्वेक्षण, आंकड़ों का विश्लेषण, प्रयोगात्मक विधियों की आवश्यकता बढ़ी।
- * व्यवहारवादी दृष्टिकोण ने इसे पूरा किया और राजनीति को अधिक प्रामाणिक और शोध-आधारित बनाया।

3. **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व व्यवस्था में बदलाव**

- * युद्ध के बाद विश्व में नई राजनीतिक व्यवस्थाएँ और राष्ट्र आए।
- * नव-स्वतंत्र देशों की राजनीति, विकास, अस्थिरता, और सत्ता संघर्ष को समझने की आवश्यकता बढ़ी।
- * शीत युद्ध के दौरान राजनीतिक शक्तियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में जटिलता आई।

4. **सामाजिक विज्ञानों का विकास**

- * समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र जैसे विषयों का विकास हुआ।
- * इनका प्रभाव तुलनात्मक राजनीति पर पड़ा और इसे अधिक व्यापक और अंतर्विषयक बनाया।

5. **राजनीतिक व्यवहार की जटिलता**

- * राजनीतिक निर्णय केवल संस्थाओं से प्रभावित नहीं होते, बल्कि सामाजिक वर्ग, सांस्कृतिक मूल्यों, व्यक्तिगत हितों, और समूहों के व्यवहार से भी प्रभावित होते हैं।
- * इस जटिलता को समझने के लिए नए दृष्टिकोणों की जरूरत पड़ी।

6. **वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति**

- * वैश्वीकरण ने देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध बढ़ा दिए।
- * सूचना तकनीक, संचार माध्यमों के विकास ने राजनीतिक प्रक्रिया में नए आयाम जोड़े।
- * इन परिवर्तनों को समझने के लिए आधुनिक दृष्टिकोणों की आवश्यकता बढ़ी।

7. **लोकतांत्रिकरण और राजनीतिक विविधता**

- * कई देशों में लोकतंत्र की बहाली और राजनीतिक बहुलवाद का उदय हुआ।
- * जातीय, धार्मिक, भाषाई पहचान की राजनीति ने तुलनात्मक अध्ययन के नए आयाम जोड़े।
- * नारीवादी, पर्यावरणीय, और पहचान-आधारित राजनीति ने भी अध्ययन को प्रभावित किया।

□ *निष्कर्ष (Conclusion):**

> **"आधुनिक दृष्टिकोणों का विकास पारंपरिक दृष्टिकोण की सीमाओं, सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों, वैज्ञानिक अनुसंधान की मांग, और वैश्वीकरण जैसी वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इन कारणों से तुलनात्मक राजनीति ने अधिक व्यवहारिक, वैज्ञानिक और बहुआयामी स्वरूप ग्रहण किया।"**

□ आधुनिक दृष्टिकोण की विशेषताएँ

(Features of Modern Approaches in Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति में आधुनिक दृष्टिकोण पारंपरिक पद्धतियों से अलग और अधिक विकसित हैं। ये दृष्टिकोण राजनीति के अध्ययन को **व्यवहारिक, वैज्ञानिक, बहुआयामी, और समसामयिक** बनाते हैं।

□ **आधुनिक दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताएँ:**

1. **वैज्ञानिक और अनुभवजन्य अध्ययन (Scientific and Empirical Study)**

* आधुनिक दृष्टिकोण राजनीति का अध्ययन **डेटा संग्रह**, **सर्वेक्षण**, और **सांख्यिकीय विश्लेषण** के माध्यम से करते हैं।

* राजनीति को एक **सामाजिक विज्ञान** के रूप में देखते हैं।

2. **व्यवहार पर बल (Focus on Behaviour)**

* केवल संस्थाओं का नहीं, बल्कि **व्यक्तियों, समूहों, मतदाता व्यवहार, राजनीतिक भागीदारी** पर ध्यान।

* राजनीति को एक जीवंत प्रक्रिया के रूप में समझते हैं।

3. **अंतर-विषयक (Interdisciplinary) दृष्टिकोण**

* समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे विषयों को शामिल करते हैं।

* राजनीतिक घटना को व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में देखते हैं।

4. **परिस्थितिजन्य और संदर्भ आधारित अध्ययन (Contextual Study)**

- * राजनीति को उसकी **सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक परिस्थितियों** के संदर्भ में समझते हैं।
- * किसी भी राजनीतिक प्रणाली को उसके विशेष संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

5. **मौलिक सिद्धांतों और मॉडल्स का विकास (Development of Theories and Models)**

- * राजनीतिक व्यवहार और संस्थाओं के विश्लेषण के लिए **नवीन सैद्धांतिक मॉडल** और **मॉडलिंग** का प्रयोग।
- * जैसे: तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत (Rational Choice Theory), राजनीतिक संस्कृति, संरचनावाद आदि।

6. **बहुआयामी और बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण (Multidimensional and Multicultural)**

* केवल पश्चिमी देशों तक सीमित नहीं, बल्कि **विकासशील देशों** और **विविध संस्कृतियों** के राजनीतिक अध्ययन।

* वैश्विक और स्थानीय दोनों स्तरों पर राजनीति को समझना।

7. **समीक्षा और आलोचनात्मक सोच (Critical and Reflexive Thinking)**

* राजनीतिक प्रणालियों की आलोचना और सुधार की संभावनाओं का विश्लेषण।

* परंपरागत मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को चुनौती देना।

8. **राजनीति को गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखना (Politics as a Dynamic Process)**

* राजनीति को स्थिर संरचना के बजाय निरंतर बदलती और विकसित होती प्रक्रिया मानते हैं।

* राजनीतिक व्यवहार, संस्थान और नीतियाँ समय के साथ परिवर्तित होती हैं।

9. **नवीन विषयों का समावेश (Inclusion of New Themes)**

* पहचान राजनीति, लैंगिक राजनीति, पर्यावरणीय राजनीति, वैश्वीकरण, डिजिटल राजनीति जैसे नए क्षेत्र शामिल हुए हैं।

□ *निष्कर्ष (Conclusion):*

> **"आधुनिक दृष्टिकोण तुलनात्मक राजनीति को एक वैज्ञानिक, व्यावहारिक, और बहुआयामी अनुशासन बनाते हैं, जो राजनीति के जटिल और विविध पहलुओं को गहराई से समझने में सक्षम हैं। ये दृष्टिकोण राजनीति को स्थैतिक संस्थाओं के स्थान पर एक गतिशील, बहुआयामी और संदर्भ आधारित प्रक्रिया मानते हैं।"

□ परंपरागत दृष्टिकोण और आधुनिक दृष्टिकोण में अंतर

(Difference Between Traditional and Modern Approaches in Comparative Politics)

विशेषता	**परंपरागत दृष्टिकोण**
आधुनिक दृष्टिकोण	
-----	-----

अध्ययन का फोकस	राजनीतिक संस्थाओं और उनके कानूनी स्वरूप पर केंद्रित राजनीतिक व्यवहार, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, और व्यवहारिक पहलुओं पर केंद्रित
अध्ययन की प्रकृति	वर्णनात्मक और आदर्शवादी वैज्ञानिक, अनुभवजन्य और विश्लेषणात्मक
अध्ययन की विधि	ऐतिहासिक और दार्शनिक विश्लेषण सर्वेक्षण, सांख्यिकी, प्रयोग, और डेटा संग्रह
राजनीतिक व्यवहार	कम ध्यान अधिक ध्यान, व्यक्तियों, समूहों और राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन
संस्थाओं की भूमिका	स्थिर और अपरिवर्तनीय मानती हैं संस्थाएँ गतिशील और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों से प्रभावित
सामाजिक और आर्थिक कारक	उपेक्षित या सीमित रूप से शामिल महत्वपूर्ण कारक, राजनीति को प्रभावित करने वाले तत्व
वैश्विक दृष्टिकोण	यूरोप और पश्चिमी देशों तक सीमित वैश्विक, विकासशील देशों और विभिन्न संस्कृतियों का समावेश
राजनीतिक अध्ययन का उद्देश्य	राजनीति की आदर्श संरचना और संस्थाओं की तुलना करना राजनीति की वास्तविक प्रक्रियाओं और व्यवहार को समझना

| ****सैद्धांतिक आधार**** | दर्शनशास्त्र और नैतिकता
| सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे अंतर्विषयक दृष्टिकोण |
| ****राजनीतिक स्थिरता**** | संस्थागत स्थिरता पर जोर
| परिवर्तनशीलता और गतिशीलता को स्वीकारना
|

□ सारांश:

परंपरागत दृष्टिकोण अधिक ****संस्थागत, वैधानिक और आदर्शवादी**** था, जबकि आधुनिक दृष्टिकोण ****वैज्ञानिक, व्यवहारिक और बहुआयामी**** है। आधुनिक दृष्टिकोण राजनीति को एक जीवंत, परिवर्तनशील प्रक्रिया के रूप में देखता है, जो समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और वैश्विक प्रभावों से प्रभावित होती है।

□ तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की उपयोगिता

(Utility of the Study of Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, और प्रक्रियाओं का ****तुलनात्मक विश्लेषण**** करता है। इसका उद्देश्य विभिन्न देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं को समझना, उनका विश्लेषण करना और राजनीति के सामान्य सिद्धांतों को विकसित करना है। इस अध्ययन की कई महत्वपूर्ण उपयोगिताएँ हैं।

□ तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन की प्रमुख उपयोगिताएँ:

1. **राजनीतिक प्रणाली की समझ बढ़ाना**

* विभिन्न देशों की राजनीतिक संस्थाओं, सरकार के स्वरूप, और शासन प्रणाली की तुलना कर उनकी संरचना और कार्यप्रणाली को समझना आसान होता है।

* इससे यह पता चलता है कि विभिन्न व्यवस्था कैसे कार्य करती हैं और उनकी विशेषताएँ क्या हैं।

2. **सामान्य सिद्धांतों का विकास (Development of General Theories)**

* तुलनात्मक अध्ययन से राजनीति के सामान्य नियम और सिद्धांत विकसित किए जा सकते हैं, जो किसी भी देश की राजनीति को समझने में मदद करते हैं।

* उदाहरण के लिए, लोकतंत्र, अधिनायकवाद, राजनीतिक विकास जैसे सिद्धांत।

3. **राजनीतिक सुधार और नीति निर्माण में सहायता**

* दूसरे देशों की सफल (या असफल) नीतियों का अध्ययन करके किसी देश में सुधार और नई नीतियाँ बनाने में मदद मिलती है।

* इससे अनुभव और ज्ञान प्राप्त होता है जो बेहतर शासन व्यवस्था को संभव बनाता है।

4. **राजनीतिक विकास और परिवर्तन को समझना**

* देशों में राजनीतिक बदलाव, विकास, अस्थिरता या संघर्ष के कारणों और प्रक्रियाओं का विश्लेषण।

* इससे भविष्य की राजनीतिक घटनाओं की पूर्वानुमान लगाने में सहायता मिलती है।

5. **अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सहूलियत**

* विभिन्न देशों की राजनीति की समझ से विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बेहतर ढंग से संचालित किया जा सकता है।

* राजनीतिक सामंजस्य और सहयोग के लिए यह आवश्यक है।

6. **जनता की राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी**

* तुलनात्मक राजनीति से नागरिकों को अपने और अन्य देशों के राजनीतिक तंत्र की समझ मिलती है।

* इससे लोकतांत्रिक भागीदारी और सक्रियता बढ़ती है।

7. **राजनीतिक संघर्ष और समस्याओं का समाधान**

* विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में उत्पन्न संघर्षों का तुलनात्मक अध्ययन करने से उनके समाधान के रास्ते खोजे जा सकते हैं।

* जैसे जातीय, धार्मिक, भाषाई संघर्षों का विश्लेषण।

8. **शिक्षा और अनुसंधान के लिए आधार**

* तुलनात्मक राजनीति राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन और अनुसंधान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

* इससे नई शोध, नीतियां और ज्ञान विकसित होता है।

□ *निष्कर्ष (Conclusion):**

> **"तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन न केवल विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों को समझने में सहायक है, बल्कि यह नीति निर्माण, राजनीतिक सुधार, सामाजिक स्थिरता, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। यह अध्ययन राजनीति को एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक अनुशासन बनाता है।"*

□ तुलनात्मक राजनीति की समस्याएँ

(Problems in the Study of Comparative Politics)

तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ कई **चुनौतियों और समस्याओं** से भी ग्रस्त है। ये समस्याएँ अध्ययन की गुणवत्ता और निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती हैं।

□ तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में प्रमुख समस्याएँ:

1. **स्रोतों की कमी और विश्वसनीयता (Lack of Reliable Data and Sources)**

* कई विकासशील देशों में राजनीतिक डेटा उपलब्ध नहीं होता या वह अपूर्ण होता है।

* राजनीतिक जानकारी में पक्षपात, सेंसरशिप या गलत सूचना भी हो सकती है।

2. **संस्कृति और संदर्भ की विविधता (Cultural and Contextual Diversity)**

* अलग-अलग देशों की राजनीतिक प्रणालियाँ, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और सामाजिक परिस्थितियाँ बहुत भिन्न होती हैं।

* एक ही मॉडल या सिद्धांत हर देश पर समान रूप से लागू नहीं हो पाता।

3. **वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कठिन (Difficulty in Applying Scientific Methods)**

* राजनीति की जटिलता और मानवीय व्यवहार के कारण **प्रयोग और नियंत्रित अध्ययन करना कठिन** होता है।

* सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा राजनीति में प्रयोगशाला परीक्षण कम होते हैं।

4. **पक्षपात और पूर्वाग्रह (Bias and Prejudices)**

* शोधकर्ता का अपने सांस्कृतिक, राजनीतिक या वैचारिक दृष्टिकोण का प्रभाव अध्ययन में पड़ सकता है।

* पश्चिमी देशों के दृष्टिकोण से अध्ययन होने की संभावना होती है, जिससे विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्था को सही ढंग से नहीं समझा जाता।

5. **परिभाषाओं और मापदंडों की असमानता (Lack of Uniform Definitions and Criteria)**

* राजनीतिक अवधारणाओं जैसे लोकतंत्र, विकास, सत्ता आदि की विभिन्न देशों में भिन्न व्याख्या होती है।

* तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक समान मानदंड बनाना मुश्किल होता है।

6. **राजनीतिक अस्थिरता और परिवर्तनशीलता (Political Instability and Change)**

* राजनीतिक व्यवस्था जल्दी बदलती रहती है, जिससे निरंतर अद्यतन अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

* इससे निरंतर अध्ययन और तुलनात्मक विश्लेषण जटिल हो जाता है।

7. **अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और बाहरी हस्तक्षेप (International Influence and External Interference)**

* वैश्विक राजनीति में शक्तिशाली देशों का प्रभाव कमजोर देशों की राजनीति को प्रभावित करता है, जिससे तुलनात्मक अध्ययन जटिल हो जाता है।

* बाहरी हस्तक्षेप राजनीतिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता को प्रभावित करता है।

8. **अर्थव्यवस्था और सामाजिक कारकों की जटिलता (Complexity of Economic and Social Factors)**

* राजनीति में आर्थिक और सामाजिक कारकों का गहरा प्रभाव होता है, जिन्हें समझना और तुलनात्मक रूप से जोड़ना कठिन होता है।

* आर्थिक असमानता, सामाजिक विविधता जैसी समस्याएँ अध्ययन को जटिल बनाती हैं।

□ **निष्कर्ष (Conclusion):**

> **"तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में विविध प्रकार की समस्याएँ हैं, जो इसके वैज्ञानिक, निष्पक्ष और समग्र अध्ययन को चुनौती देती हैं। इन समस्याओं के बावजूद, तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन राजनीतिक समझ और सुधार के लिए अनिवार्य है। इन समस्याओं का समाधान शोध विधियों, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, और बेहतर डेटा संग्रह से किया जा सकता है।"

Chapter-4

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम (Constructive Functional Approach)**** की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि पारंपरिक शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास में पर्याप्त प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो रही थीं। यह उपागम शिक्षा को अधिक ****छात्र-केंद्रित****, ****अनुभवात्मक****, और ****सक्रिय भागीदारी**** पर आधारित बनाता है।

आवश्यकता के प्रमुख कारण:

1. ****रटने की प्रवृत्ति को कम करने के लिए****:

पारंपरिक शिक्षा में ज्ञान को याद करना और परीक्षा में लिखना प्राथमिक लक्ष्य होता है। इससे वास्तविक समझ विकसित नहीं होती। सर्चनात्मक उपागम में विद्यार्थी स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं, जिससे गहराई से सीख होती है।

2. ****चिंतन एवं विश्लेषण क्षमता बढ़ाने के लिए****:

यह उपागम बच्चों में ****सृजनात्मकता****, ****समस्या समाधान****, और ****आलोचनात्मक सोच**** को बढ़ावा देता है, जो आज के जीवन में अत्यंत आवश्यक कौशल हैं।

3. ****व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान करने के लिए****:

हर विद्यार्थी अलग होता है - उनकी सीखने की गति, रुचियाँ और समझ अलग होती है। यह उपागम व्यक्तिगत अंतर को स्वीकारता है और लचीलापन प्रदान करता है।

4. ****सीखने को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक बनाने के लिए****:

जब बच्चे अपने अनुभवों, परिवेश और समस्याओं से जुड़ी चीज़ों को सीखते हैं, तो वह ज्ञान उनके लिए उपयोगी और स्थायी बनता है।

5. ****सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए****:


इस उपागम में विद्यार्थी केवल श्रोता नहीं रहते, बल्कि ****सक्रिय भागीदार**** होते हैं - वे खोजते हैं, प्रयोग करते हैं, सवाल पूछते हैं और समाधान खोजते हैं।

6. ****लोकतांत्रिक और सहयोगात्मक वातावरण बनाने के लिए****:

यह उपागम सहयोग, संवाद और साझेदारी की भावना को बढ़ावा देता है - जो कि 21वीं सदी की सामाजिक और व्यावसायिक ज़रूरतों के अनुरूप है।

निष्कर्ष:

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम**** की आवश्यकता इसलिए पड़ी क्योंकि यह विद्यार्थियों को एक ****सक्रिय, आत्मनिर्भर और समझदारी से सोचने वाला व्यक्ति**** बनाने की दिशा में एक प्रभावशाली कदम है। यह शिक्षा को केवल सूचना देने का माध्यम नहीं, बल्कि ****जीवन जीने की कला सिखाने का साधन**** बनाता है।

 ****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम की व्याख्या:****

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम**** (Constructive Functional Approach) एक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को ****अपने अनुभवों, सोच और कार्यों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करने में सक्षम बनाना**** होता है।

यह उपागम आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह बच्चों को ****सक्रिय****, ****रचनात्मक****, और ****स्वयं-प्रेरित**** बनाता है।

□ **मुख्य विशेषताएँ:**

1. ****विद्यार्थी केंद्रित प्रक्रिया:****

विद्यार्थी केवल श्रोता नहीं रहते, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेते हैं।

2. ****अनुभव आधारित अधिगम:****

विद्यार्थी अपने अनुभवों, पर्यवेक्षण और प्रयोगों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं।

3. ****समस्या-समाधान की क्षमता:****

यह उपागम बच्चों में सोचने, प्रश्न पूछने और समाधान खोजने की योग्यता विकसित करता है।

4. ****सहयोगात्मक अधिगम:****

समूह में मिलकर कार्य करने से संवाद, सहयोग और सामाजिक कौशल का विकास होता है।

5. ****पर्यावरण से जुड़ाव:****

विद्यार्थी अपने आसपास के परिवेश से सीखते हैं, जिससे शिक्षा प्रासंगिक और जीवंत बनती है।

□ **उदाहरण से स्पष्टता:**

अगर बच्चों को “पानी का चक्र” पढ़ाना है:

* ****पारंपरिक तरीके से**** शिक्षक चित्र बनाकर समझा देगा।

* ****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम**** में विद्यार्थी खुद मॉडल बनाते हैं, प्रयोग करते हैं, वर्षा देख कर उसका कारण समझते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं।

□ ****निष्कर्ष:****

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम**** एक ****आधुनिक, व्यवहारिक और जीवनोपयोगी शिक्षण पद्धति**** है, जो बच्चों को केवल पाठ्य-पुस्तक का ज्ञान नहीं, बल्कि ****सोचने, समझने और जीवन में प्रयोग करने की क्षमता**** प्रदान करती है। यह उपागम शिक्षा को ****सार्थक, सजीव और रचनात्मक**** बनाता है।

□ ****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम की विशेषताएँ:****

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम (Constructive Functional Approach)**** एक आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोण है, जिसकी विशेषताएँ इसे पारंपरिक विधियों से अलग और अधिक प्रभावी बनाती हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

□ 1. ****विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण (Learner-Centered Learning):****

इस उपागम में विद्यार्थी को केंद्र में रखा जाता है। वह केवल ज्ञान प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि ****ज्ञान का सक्रिय निर्माता**** होता है।

□ 2. ****अनुभव आधारित अधिगम (Experience-Based Learning):****

विद्यार्थी ****अपने अनुभवों, पर्यवेक्षण, प्रयोग और खोज**** के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। यह अधिगम स्थायी और गहराई से होता है।

□ 3. ****सक्रिय भागीदारी (Active Participation):****

इस पद्धति में विद्यार्थी स्वयं ****सोचता, करता, पूछता और खोजता है।**** इससे उसकी रचनात्मकता और समझने की क्षमता विकसित होती है।

□ 4. ****सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning):****

विद्यार्थी ****समूह में कार्य करके**** दूसरों के साथ विचार-विमर्श करता है। इससे सामाजिक गुण, टीमवर्क और संवाद कौशल विकसित होते हैं।

□ 5. ****समस्या समाधान कौशल (Problem Solving Skills):****

विद्यार्थियों को ****वास्तविक जीवन की समस्याओं**** को हल करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे उनकी तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच बढ़ती है।

□ 6. ****पर्यावरण से जुड़ाव (Connection with Real Life):****

शिक्षण ****परिवेश और जीवन की परिस्थितियों**** से जुड़ा होता है, जिससे ज्ञान अधिक ****प्रासंगिक और उपयोगी**** बनता है।

□ 7. ****ज्ञान का निर्माण (Construction of Knowledge):****

विद्यार्थी केवल जानकारी ग्रहण नहीं करता, बल्कि ****स्वयं उस जानकारी का निर्माण करता है****। यह प्रक्रिया उसे आत्मनिर्भर बनाती है।

□ 8. **चिंतन और आत्ममूल्यांकन (Reflection and Self-Assessment):******

विद्यार्थी अपने कार्यों और विचारों पर ****चिंतन करता है****, और यह तय करता है कि उसने क्या सीखा और कैसे सुधार किया जा सकता है।

📌 **निष्कर्ष:******

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम**** की ये विशेषताएँ इसे एक ****समग्र, प्रभावी और बाल-मनोविज्ञान पर आधारित शिक्षण पद्धति**** बनाती हैं, जो बच्चों को ****स्वतंत्र, रचनात्मक और जीवनोपयोगी ज्ञान से युक्त नागरिक**** बनाने में सहायक है।

□ **सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम - अलमंड तथा पावेल के विचार******

****गैब्रिएल ए. अलमंड (Gabriel A. Almond)**** और ****सिडनी पावेल (Sidney Verba / Powell)**** ने ****राजनीति विज्ञान**** (Political Science) के क्षेत्र में ****सर्चनात्मक कार्यात्मक**

उपागम (Structural-Functional Approach)** को विकसित किया। इस उपागम का प्रयोग उन्होंने राजनीतिक प्रणाली (Political System) को समझने और विश्लेषण करने के लिए किया।

□ **अलमंड एवं पावेल के प्रमुख विचार:**

□ 1. **राजनीतिक प्रणाली को एक संरचना के रूप में देखना:**

अलमंड और पावेल ने कहा कि प्रत्येक समाज में राजनीतिक व्यवस्था एक **समग्र प्रणाली (System)** के रूप में कार्य करती है, जिसमें विभिन्न **संरचनाएँ (Structures)** होती हैं, जैसे - विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, राजनीतिक दल, नौकरशाही आदि।

□ 2. **प्रत्येक संरचना एक विशेष कार्य करती है:**

इन संरचनाओं का अस्तित्व तभी महत्वपूर्ण होता है जब वे कुछ **कार्य (Functions)** करें, जैसे – नीति-निर्माण, निर्णय-क्रियान्वयन, मत संग्रह, संघर्ष समाधान आदि।

□ 3. **कार्यात्मक दृष्टिकोण का महत्व:**

राजनीतिक व्यवस्था को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम देखें कि कौन-सी संस्था क्या कार्य कर रही है। एक ही कार्य अलग-अलग समाजों में अलग-अलग संस्थाएँ कर सकती हैं। इसलिए ****संरचना नहीं, कार्य अधिक महत्वपूर्ण है****।

□ 4. ****सर्वसमावेशी विश्लेषण (Cross-Cultural Analysis):****

अलमंड और पावेल ने राजनीतिक प्रणालियों की तुलना करते समय यह दिखाया कि सभी समाजों की राजनीतिक संरचनाएँ और कार्य एक जैसे नहीं होते, परंतु ****प्राथमिक कार्य (Basic Functions)**** समान होते हैं।

□ ****मुख्य कार्य जिन पर बल दिया गया:****

अलमंड और पावेल ने राजनीतिक प्रणाली के ****7 कार्यो**** की पहचान की:

1. राजनीतिक समाजीकरण (Political Socialization)
2. राजनीतिक भर्ती (Political Recruitment)
3. रुचियों की अभिव्यक्ति (Interest Articulation)
4. रुचियों का समन्वय (Interest Aggregation)
5. नीति-निर्माण (Policy Making)

6. नीति-प्रवर्तन (Policy Implementation)

7. नीति मूल्यांकन (Policy Adjudication/Evaluation)

****निष्कर्ष:******अलमंड तथा पावेल****** का सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम यह समझाने का प्रयास करता है कि किसी भी राजनीतिक व्यवस्था को उसके ****संरचनात्मक घटकों और उनके कार्यों**** के आधार पर ही सही तरीके से समझा जा सकता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि एक ही कार्य को विभिन्न राजनीतिक संरचनाएँ अलग-अलग समाजों में अलग ढंग से कर सकती हैं, लेकिन उनका उद्देश्य समान रहता है।

****सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम के कार्य**** सर्चनात्मक कार्यात्मक उपागम****** (Structural-Functional Approach) का मुख्य उद्देश्य किसी सामाजिक या राजनीतिक व्यवस्था को उसकी ****संरचनाओं (Structures)**** और उनके ****कार्य (Functions)**** के माध्यम से समझना होता है। इस उपागम के अनुसार, समाज या राज्य एक व्यवस्था (System) होता है जिसमें कई संरचनाएँ होती हैं, और प्रत्येक संरचना कोई-न-कोई आवश्यक कार्य करती है।

□ ****मुख्य कार्य (Functions) - अलमंड के अनुसार:**** *गैब्रिएल ए. अलमंड* ने राजनीतिक प्रणाली के कार्यों को दो भागों में बाँटा:

□ ****1. इनपुट कार्य (Input Functions):**** (ये वे कार्य हैं जो जनता की मांगों और अपेक्षाओं से जुड़े होते हैं)

1. ****राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती (Political Socialization and Recruitment):**** नई पीढ़ी को राजनीतिक संस्कृति से परिचित कराना और नेतृत्व के लिए नए व्यक्तियों को तैयार करना।

2. ****रुचियों की अभिव्यक्ति (Interest Articulation):**** नागरिकों द्वारा अपने विचार, इच्छाएँ और माँगों को व्यक्त करना – जैसे आंदोलन, विरोध, याचिकाएँ आदि।

3. ****रुचियों का समन्वय (Interest Aggregation):**** विभिन्न वर्गों, समूहों या लोगों की मांगों को एकत्र करना और उन्हें नीति बनाने योग्य बनाना।

4. ****राजनीतिक संप्रेषण (Political Communication):**** सरकार और जनता के बीच विचारों, सूचनाओं और नीतियों का आदान-प्रदान।

****II. आउटपुट कार्य (Output Functions):****(ये वे कार्य हैं जो राजनीतिक प्रणाली द्वारा निर्णय लेने और उन्हें लागू करने से संबंधित होते हैं)

5. ****नीति-निर्माण (Rule Making / Policy Making):**** समाज के लिए नियमों और कानूनों का निर्माण।

6. ****नीति-लागू करना (Rule Application / Policy Implementation):****

बनाए गए नियमों का प्रशासन द्वारा कार्यान्वयन।

7. ****नीति-निर्णयन (Rule Adjudication / Policy Adjudication):****

कानूनों की व्याख्या करना और उनका न्यायसंगत समाधान करना (न्यायिक कार्य)।

निष्कर्ष:*संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम**** हमें यह समझने में सहायता करता है कि एक समाज या राजनीतिक व्यवस्था में विभिन्न संस्थाएँ (जैसे विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, दल, मीडिया आदि) ****कौन-कौन से कार्य करती हैं**** और ये कार्य समाज के संचालन में ****कैसे योगदान देते हैं****। यह उपागम यह मानता है कि यदि सभी संरचनाएँ अपना कार्य सही ढंग से करें, तो समाज ****संतुलित और स्थिर**** रहता है।

****संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण (Structural-Functional Approach)**** तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) में एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक ढांचा है, जिसे विशेष रूप से 1950-60 के दशक में विकसित किया गया था। इस दृष्टिकोण को ****गैब्रिएल आलमंड (Gabriel Almond)**** और ****सिडनी वर्गा (Sidney Verba)**** जैसे राजनीतिक वैज्ञानिकों ने विकसित किया। इस दृष्टिकोण की उपयोगिता को समझने के लिए हमें पहले इसके मुख्य तत्वों को समझना होगा:

□ संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण के प्रमुख तत्व:

1. ****संरचना (Structure):**** समाज में मौजूद संस्थाएँ और संगठन जैसे - विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, राजनीतिक दल, ब्यूरोक्रेसी आदि।

2. ****प्रकार्य (Function):**** इन संरचनाओं द्वारा निभाए जाने वाले कार्य, जैसे - राजनीतिक समाजीकरण, हितों की अभिव्यक्ति, नियम निर्माण, नियमों का प्रवर्तन, न्याय वितरण आदि।

3. ****सार्वभौमिकता (Universality):**** यह दृष्टिकोण मानता है कि प्रत्येक राजनीतिक प्रणाली (चाहे वह पश्चिमी हो या गैर-पश्चिमी) में कुछ न कुछ संरचनाएं और उनके कार्य होते हैं।

4. ****समन्वय (Interdependence):**** विभिन्न संरचनाएं एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, और एक में बदलाव का प्रभाव अन्य पर भी पड़ता है।

तुलनात्मक राजनीति में इसकी उपयोगिता:

| पक्ष

| विवरण

| ****1. विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों की तुलना में सहायक**** | यह दृष्टिकोण पश्चिमी और गैर-पश्चिमी देशों की राजनीतिक संस्थाओं की तुलना करने में उपयोगी है क्योंकि यह केवल संस्थाओं की रूपरेखा नहीं, बल्कि उनके कार्यों पर भी ध्यान देता है। |

| ****2. परंपरागत और आधुनिक दोनों प्रणालियों का विश्लेषण**** | यह दृष्टिकोण आधुनिक लोकतंत्रों के साथ-साथ पारंपरिक या विकासशील देशों की प्रणालियों को भी समझने में सक्षम है।

| ****3. प्रणालीगत विश्लेषण की सुविधा**** | यह किसी भी राजनीतिक प्रणाली को एक "संपूर्ण प्रणाली" के रूप में देखने की सुविधा देता है, जिसमें इनपुट, आउटपुट और फीडबैक की प्रक्रियाएं होती हैं।

| ****4. निष्पक्ष विश्लेषण (Value-neutral analysis)**** | यह दृष्टिकोण मूल्य-निरपेक्ष विश्लेषण (value-free analysis) को प्रोत्साहित करता है, जिससे तुलनात्मक अध्ययन अधिक वस्तुनिष्ठ बनता है।

| ****5. गतिशीलता और परिवर्तन को समाहित करने की क्षमता**** | यह प्रणाली में बदलाव और अनुकूलन की प्रक्रियाओं को भी शामिल करता है, जिससे राजनीतिक विकास और परिवर्तन की व्याख्या संभव होती है।

सीमाएँ (कुछ आलोचनाएँ भी):

1. ****अत्यधिक अमूर्त (Highly Abstract)****: कभी-कभी इसके सिद्धांत व्यावहारिक स्थितियों से बहुत दूर होते हैं।
2. ****पश्चिमी पूर्वाग्रह****: कुछ आलोचकों का मानना है कि यह दृष्टिकोण पश्चिमी राजनीतिक मॉडल पर आधारित है और विकासशील देशों की विशिष्टताओं को अनदेखा करता है।
3. ****संस्कृति की अनदेखी****: यह दृष्टिकोण सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की उपेक्षा कर सकता है, जो कई राजनीतिक संरचनाओं और कार्यों को प्रभावित करते हैं।

□ निष्कर्ष: ****संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण तुलनात्मक राजनीति में एक सशक्त उपकरण है****, जो न केवल विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों की तुलना को वैज्ञानिक बनाता है, बल्कि उनके कार्यों की गहराई से व्याख्या भी करता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी यह दृष्टिकोण राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं को समझने के लिए एक सुसंगत और व्यापक ढांचा प्रदान करता है।

****संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण**** की आलोचना (Criticism of Structural-Functional Approach) कई विद्वानों द्वारा की गई है। यद्यपि यह दृष्टिकोण तुलनात्मक राजनीति में विश्लेषण का एक प्रभावशाली उपकरण रहा है, फिर भी इसके कुछ सिद्धांत और मान्यताएँ व्यावहारिक, वैचारिक और सैद्धांतिक स्तर पर आलोचना का विषय रह

****संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की प्रमुख आलोचनाएँ****:

1. □ ****पश्चिमी पूर्वाग्रह (Western Bias)****: आलोचकों का कहना है कि यह दृष्टिकोण मुख्यतः ****पश्चिमी लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं**** पर आधारित है। यह दृष्टिकोण गैर-पश्चिमी, परंपरागत या विकासशील देशों की ****विशिष्ट राजनीतिक-सामाजिक संरचनाओं को नजरअंदाज**** करता है। उदाहरण: भारत, अफ्रीका या एशिया के देशों में जाति, धर्म, समुदाय की भूमिका को यह ढांचा पर्याप्त रूप से नहीं समझा पाता।

2. □ ****परिवर्तन की उपेक्षा (Neglect of Change)****: यह दृष्टिकोण ****स्थायित्व (Stability)**** और ****संतुलन (Equilibrium)**** पर जोर देता है, जिससे यह ****सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन**** को पर्याप्त रूप से नहीं समझा पाता। ****क्रांति****, ****सामाजिक**

असंतोष**, **वर्ग संघर्ष** आदि जैसे बदलावों को इसमें स्थान नहीं मिलता। मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक इसे **Status Quo बनाए रखने का माध्यम** मानते हैं।

3. □ **अत्यधिक अमूर्तता (Highly Abstract):** इसके सिद्धांत और शब्दावली जैसे “प्रकार्य”, “संरचना”, “संतुलन” आदि इतने **अमूर्त** (abstract) हैं कि इन्हें व्यवहार में लागू करना कठिन हो जाता है।* वास्तविक राजनीतिक समस्याओं की **व्याख्या या समाधान** देने में यह सीमित हो जाता है।

4. □ **प्रकार्य और संरचना का स्पष्ट निर्धारण नहीं:** यह स्पष्ट नहीं करता कि **कौन-सी संरचना किस कार्य को करती है**, क्योंकि एक ही कार्य को कई संरचनाएं निभा सकती हैं और एक ही संरचना कई कार्य कर सकती है।

* उदाहरण: “हितों की अभिव्यक्ति” का कार्य राजनीतिक दल भी कर सकते हैं और आंदोलन भी। यह दृष्टिकोण इसे व्यवस्थित ढंग से नहीं समझाता।

5. □ **सांस्कृतिक विविधता की उपेक्षा (Neglect of Cultural Specificity):** यह दृष्टिकोण राजनीतिक प्रणालियों को **सार्वभौमिक संरचनाओं** में बाँधने की कोशिश करता है, जबकि विभिन्न देशों की **संस्कृति, परंपराएं और मूल्य अलग-अलग होते हैं**।

* यह दृष्टिकोण स्थानीय संदर्भों की पर्याप्त व्याख्या नहीं कर पाता।

6. □ **आदर्शवादी दृष्टिकोण (Idealistic View):** यह मानता है कि सभी संरचनाएं सकारात्मक कार्य करती हैं, जबकि कई बार संस्थाएं भ्रष्ट, पक्षपाती या विफल भी हो सकती हैं।

* यह दृष्टिकोण **नकारात्मक कार्यों** (Dysfunctions) को पूरी तरह नहीं समझाता।

7. □ **सांस्थानिक लचीलापन (Institutional Flexibility) की उपेक्षा:** आधुनिक युग में संस्थाएं **तेजी से बदलती हैं**, नई संस्थाएं बनती हैं, पुरानी समाप्त हो जाती हैं। यह दृष्टिकोण उस लचीलापन को नहीं दर्शाता।

□ **निष्कर्ष:** संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण ने तुलनात्मक राजनीति में नई दिशाएं दीं, लेकिन इसकी **अमूर्तता, स्थायित्व पर अत्यधिक जोर, पश्चिमी मॉडल की प्रधानता और सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं की उपेक्षा** जैसे कारणों से इसकी व्यापक आलोचना हुई।

****फिर भी****, इसकी उपयोगिता पूरी तरह अस्वीकार नहीं की जा सकती। आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों और स्थानीय संदर्भों को जोड़कर इसे अधिक व्यवहारिक बनाया जा सकता है।

Chapter-5

राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण

****राजनीतिक व्यवस्था**** (Political System) एक ऐसा ढांचा होता है जिसके माध्यम से किसी देश, राज्य या समाज में शासन किया जाता है। यह व्यवस्था विभिन्न संस्थाओं, नियमों, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का समुच्चय होती है जो सत्ता के वितरण, निर्णय-निर्माण, और शासन के क्रियान्वयन में सहयोग करती है।

****राजनीतिक व्यवस्था का अर्थ:****राजनीतिक व्यवस्था का अर्थ है - समाज में सत्ता, अधिकार, निर्णय-निर्माण और शासन से संबंधित संस्थाओं, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का समुच्चय। इसमें सरकार, राजनीतिक दल, न्यायपालिका, प्रशासन, चुनाव प्रणाली और नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी शामिल होती है।

****राजनीतिक व्यवस्था की परिभाषाएँ:****

1. ****डेविड ईस्टन (David Easton)**** के अनुसार: "राजनीतिक व्यवस्था समाज के उन सभी गतिविधियों का संगठन है, जिनके माध्यम से सामूहिक निर्णय लिए जाते हैं और उन्हें वैधता प्रदान की जाती है।"

2. ****गैब्रिएल आलमंड (Gabriel Almond)**** के अनुसार: "राजनीतिक व्यवस्था वह व्यवस्था है जो समाज के मूल्यों का अधिकारिक रूप से वितरण करती है और उसका संचालन करती है।"

****गिल क्रिस्टियन**** के अनुसार: "राजनीतिक व्यवस्था समाज के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बनाई गई एक सुव्यवस्थित और वैधानिक व्यवस्था है।"

□ ****मुख्य तत्व (तत्व/Components) -****

1. सरकार (Government)

2. राजनीतिक दल (Political Parties)
3. चुनाव प्रणाली (Electoral System)
4. संविधान (Constitution)
5. कानून और न्याय व्यवस्था (Legal and Judicial System)
6. नागरिकों की भागीदारी (Citizen Participation) राजनीतिक व्यवस्था की आधारभूत विशेषताएँ (Basic Features of Political System) वे गुण या लक्षण हैं जो किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में सामान्यतः पाए जाते हैं। ये विशेषताएँ यह दर्शाती हैं कि राजनीतिक व्यवस्था किस प्रकार कार्य करती है और समाज में उसका क्या स्थान है।

राजनीतिक व्यवस्था की आधारभूत विशेषताएँ: 1. ****सत्ता का समावेश (Involvement of Power):**** राजनीतिक व्यवस्था में सत्ता (Power) का होना आवश्यक है। सत्ता के बिना कोई भी व्यवस्था शासन नहीं कर सकती। सत्ता के द्वारा ही नियम बनाए जाते हैं और उनका पालन कराया जाता है।

2. ****संगठित व्यवस्था (Organized System):**** राजनीतिक व्यवस्था एक व्यवस्थित और संगठित प्रणाली होती है जिसमें सरकार, प्रशासन, न्यायपालिका आदि संस्थान सम्मिलित होते हैं।

3. ****वैधता (Legitimacy):**** राजनीतिक व्यवस्था को समाज द्वारा वैध और स्वीकार्य माना जाता है। इसके निर्णयों और आदेशों को लोगों द्वारा मान्यता प्राप्त होती है।

4. ****निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision-Making Process):**** राजनीतिक व्यवस्था में समाज के हित में निर्णय लिए जाते हैं। यह निर्णय प्रक्रिया संगठित और व्यवस्थित होती है।

5. ****सामाजिक नियंत्रण (Social Control):**** राजनीतिक व्यवस्था समाज में कानून-व्यवस्था बनाए रखने और सामाजिक अनुशासन कायम रखने का कार्य करती है।

6. ****सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति (Achievement of Social Goals):**** राजनीतिक व्यवस्था समाज के आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का माध्यम होती है।

7. ****संपर्क और संचार (Communication and Interaction):**** राजनीतिक व्यवस्था समाज के विभिन्न हिस्सों के बीच संपर्क स्थापित करती है, जिससे समस्याओं का समाधान और सहयोग संभव हो पाता है।

8. ****परिवर्तन और स्थिरता का संतुलन (Balance of Change and Stability):**** राजनीतिक व्यवस्था सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करती है, लेकिन साथ ही समाज की स्थिरता और निरंतरता भी बनाए रखती है।

9. ****सर्वसमावेशी (Inclusiveness):**** राजनीतिक व्यवस्था में समाज के विभिन्न वर्गों और समूहों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है ताकि सभी की आवाज़ सुनी जा सके।

राजनीतिक प्रणाली (Political System) की सामान्य विशेषताएँ वे मूल गुण होते हैं जो लगभग सभी प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों में पाए जाते हैं, चाहे वह लोकतंत्र हो या अधिनायकवादी शासन। ये विशेषताएँ राजनीतिक प्रणाली की संरचना, कार्यप्रणाली और उद्देश्यों को समझने में मदद करती हैं।

राजनीतिक प्रणाली की सामान्य विशेषताएँ: 1. ****सत्ता और अधिकार का वितरण (Distribution of Power and Authority):**** राजनीतिक प्रणाली में सत्ता का एक विशेष स्वरूप होता है जो अधिकार और जिम्मेदारियाँ निर्धारित करता है कि कौन निर्णय लेगा और कैसे लागू होंगे।

2. ****सरकार और संस्थाओं का अस्तित्व (Existence of Government and Institutions):****

राजनीतिक प्रणाली में सरकार, प्रशासन, न्यायपालिका, और अन्य संस्थाएँ शामिल होती हैं जो शासन के विभिन्न कार्यों को संपादित करती हैं।

3. ****निर्णय लेने की प्रक्रिया (Decision-Making Process):****

किसी भी राजनीतिक प्रणाली में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर निर्णय लेने की कोई न कोई प्रक्रिया होती है, जो नियमबद्ध और संगठित होती है।

4. ****वैधता और स्वीकृति (Legitimacy and Acceptance):**** राजनीतिक प्रणाली को समाज के लोगों द्वारा वैध और मान्यता प्राप्त होना आवश्यक है, जिससे उसकी नीतियाँ और आदेशों का पालन सुनिश्चित हो।

5. ****सामाजिक नियंत्रण और व्यवस्था (Social Control and Order):**** राजनीतिक प्रणाली समाज में कानून-व्यवस्था बनाए रखने, अनुशासन स्थापित करने और विवादों का निपटारा करने का काम करती है।

6. ****संपर्क और संचार व्यवस्था (Communication and Interaction System):****

राजनीतिक प्रणाली में विभिन्न सामाजिक समूहों, नागरिकों और सरकार के बीच संवाद और सूचना का आदान-प्रदान होता है।

7. ****सामाजिक बदलाव और स्थिरता (Social Change and Stability):**** राजनीतिक प्रणाली सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करती है लेकिन साथ ही सामाजिक स्थिरता और सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है।

8. ****लक्ष्य निर्धारण और क्रियान्वयन (Goal Setting and Implementation):**** राजनीतिक प्रणाली समाज के विकास और कल्याण के लिए लक्ष्य निर्धारित करती है और उन्हें पूरा करने के लिए नीतियां बनाती है।

9. ****सर्वसमावेशिता (Inclusiveness):**** राजनीतिक प्रणाली में समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और समूहों की भागीदारी को बढ़ावा दिया जाता है।

बहुत बढ़िया सवाल है!****राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण (Political System Approach)**** की तुलनात्मक राजनीतिक अध्ययन (Comparative Politics) में बहुत महत्वपूर्ण उपयोगिता है। इसे समझने के लिए पहले यह जानना जरूरी है कि यह दृष्टिकोण क्या है और कैसे तुलनात्मक अध्ययन में काम आता है।

राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण क्या है? राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण एक व्यापक मॉडल या फ्रेमवर्क है जो किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के तत्वों, उनकी क्रियाओं, और उनके बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करता है। यह दृष्टिकोण राजनीतिक व्यवस्था को एक खुली प्रणाली (Open System) के रूप में देखता है जो बाहरी पर्यावरण से इनपुट (मांग, समर्थन) लेती है और आउटपुट (नियम, निर्णय) देती है।

तुलनात्मक राजनीतिक अध्ययन में इसकी उपयोगिता:

1. ****सामान्य रूप से राजनीतिक व्यवस्थाओं को समझना (General Understanding):**** यह दृष्टिकोण विभिन्न देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं की समान और भिन्न विशेषताओं को समझने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, यह दिखाता है कि कैसे लोकतंत्र और अधिनायकवादी शासन दोनों में सत्ता के प्रवाह का तरीका अलग होता है।
2. ****राजनीतिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण (Analysis of Political Processes):**** यह दृष्टिकोण यह बताता है कि कैसे राजनीतिक प्रणाली बाहरी मांगों (जैसे जनसंकट, आर्थिक समस्याएं) को स्वीकार करती है और उन्हें कानून, नीतियों में बदलती है।
3. ****तुलनात्मक मॉडल बनाना आसान बनाना (Ease of Comparative Modeling):**** राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण के मॉडल के जरिए, शोधकर्ता विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों को एक समान फ्रेमवर्क में रखकर उनकी तुलना कर सकते हैं।
4. ****राजनीतिक स्थिरता और परिवर्तन को समझना (Understanding Political Stability and Change):**** यह दृष्टिकोण दिखाता है कि कैसे राजनीतिक प्रणाली बाहरी दबावों और आंतरिक क्रियाओं के बीच संतुलन बनाए रखती है, जिससे स्थिरता आती है या परिवर्तन होता
5. ****नीति निर्माण और क्रियान्वयन की प्रक्रिया (Policy Making and Implementation):**** राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि किस प्रकार राजनीतिक संस्थान नीतियाँ बनाते हैं और उन्हें लागू करते हैं।
6. ****बहु-आयामी विश्लेषण (Multidimensional Analysis):**** इसमें विभिन्न घटकों जैसे सत्ता, प्रशासन, नागरिक भागीदारी, संचार प्रणाली आदि का समन्वित विश्लेषण किया जाता है, जिससे राजनीतिक प्रणाली की समग्र समझ होती है।

संक्षेप में:

| ****राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण की विशेषता**** | ****तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगिता****

| व्यापक और संगठित मॉडल
तुलना करना आसान |

| विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं की

| इनपुट-आउटपुट विश्लेषण

| राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझना

| स्थिरता और परिवर्तन की व्याख्या | राजनीतिक प्रणाली के व्यवहार को समझना
| सामाजिक और राजनीतिक घटकों का समन्वय पता लगाना | राजनीतिक विकास के कारकों का

बिल्कुल! राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण (Political System Approach) की तुलनात्मक राजनीति में उपयोगिता तो बहुत है, लेकिन इसके कुछ ****आलोचनाएँ**** भी हैं, जो इसे पूरी तरह से समग्र और सार्वभौमिक समझने में बाधा डालती हैं।

यहाँ राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण की मुख्य आलोचनाएँ दी गई हैं:

राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण की आलोचना: 1. ****अत्यंत संरचनात्मक और यांत्रिक दृष्टिकोण (Overly Structural and Mechanistic)****: यह मॉडल राजनीतिक प्रणाली को एक मशीन की तरह देखता है जिसमें इनपुट और आउटपुट के बीच केवल तकनीकी संबंध होते हैं। इसमें मानव व्यवहार, भावनाएँ, और राजनीति की जटिलता का पूरा ध्यान नहीं रखा जाता।

2. ****सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारकों की उपेक्षा (Neglect of Cultural and Historical Factors)****: यह दृष्टिकोण राजनीतिक प्रणाली को सार्वभौमिक और सार्वभौम (Universal) मानता है, लेकिन प्रत्येक देश की राजनीतिक व्यवस्था अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है, जिसे यह मॉडल कम महत्व देता है।

3. ****राजनीतिक शक्ति और संघर्ष का अवहेलना (Underestimation of Political Power and Conflict)****: यह दृष्टिकोण सत्ता संघर्ष, वर्ग संघर्ष, और असमानता जैसे तत्वों पर कम ध्यान देता है। राजनीतिक व्यवहार में सत्ता के लिए संघर्ष अहम होता है, जो इस मॉडल में पूरी तरह प्रतिबिंबित नहीं होता।

4. ****नीति निर्माण की जटिलता को सरल बनाना (Oversimplification of Policy-Making)****: नीति निर्माण और क्रियान्वयन की प्रक्रिया को यह दृष्टिकोण बहुत सरल मानता है, जबकि वास्तविकता में इसमें कई जटिल हितों, दबाव समूहों और अनिश्चितताओं का प्रभाव होता है।

5. ****सामाजिक आंदोलनों और असहयोग का अभाव (Lack of Focus on Social Movements and Dissent):**** यह मॉडल सामाजिक आंदोलनों, विरोध, और असहयोग जैसे कारकों को ठीक से शामिल नहीं करता, जो राजनीतिक परिवर्तन और प्रणाली के दबाव के रूप में महत्वपूर्ण होते हैं।

6. ****राजनीतिक संस्कृति का सीमित विश्लेषण (Limited Analysis of Political Culture):****

राजनीतिक संस्कृति, जो कि किसी भी राजनीतिक प्रणाली की कार्यप्रणाली को प्रभावित करती है, इस दृष्टिकोण में पर्याप्त जगह नहीं पाती।

7. ****सिस्टम के बाहर के कारकों की अनदेखी (Ignoring External Factors):**** वैश्विक राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, आर्थिक वैश्वीकरण जैसे बाहरी कारक भी किसी राजनीतिक प्रणाली को प्रभावित करते हैं, लेकिन यह मॉडल उन्हें सीमित रूप से ही देखता है।

संक्षेप में, राजनीतिक व्यवस्था दृष्टिकोण की आलोचनाएँ इसे एक सीमित और कभी-कभी अनुचित मॉडल बनाती हैं, जो राजनीति की जटिलताओं और विविधताओं को पूरी तरह से पकड़ नहीं पाता।

आपका प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है – तुलनात्मक राजनीति में डेविड ईस्टन (David Easton) द्वारा प्रस्तुत ****निवेश-निर्गत मॉडल**** (Input-Output Model) का ****आलोचनात्मक वर्णन**** करना राजनीतिक सिद्धांत और तुलनात्मक अध्ययन को गहराई से समझने का अवसर देता है।

*□ प्रस्तावना: डेविड ईस्टन ने 1950 और 1960 के दशक में राजनीतिक प्रणाली के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक और प्रणालीगत (Systematic) दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने राजनीतिक प्रणाली को एक ****“खुली प्रणाली”**** (Open System) माना, जो अपने वातावरण से प्रभावित होती है और उसे प्रभावित भी करती है। उन्होंने इसे समझने के लिए ****Input-Output Model**** प्रस्तुत किया।

ईस्टन का निवेश-निर्गत (Input-Output) मॉडल:

ईस्टन के अनुसार, राजनीतिक प्रणाली में चार प्रमुख घटक होते हैं:

1. **Input (निवेश):** **मांग (Demands):** जैसे-रोजगार, शिक्षा, सुरक्षा, समानता आदि की माँगें। **समर्थन (Supports):** जैसे-कर देना, कानून का पालन करना, मतदान करना।
2. **Political System (राजनीतिक प्रणाली):** जहाँ इन मांगों और समर्थन का विश्लेषण होता है और निर्णय लिए जाते हैं।
3. **Output (निर्गत):** * सरकार की नीतियाँ, कानून, निर्णय, योजनाएँ आदि जो मांगों की प्रतिक्रिया में निकलते हैं।
4. **Feedback (प्रतिक्रिया):** * जनता और समाज से प्राप्त प्रतिक्रिया जो यह तय करती है कि नीति सफल रही या नहीं। ➤ इस पूरे चक्र में राजनीतिक प्रणाली पर्यावरण (Environment) से प्रभावित होती है और उसे प्रभावित करती भी है।

आलोचनात्मक वर्णन: अब हम ईस्टन के मॉडल की आलोचना करते हैं – इसकी **सीमाएँ, कमियाँ और सीमित उपयोगिता** के आधार पर।

1. **अत्यधिक सरलीकरण (Over-Simplification):** यह मॉडल राजनीतिक प्रक्रियाओं को एक यांत्रिक प्रक्रिया की तरह प्रस्तुत करता है – निवेश → प्रक्रिया → निर्गत।

परंतु वास्तविक राजनीतिक प्रक्रियाएँ बहुत अधिक जटिल, गतिशील और अनिश्चित होती हैं।

2. **राजनीतिक संघर्ष की उपेक्षा (Neglect of Political Conflict):** ईस्टन का मॉडल "सामंजस्य" (Consensus) पर केंद्रित है, जबकि वास्तविक राजनीति में संघर्ष, सत्ता की होड़, और असहमति प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

यह वर्ग-संघर्ष, जातीय संघर्ष, दमन आदि को नजरअंदाज करता है।

3. **सांस्कृतिक और वैचारिक विविधता की अनदेखी (Cultural and Ideological Neglect):** यह मॉडल मानता है कि सभी समाजों में समान रूप से इनपुट और आउटपुट की प्रक्रिया काम करती है, जबकि विभिन्न देशों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैचारिक पृष्ठभूमियाँ भिन्न होती हैं।

4. ****बाहरी कारकों की अनदेखी (Ignores External/Global Influences):**** आज के वैश्विक युग में बाहरी शक्तियाँ (जैसे IMF, WTO, युद्ध, वैश्वीकरण) भी नीति निर्माण को प्रभावित करती हैं, जिनका मॉडल में पर्याप्त स्थान नहीं है।

5. ****Feedback तंत्र का अस्पष्ट चित्रण (Vague Feedback Mechanism):**** यह स्पष्ट नहीं है कि फीडबैक कितनी तेजी से आता है, कौन देता है, और उसे कैसे मापा जाता है। लोकतंत्र और अधिनायकवादी व्यवस्था में फीडबैक की प्रकृति अलग होती है---

6. ****मॉडल का पश्चिमी पक्षपात (Western Bias):**** यह मॉडल मुख्यतः पश्चिमी लोकतंत्रों की राजनीतिक प्रणाली को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जिससे यह विकासशील देशों या पारंपरिक राजनीतिक व्यवस्थाओं पर कम लागू होता है।

□ निष्कर्ष: डेविड ईस्टन का निवेश-निर्गत मॉडल तुलनात्मक राजनीति को एक वैज्ञानिक और प्रणालीगत रूप देने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। इसने राजनीतिक प्रक्रिया को एक ****"सिस्टम"*** के रूप में देखने की दृष्टि दी। परंतु इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि यह राजनीति की ****जटिलताओं, संघर्षों, और विविधताओं**** को पूरी तरह नहीं पकड़ पाता।

□ सारांश में:

| ****मॉडल की शक्ति****

| ****मॉडल की सीमाएँ****

| राजनीतिक प्रणाली को समझने का सरल ढांचा | अत्यधिक सरलीकरण

| इनपुट-आउटपुट का स्पष्ट विश्लेषण | सत्ता संघर्ष की उपेक्षा

| तुलनात्मक अध्ययन को ढांचा प्रदान करना | सांस्कृतिक विविधता की उपेक्षा

डेविड ईस्टन का ****व्यवस्था मूलक विश्लेषण**** (Systems Analysis) राजनीतिक प्रणाली को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था, जिसमें उन्होंने राजनीति को एक ****“खुली प्रणाली”**** (Open System) के रूप में देखा जो इनपुट लेती है और आउटपुट देती है। यह विश्लेषण तुलनात्मक राजनीति में बहुत प्रभावशाली रहा है, परंतु इसके कई ****सीमाएं और आलोचनाएं**** भी हैं।

□ डेविड ईस्टन के व्यवस्था मूलक विश्लेषण की आलोचना: 1. ****अत्यधिक यांत्रिक और सरलीकृत मॉडल (Overly Mechanical and Simplistic):**** ईस्टन का मॉडल राजनीति को एक मशीन की तरह प्रस्तुत करता है, जिसमें इनपुट (Input) आता है, और प्रोसेसिंग के बाद आउटपुट (Output) निकलता है।

लेकिन वास्तविक राजनीति एक जटिल, अनिश्चित और गतिशील प्रक्रिया है जिसे इस तरह यांत्रिक रूप में नहीं समझा जा सकता।

2. ****सत्ता और संघर्ष की उपेक्षा (Neglect of Power and Conflict):****

राजनीति का मूल तत्व सत्ता (Power) और संघर्ष (Conflict) है। ईस्टन का मॉडल सामंजस्य (Consensus) और संतुलन (Equilibrium) पर केंद्रित है, जबकि राजनीति में अक्सर टकराव, विरोध और हिंसा की स्थिति भी होती है।

इसलिए यह सत्ता की प्रकृति और असमानताओं को ठीक से नहीं दर्शाता।

3. ****राजनीतिक विचारधाराओं की अनदेखी (Ignorance of Ideologies):****

ईस्टन का दृष्टिकोण विचारधारा-निरपेक्ष (Ideology-Neutral) होने का दावा करता है, परंतु वास्तव में विचारधाराएँ राजनीति को गहराई से प्रभावित करती हैं। इस मॉडल में पूंजीवाद, समाजवाद, धर्म, जाति आदि का विश्लेषण नहीं किया गया है।

4. ****सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधताओं की उपेक्षा (Neglect of Cultural and Historical Differences):**** यह मॉडल सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं को एक ही फ्रेमवर्क में रखने की कोशिश करता है, जो गलत है। विभिन्न देशों की राजनीतिक संस्कृति, इतिहास और सामाजिक संरचना अलग होती है, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

5. ****फीडबैक प्रणाली का अस्पष्ट विश्लेषण (Unclear Feedback Mechanism):****

ईस्टन ने फीडबैक (Feedback) की बात तो की, लेकिन यह नहीं बताया कि यह कैसे काम करता है, कितना प्रभावी होता है और कब तक प्रतिक्रिया मिलती है।

विशेषतः अधिनायकवादी व्यवस्था में फीडबैक का स्वरूप बहुत सीमित या विकृत हो सकता है।

6. **परिवर्तनशीलता (Change) को नजरअंदाज करना:****ईस्टन का मॉडल स्थिरता (Stability) पर केंद्रित है और यह राजनीतिक परिवर्तन (Political Change) या क्रांति जैसे गतिशील कारकों का समुचित विश्लेषण नहीं करता। जबकि आज की राजनीति तीव्र (Developing Nations):****इस मॉडल की अवधारणा पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों पर आधारित है। विकासशील देशों, जनजातीय समाजों या धार्मिक-राजनीतिक व्यवस्थाओं में यह मॉडल पूरी तरह फिट नहीं बैठता।**

निष्कर्ष (Conclusion):डेविड ईस्टन का व्यवस्था मूलक विश्लेषण राजनीतिक विज्ञान में एक **महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदान** है, जिसने राजनीतिक प्रक्रियाओं को एक वैज्ञानिक और प्रणालीगत ढांचे में देखने की शुरुआत की।

हालाँकि इसकी सीमाएँ – जैसे **सत्ता संघर्ष की अनदेखी, सांस्कृतिक विविधता की उपेक्षा, और यांत्रिक दृष्टिकोण** – इस मॉडल की प्रभावशीलता को सीमित कर देती हैं।

□ सारांश तालिका:

आलोचना बिंदु	संक्षिप्त विवरण
-----	-----
सरलीकरण	राजनीति की जटिलता को नहीं दर्शाता
सत्ता की उपेक्षा	संघर्ष और असमानता की अनदेखी
विचारधाराओं की कमी	राजनीति में विचारधाराओं की भूमिका को नजरअंदाज करता है
सांस्कृतिक विविधता की उपेक्षा	सभी देशों को एक जैसे मान लेता है
फीडबैक अस्पष्ट	प्रतिक्रिया प्रणाली को स्पष्ट नहीं करता
परिवर्तन की अनदेखी	स्थिरता पर ज़्यादा ज़ोर
पश्चिमी पूर्वाग्रह	केवल पश्चिमी लोकतंत्रों पर आधारित

Chapter-6

तुलनात्मक राजनीति का मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण

****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम (Political Economy Approach)****

****परिचय:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र एक अंतःविषयक (interdisciplinary) अध्ययन है जो अर्थशास्त्र, राजनीति और समाजशास्त्र को मिलाकर यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे आर्थिक सिद्धांतों और नीतियों को राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाएँ प्रभावित करती हैं और किस प्रकार से ये नीतियाँ समाज पर प्रभाव डालती हैं।

****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम के प्रमुख तत्व:****

1. ****राजनीतिक शक्तियों की भूमिका:**** नीति निर्धारण में राजनीतिक दलों, नेताओं, लॉबिंग समूहों, और संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

* आर्थिक संसाधनों का वितरण अक्सर राजनीतिक सत्ता के आधार पर तय होता है।

2. ****राज्य और बाजार का संबंध:**** * यह उपागम यह समझने का प्रयास करता है कि राज्य (Government) और बाजार (Market) के बीच किस तरह का संबंध है।

* जैसे: पूंजीवाद (Capitalism), समाजवाद (Socialism), और मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) में इनकी भूमिकाएँ अलग होती हैं।

3. ****सत्ता और वर्ग संघर्ष:**** मार्क्सवादी दृष्टिकोण में आर्थिक संरचनाएं वर्ग संघर्ष से जुड़ी होती हैं। यहां आर्थिक असमानताओं को सत्ता संघर्ष से जोड़ कर देखा जाता है।

4. ****संस्थागत प्रभाव (Institutional Influence):**** * यह देखा जाता है कि किस प्रकार राजनीतिक और आर्थिक संस्थाएं (जैसे RBI, संसद, WTO) नीति निर्माण और क्रियान्वयन को

प्रभावित करती हैं।

5. **वैश्वीकरण और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ:** * आज की वैश्वीकृत दुनिया में अंतरराष्ट्रीय शक्तियाँ, वैश्विक पूंजी और विदेशी नीतियाँ भी घरेलू अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती हैं। □

प्रमुख दृष्टिकोण / विचारधाराएँ:

| दृष्टिकोण | विशेषताएँ

| **लिबरल (उदारवादी)** | व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मुक्त बाजार, न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप में विश्वास। |

| **मार्क्सवादी** | उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण, वर्ग संघर्ष, पूंजीवादी शोषण की आलोचना।

| **संस्थागत** | राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं की भूमिका को प्रमुख मानता है।

| **नव-संस्थागत** | आधुनिक संदर्भ में संस्थानों के विकास और व्यावहारिक पक्षों पर जोर।

राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम के लाभ:

* नीतियों के पीछे छिपी राजनीतिक मंशाओं को उजागर करता है।

* सामाजिक असमानता, शक्ति-संबंध और हितों के टकराव को समझने में मदद करता है।

* केवल संख्यात्मक आंकड़ों के बजाय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को महत्व देता है।□

निष्कर्ष: राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम यह मानता है कि आर्थिक निर्णय केवल बाजार की ताकतों से नहीं चलते, बल्कि इन पर राजनीतिक शक्तियाँ, संस्थाएँ, और सामाजिक संरचनाएँ गहरा प्रभाव डालती हैं। यह उपागम नीति-निर्माण की व्यापक समझ प्रदान करता है और आर्थिक असमानताओं के पीछे के कारणों को उजागर करता है।

प्रश्न: *तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की आवश्यकता क्या है?*

□ **परिचय:** तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) वह अध्ययन क्षेत्र है जो विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और नीतियों की तुलना करता है। इस अध्ययन में **राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम** का समावेश अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह यह समझने में मदद करता है कि किस प्रकार **राजनीतिक निर्णय, आर्थिक नीतिसामाजिक संरचना** एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की आवश्यकता:

1. **राजनीति और अर्थव्यवस्था का गहरा संबंध समझना:** कोई भी आर्थिक नीति जैसे - कर व्यवस्था, सामाजिक सुरक्षा, सब्सिडी आदि - राजनीतिक निर्णयों से ही निर्धारित होती है।

* तुलनात्मक राजनीति में देशों के बीच नीतिगत भिन्नताओं को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम उनके राजनीतिक-आर्थिक ढांचे को समझें।

2. **राज्य की भूमिका की व्याख्या:** यह उपागम यह स्पष्ट करता है कि किस देश में राज्य (State) कितना हस्तक्षेप करता है - जैसे समाजवादी बनाम पूंजीवादी मॉडल।

* उदाहरण: स्कैंडिनेवियाई देशों में कल्याणकारी राज्य (welfare state) की अवधारणा बनाम अमेरिका में मुक्त बाजार व्यवस्था।

3. **नीति निर्माण की प्रक्रिया को समझना:**

* नीतियाँ केवल आर्थिक तर्कों पर आधारित नहीं होतीं, बल्कि राजनीतिक दबाव, वर्ग हित, और संस्थागत शक्तियाँ भी उन्हें प्रभावित करती हैं।

* तुलनात्मक राजनीति में यह देखना जरूरी है कि नीति कैसे और किन परिस्थितियों में बनती है।

4. **विकासशील बनाम विकसित देशों की तुलना:** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम विकासशील देशों की समस्याओं जैसे - गरीबी, असमानता, भ्रष्टाचार, संसाधनों की कमी - को राजनीतिक संदर्भ में देखने का अवसर देता है। उदाहरण: भारत और चीन की आर्थिक प्रगति में राजनीतिक व्यवस्था की भूमिका अलग रही है।

5. **वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका:** वैश्विक पूंजी, IMF, WTO जैसे संस्थान देशों की आंतरिक राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

* तुलनात्मक राजनीति में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि वैश्विक आर्थिक शक्तियाँ कैसे राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित कर रही हैं।

6. **वर्ग, जाति, लिंग जैसे सामाजिक कारकों की व्याख्या:** राजनीतिक अर्थशास्त्र इन पहलुओं को भी आर्थिक संदर्भ से जोड़ता है, जिससे तुलनात्मक राजनीति को एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

उदाहरणों द्वारा स्पष्टता:

| देश | राजनीतिक व्यवस्था | आर्थिक नीति | राजनीतिक अर्थशास्त्र की भूमिका |

| **चीन** | एकदलीय तानाशाही | राज्य नियंत्रित पूंजीवाद | राजनीतिक नियंत्रण से आर्थिक विकास |

| **भारत** | लोकतंत्र | मिश्रित अर्थव्यवस्था | नीतियाँ अक्सर वोट-बैंक पर आधारित |

| **स्वीडन** | उदार लोकतंत्र | कल्याणकारी पूंजीवाद | सामाजिक समानता पर ज़ोर

□ **निष्कर्ष:** तुलनात्मक राजनीति में राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह अध्ययन को **केवल संस्थागत या प्रक्रियात्मक सीमाओं** से निकालकर एक **वास्तविक, जमीनी और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ** में ले आता है। यह उपागम यह समझने में मदद करता है कि कैसे सत्ता, संपत्ति, और संसाधनों का वितरण राजनीतिक प्रक्रिया को आकार देता है और विभिन्न देशों में नीति, विकास तथा शासन प्रणाली को प्रभावित करता है।

राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम के उद्देश्य

(Objectives of the Political Economy Approach)

****परिचय:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम एक ऐसा दृष्टिकोण है जो यह समझने का प्रयास करता है कि ****राजनीतिक शक्तियाँ, आर्थिक संरचनाएँ, और सामाजिक प्रक्रियाएँ**** किस प्रकार परस्पर क्रिया करती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि आर्थिक नीतियों, संसाधनों के वितरण, और सत्ता के बीच संबंध को विश्लेषित किया जाए।

****मुख्य उद्देश्य (Main Objectives):**** 1. ****राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के बीच संबंध को समझना:**** यह उपागम यह स्पष्ट करता है कि राजनीतिक निर्णय किस प्रकार आर्थिक नीतियों को प्रभावित करते हैं और इसके विपरीत।

2. ****संसाधनों के वितरण में सत्ता की भूमिका को उजागर करना:**** यह दिखाता है कि समाज में ****संपत्ति, अवसर और संसाधन**** कैसे कुछ विशेष वर्गों या समूहों के पक्ष में वितरित होते हैं।

3. ****नीति-निर्माण की प्रक्रिया का विश्लेषण:**** यह समझना कि कोई नीति केवल आर्थिक गणनाओं के आधार पर नहीं बनती, बल्कि ****राजनीतिक हित, दबाव समूह****, और ****लोकप्रियता**** भी उसमें भूमिका निभाते हैं।

4. ****आर्थिक असमानताओं की व्याख्या करना:**** * समाज में व्याप्त ****आर्थिक विषमता**** को केवल बाजार की विफलता नहीं, बल्कि सत्ता-संबंधों और राजनीतिक निर्णयों के परिणाम के रूप में देखा जाता है।

5. ****विकास और परिवर्तन को समझना:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र यह विश्लेषण करता है कि आर्थिक विकास किन ****राजनीतिक संस्थानों, नीतियों और विचारधाराओं**** के अधीन होता है।

6. ****राज्य और बाजार के संबंधों को स्पष्ट करना:**** यह उद्देश्य है कि यह पता लगाया जाए कि विभिन्न व्यवस्थाओं (जैसे पूंजीवाद, समाजवाद) में राज्य और बाजार की भूमिका कैसे निर्धारित होती है।

7. ****वैश्विक शक्तियों और संस्थाओं के प्रभाव को समझना:**** यह उपागम यह जानने में मदद करता है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ (जैसे IMF, WTO) कैसे देशों की आंतरिक नीतियों को प्रभावित करती हैं।

****संक्षेप में:****

| उद्देश्य | विवरण

| संसाधन वितरण | असमानताओं के कारण और संरचना | नीतियों का
विश्लेषण | राजनीतिक हितों का प्रभाव || सामाजिक न्याय | समानता
और निष्पक्षता की व्याख्या |

| वैश्विक संदर्भ | अंतरराष्ट्रीय प्रभावों का मूल्यांकन |

****निष्कर्ष:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम का उद्देश्य केवल अर्थव्यवस्था को समझना नहीं है, बल्कि यह जानना भी है कि ****सत्ता, नीति और समाज के बीच कैसे जटिल संबंध कार्य करते हैं।**** यह उपागम राजनीतिक प्रक्रिया में छिपे ****आर्थिक हितों और सामाजिक प्रभावों**** को उजागर करता है और एक ****समग्र दृष्टिकोण**** प्रदान करता है।

****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की आधारभूत मान्यताएँ****

(Basic Assumptions of the Political Economy Approach)

****परिचय:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम (Political Economy Approach) एक ऐसा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि किसी भी समाज में ****राजनीतिक सत्ता, आर्थिक संसाधन और सामाजिक संरचना**** परस्पर गहराई से जुड़े होते हैं। यह उपागम पारंपरिक अर्थशास्त्र की "मूल्य-निरपेक्षता" (value-neutrality) को नकारते हुए, यह मानता है कि नीति निर्माण और आर्थिक निर्णय हमेशा ****राजनीतिक और सामाजिक हितों**** से प्रभावित होते हैं।

□ ****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की आधारभूत मान्यताएँ:****

1. ****राजनीति और अर्थशास्त्र एक-दूसरे से अविभाज्य हैं:**** यह उपागम मानता है कि राजनीतिक निर्णयों का सीधा प्रभाव आर्थिक नीतियों पर पड़ता है और इसके विपरीत भी।

* उदाहरण: चुनाव के समय लिए गए जन-कल्याणकारी निर्णय, जिनका आर्थिक आधार कमजोर होता है।

2. **राज्य (State) तटस्थ नहीं होता: यह उपागम राज्य को तटस्थ संस्था नहीं मानता, बल्कि एक ऐसा माध्यम मानता है जो कुछ खास वर्गों या हितों का प्रतिनिधित्व करता है।**

* विशेषकर मार्क्सवादी दृष्टिकोण में राज्य को **शासक वर्ग का औजार** माना गया है। 3. **संसाधनों का वितरण सत्ता और वर्ग-संबंधों पर निर्भर करता है: समाज में आर्थिक असमानता केवल बाजार की विफलता नहीं, बल्कि सत्ता-संबंधों का परिणाम होती है।** 4. **नीति-निर्माण हित आधारित प्रक्रिया है: कोई भी नीति केवल तकनीकी या आर्थिक कारणों से नहीं बनती, बल्कि इसके पीछे राजनीतिक दलों, लॉबी समूहों, कॉर्पोरेट हितों आदि की भूमिका होती है।**

5. **संस्थाएँ केवल संरचनाएँ नहीं, हितों के वाहक होती हैं: राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं को निष्पक्ष नहीं माना जाता; वे अक्सर विशेष वर्गों के हितों को संरक्षित करती हैं।**

6. **अर्थव्यवस्था का स्वरूप ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है: सभी देश एक ही आर्थिक मॉडल का अनुसरण नहीं करते, क्योंकि उनकी इतिहास, संस्कृति और राजनीति अलग-अलग होती है।**

7. **अंतरराष्ट्रीय प्रणाली और वैश्विक शक्तियों का प्रभाव महत्वपूर्ण है: IMF, World Bank, WTO जैसी संस्थाएँ विकासशील देशों की आर्थिक नीति को प्रभावित करती हैं – यह उपागम इसे महत्वपूर्ण मानता है।**

□ **सारांश तालिका:**

मान्यता संख्या	आधारभूत मान्यता	संक्षिप्त व्याख्या
1	राजनीति-अर्थशास्त्र की एकता	दोनों क्षेत्रों को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता
2	राज्य की पक्षधरता	राज्य अक्सर किसी वर्ग विशेष के हित में कार्य करता है

| 3 | सत्ता आधारित संसाधन वितरण | शक्ति-संबंध निर्धारण करते हैं कि किसे कितना मिलेगा

| 4 | हितों पर आधारित नीति-निर्माण | नीतियाँ केवल आर्थिक नहीं, राजनीतिक निर्णय भी होती हैं |

| संस्थाओं की वैचारिक भूमिका | संस्थाएँ स्वतंत्र नहीं, हित-संरक्षक होती हैं

6 | सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ | अर्थव्यवस्था का निर्माण स्थानीय कारकों से प्रभावित

| 7 वैश्विक संरचनाओं का दबाव | बाह्य शक्तियाँ आंतरिक नीतियों को प्रभावित करती हैं

निष्कर्ष: राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम यह मानता है कि ****सत्ता, नीति और संपत्ति**** का आपसी संबंध समाज की संरचना और शासन प्रणाली को निर्धारित करता है। इसकी आधारभूत मान्यताएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि किसी भी नीति या निर्णय के पीछे सिर्फ आर्थिक तर्क नहीं, बल्कि ****राजनीतिक हित, वर्ग-संबंध और वैश्विक ताकतें**** भी होती हैं।

****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की विशेषताएँ****

परिचय:****राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम**** राजनीति और अर्थशास्त्र के अंतर्संबंध को समझने का एक बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह उपागम मानता है कि आर्थिक निर्णय और नीतियाँ केवल आर्थिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक शक्तियों, संस्थाओं और सामाजिक संबंधों से भी प्रभावित होती हैं।

****मुख्य विशेषताएँ (Key Characteristics):****

1. ****अंतर्विषयक (Interdisciplinary) प्रकृति:****

यह उपागम ****अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र, इतिहास और अंतरराष्ट्रीय संबंधों**** को एक साथ जोड़ता है। यह समाज के आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं का समग्र अध्ययन करता है।

2. ****राजनीति और अर्थशास्त्र का एकीकरण:**** यह मानता है कि राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाएँ ****अलग-अलग नहीं**** बल्कि ****एक-दूसरे से जुड़ी हुई**** हैं।

* उदाहरण: सरकार की कर नीति या सब्सिडी का निर्णय राजनीतिक समर्थन के आधार पर भी होता है।

3. ****राज्य की सक्रिय भूमिका:**** * राज्य को केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखने वाला नहीं, बल्कि ****आर्थिक नीति निर्धारण और संसाधनों के वितरण में सक्रिय भूमिका निभाने वाला**** माना जाता है।

4. ****सत्ता और वर्ग-संघर्ष पर बल:**** विशेषकर ****मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य**** में, यह उपागम दिखाता है कि कैसे ****वर्ग-संघर्ष और सत्ता-संबंध**** आर्थिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

5. ****आर्थिक नीतियों का मूल्य-आधारित विश्लेषण:**** यह उपागम नीतियों को केवल "लाभ-हानि" के नजरिए से नहीं देखता, बल्कि यह पूछता है कि:

* किसके लिए नीति लाभदायक है?

* कौन इससे वंचित हो रहा है?

6. ****विकास और असमानता का राजनीतिक विश्लेषण:****

* यह विश्लेषण करता है कि क्यों कुछ समूहों या क्षेत्रों को विकास का अधिक लाभ मिलता है, जबकि अन्य उपेक्षित रह जाते हैं।

7. ****संस्थाओं की आलोचनात्मक भूमिका:**** * यह संस्थाओं (जैसे सरकार, संसद, बाजार, अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं) को ****तटस्थ या निष्पक्ष**** नहीं मानता, बल्कि उन्हें ****हितों के संरक्षक**** के रूप में देखता है।

8. ****वैश्वीकरण और बाहरी शक्तियों का प्रभाव:**** यह उपागम यह समझने की कोशिश करता है कि कैसे ****IMF, WTO, विश्व बैंक**** जैसी संस्थाएं विकासशील देशों की नीति पर असर डालती हैं।

9. ****ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ का महत्व:**** यह मानता है कि किसी भी देश की आर्थिक-राजनीतिक संरचना को समझने के लिए उसके ****इतिहास, संस्कृति और सामाजिक संरचना**** का विश्लेषण आवश्यक है।

****निष्कर्ष:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम की विशेषताएँ इसे एक ****समग्र, व्यावहारिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण**** बनाती हैं, जो समाज में शक्ति, संपत्ति और नीति के बीच जटिल संबंधों को उजागर करती हैं। यह उपागम आर्थिक नीतियों के पीछे छिपे ****राजनीतिक हितों और सामाजिक प्रभावों**** को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

****राजनीतिक अर्थशास्त्र दृष्टिकोण का तुलनात्मक राजनीति में व्यावहारिक प्रयोग****

(Practical Application of Political Economy Approach in Comparative Politics)

****परिचय:**** तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, नीतियों और प्रक्रियाओं का विश्लेषण करती है। इसमें ****राजनीतिक अर्थशास्त्र दृष्टिकोण**** का प्रयोग करते हुए यह समझा जाता है कि किस प्रकार ****राजनीतिक निर्णय, आर्थिक संरचना और सामाजिक शक्तियाँ**** आपस में मिलकर नीति निर्माण एवं शासन की दिशा तय करती हैं।

□ ****राजनीतिक अर्थशास्त्र दृष्टिकोण का तुलनात्मक राजनीति में व्यावहारिक प्रयोग:****

1. ****विकासशील बनाम विकसित देशों की तुलना:**** यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि क्यों कुछ देश तेजी से आर्थिक प्रगति करते हैं जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं।

* ****उदाहरण:**** ****दक्षिण कोरिया**** और ****घाना**** – दोनों ने स्वतंत्रता के बाद विकास की शुरुआत की, परंतु दक्षिण कोरिया में राजनीतिक स्थिरता और नीति-नियंत्रण ने आर्थिक विकास को गति दी, जबकि घाना में अस्थिरता ने उसे पीछे कर दिया।

2. ****राज्य की भूमिका का मूल्यांकन:**** विभिन्न देशों में ****राज्य की भूमिका**** अलग-अलग होती है – कहीं राज्य आर्थिक गतिविधियों का नियंत्रक होता है, तो कहीं केवल नियामक।

* ****उदाहरण:**** ****चीन**** में राज्य-नियंत्रित पूंजीवाद बनाम ****अमेरिका**** में मुक्त बाजार आधारित अर्थव्यवस्था।

3. ****लोकलुभावन नीतियाँ और चुनावी राजनीति:**** इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है कि राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए किस प्रकार आर्थिक वादे करते हैं।

* **उदाहरण:** भारत में loan waiver, मुफ्त बिजली-पानी जैसी घोषणाएँ, जो आर्थिक रूप से टिकाऊ नहीं, परंतु राजनीतिक रूप से फायदेमंद होती हैं।

4. **सामाजिक असमानता और नीतिगत पक्षपात:** यह दृष्टिकोण यह दिखाने में सक्षम है कि नीतियाँ कैसे कुछ वर्गों (जैसे पूँजीपति वर्ग) के हित में बनती हैं।

5. **नीति-निर्माण में संस्थाओं की भूमिका:** * यह विश्लेषण करता है कि संसद, नौकरशाही, न्यायपालिका जैसी संस्थाएँ नीति निर्माण में कैसे आर्थिक हितों को समायोजित करती हैं।

* **उदाहरण:** * यूरोपीय संघ (EU) में साझा आर्थिक नीतियाँ और राजनीतिक सहमति की प्रक्रिया।

6. **वैश्वीकरण और बाहरी दबाव:** यह दृष्टिकोण दिखाता है कि कैसे IMF, WTO और वर्ल्ड बैंक जैसे संस्थान देशों की नीतियों को प्रभावित करते हैं।

* **उदाहरण:** * 1991 में भारत का आर्थिक उदारीकरण – IMF के दबाव और ऋण संकट के कारण।

7. **अशांति और असमान विकास का विश्लेषण:** राजनीतिक अर्थशास्त्र दृष्टिकोण से यह समझा जाता है कि किस प्रकार **संपत्ति और संसाधनों की असमानता** राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देती है।

□ *निष्कर्ष:** समझने में मदद करता है कि **आर्थिक निर्णय और राजनीतिक शक्ति** किस प्रकार समाज को आकार देते हैं। यह दृष्टिकोण **नीति निर्माण, विकास, असमानता, वैश्वीकरण और सामाजिक संघर्षों** के पीछे छिपे कारणों को उजागर करता है और विभिन्न देशों की तुलना को अधिक **यथार्थपूर्ण और गहराईपूर्ण** बनाता है।

****राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम की उपयोगिता****

(Utility of Political Economy Approach)

□ **परिचय:** राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम वह दृष्टिकोण है जो राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के आपसी संबंध को समझता है। यह उपागम राजनीतिक निर्णयों, आर्थिक नीतियों

और सामाजिक संरचनाओं के बीच अंतर्संबंध को उजागर करता है। इसकी उपयोगिता तुलनात्मक राजनीति और समाजशास्त्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

****राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम की प्रमुख उपयोगिताएँ:**** 1. ****नीति-निर्माण की गहरी समझ:**** यह उपागम नीति निर्माण की प्रक्रियाओं में निहित राजनीतिक और आर्थिक हितों को समझने में मदद करता है। * नीतियाँ केवल आर्थिक तर्कों पर आधारित नहीं, बल्कि सत्ता और वर्ग संघर्ष से प्रभावित होती हैं।

2. ****वर्ग और सत्ता-संबंधों का विश्लेषण:**** यह उपागम समाज में सत्ता और संपत्ति के वितरण को समझने में सहायक होता है।

* आर्थिक असमानता के पीछे राजनीतिक कारणों और वर्गीय हितों को उजागर करता है।

3. ****राज्य की भूमिका का स्पष्ट चित्रण:**** राज्य को एक तटस्थ संस्था नहीं, बल्कि ****हित-संरक्षक**** और नीति निर्माता के रूप में देखा जाता है।

* विभिन्न देशों में राज्य की भूमिका को समझने में यह उपागम सहायक होता है।

4. ****विकास और असमानता के कारणों की पहचान:**** यह उपागम विकासशील और विकसित देशों के बीच आर्थिक-राजनीतिक अंतर को समझाता है।

* सामाजिक और आर्थिक असमानता के राजनीतिक कारणों का विश्लेषण करता है।

5. ****वैश्विक आर्थिक व्यवस्था का प्रभाव समझना:**** वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं (IMF, WTO, विश्व बैंक) के प्रभाव को पहचानने में मदद करता है।

* देशों की आंतरिक नीतियों पर बाहरी दबावों का प्रभाव समझाता है।

6. ****व्यावहारिक नीति सलाह देना:**** राजनीतिक अर्थशास्त्र उपागम के आधार पर नीति निर्माता अधिक संतुलित और न्यायसंगत नीतियाँ बना सकते हैं।

* यह असमानताओं को कम करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में सहायक होता है।

7. ****समाज और राजनीति के बीच जटिल संबंधों को समझना:**** यह उपागम राजनीतिक स्थिरता, अस्थिरता और सामाजिक संघर्षों के पीछे आर्थिक कारणों की पहचान करता है।

□ ***निष्कर्ष:**** राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम तुलनात्मक राजनीति और समाजशास्त्र में ****नीति निर्माण, सामाजिक न्याय, और आर्थिक विकास**** को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह उपागम नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और विश्लेषकों को सत्ता, आर्थिक हित और सामाजिक प्रभावों के बीच जटिल संबंधों को समझने और बेहतर नीतियाँ विकसित करने में सहायता प्रदान करता है।

****राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम की आलोचना****

□ ****परिचय:**** राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम ने राजनीतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के आपसी संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परंतु, इसे लेकर कई प्रकार की आलोचनाएँ भी सामने आई हैं। ये आलोचनाएँ इसके सीमित दृष्टिकोण, व्यवहारिकता, और कुछ विचारधारात्मक पक्षों पर आधारित होती हैं।

****मुख्य आलोचनाएँ:**** 1. ****अति-राजनीतिकरण (Over-politicization):****

* इस उपागम में सभी आर्थिक घटनाओं को राजनीतिक हितों और सत्ता संघर्षों तक सीमित कर दिया जाता है।* कभी-कभी आर्थिक और तकनीकी कारणों को नजरअंदाज कर दिया जाता है, जबकि कई बार नीतियाँ व्यावहारिक आर्थिक जरूरतों पर आधारित होती हैं।

2. ****सरल वर्ग संघर्ष की व्याख्या (Reductionism in Class Conflict):**** खासकर मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र में वर्ग संघर्ष को समाज की मूल समझ माना जाता है। इससे समाज की जटिल संरचनाओं जैसे जाति, धर्म, लिंग आदि के प्रभावों की अनदेखी हो जाती है।

3. ****राज्य की एकपक्षीय भूमिका (One-sided View of State):**** * इसे आलोचना यह भी है कि यह उपागम राज्य को केवल एक पक्षधर संस्था मानता है, जबकि वास्तव में राज्य कई हितों के बीच संतुलन बनाता है। इससे राज्य की बहुआयामी भूमिका और उसकी स्वायत्तता को कम आंकना होता है।

4. ****व्यावहारिकता की कमी (Lack of Practical Applicability):**** इस उपागम के सिद्धांतों को लागू करना जटिल होता है क्योंकि यह अक्सर व्यापक और आलोचनात्मक होता है।

* नीति-निर्माताओं के लिए इससे निकटता से जुड़े सुझाव निकालना मुश्किल हो जाता है।

5. ****इतिहास और सांस्कृतिक विविधता का कम ध्यान (Insufficient Attention to Historical and Cultural Contexts):**** कभी-कभी यह उपागम वैश्विक सिद्धांतों को स्थानीय संदर्भों पर थोपता है, जिससे वास्तविकता से दूरी बनती है।

6. ****वैश्विक आर्थिक तंत्र की जटिलता को कम आंकना (Oversimplification of Global Economic System):**** वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाएँ अत्यंत जटिल हैं, पर यह उपागम इन्हें केवल सत्ता-संबंधों तक सीमित कर देता है।

****निष्कर्ष:**** राजनीतिक अर्थशास्त्रीय उपागम सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं को समझने में उपयोगी है, पर इसकी आलोचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। यह उपागम कभी-कभी ****अधिक आलोचनात्मक और सैद्धांतिक**** हो जाता है, जिससे व्यावहारिक संदर्भों में इसकी सीमाएं सामने आती हैं। बेहतर समझ के लिए इसे अन्य दृष्टिकोणों के साथ मिलाकर देखा जाना चाहिए।

Chapter-7

संविधानवाद

****संविधानवाद का अर्थ व परिभाषा****

□ ****संविधानवाद का अर्थ:****संविधानवाद**** से तात्पर्य है एक ऐसा राजनीतिक और कानूनी सिद्धांत या व्यवस्था जिसमें सरकार की शक्तियाँ एक लिखित या असल में स्वीकृत संविधान के अंतर्गत सीमित और विनियमित होती हैं। इसका उद्देश्य सरकार के अधिकारों और दायित्वों को नियंत्रित करना, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना, और शासन की न्यायसंगतता तथा जवाबदेही सुनिश्चित करना होता है।

****संविधानवाद की परिभाषाएँ:****

1. ****एम.ई. कॉर्निश**** के अनुसार: ****"संविधानवाद वह सिद्धांत है जिसके अनुसार सत्ता को कानून के शासन (rule of law) द्वारा नियंत्रित और सीमित किया जाता है।"***
2. ****लॉर्ड हॉलिशेम**** के अनुसार: ****"संविधानवाद का अर्थ है कि सरकार की शक्ति सीमित हो और सरकार कानून के अधीन हो, न कि कानून सरकार के अधीन।"***
3. ****ए.वी. डेवलिन**** ने संविधानवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है: ****"संविधानवाद वह व्यवस्था है जिसमें सरकार को कानूनी और संस्थागत सीमाओं के दायरे में रखा जाता है ताकि वह नागरिकों के अधिकारों का उल्लंघन न कर सके।"***

****संक्षेप में:***** संविधानवाद का मूल विचार है कि ****सत्ता का असीम उपयोग खतरनाक होता है****, इसलिए सत्ता को संविधान द्वारा सीमित किया जाना चाहिए।

* यह **कानून के शासन** (Rule of Law) की स्थापना करता है।* सरकार को अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए और नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए।

* यह **लोकतांत्रिक शासन** और **न्यायिक समीक्षा** के लिए आधार प्रदान करता है।

संविधानवाद की प्रकृति एवं विशेषताएँ

□ **परिचय:** संविधानवाद (Constitutionalism) केवल एक संविधान की उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा राजनीतिक दर्शन है जो यह सुनिश्चित करता है कि **राज्य की शक्ति सीमित, नियंत्रित और उत्तरदायी** हो। इसका उद्देश्य है – **सत्ता का संतुलन**, **नागरिक अधिकारों की रक्षा** और **कानून का शासन** स्थापित करना।

1. **संविधानवाद की प्रकृति (Nature of Constitutionalism):**

1. **एक विचारधारात्मक अवधारणा:** संविधानवाद एक **सिद्धांत** है, जो मानता है कि सरकार को कानून और संविधान के अधीन रहना चाहिए। यह केवल संस्थागत व्यवस्था नहीं, बल्कि एक **राजनीतिक और नैतिक सोच** है।

2. **शक्ति पर नियंत्रण:** इसका मूल स्वभाव है – **सत्ता का सीमित उपयोग**। यह मानता है कि निरंकुश और असीमित सत्ता से नागरिकों की स्वतंत्रता खतरे में पड़ती है।

3. **न्यायसंगत और उत्तरदायी शासन:** संविधानवाद न्याय, समानता और पारदर्शिता पर आधारित शासन को बढ़ावा देता है, जहाँ सरकार **जनता के प्रति उत्तरदायी** होती है।

4. **नागरिक अधिकारों की रक्षा:** यह नागरिकों के **मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रताओं** की रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

5. **संवैधानिक सर्वोच्चता:** संविधानवाद इस सिद्धांत को मान्यता देता है कि **संविधान सर्वोच्च है**, और राज्य के सभी अंग इसकी सीमा में कार्य करते हैं।

संविधानवाद की विशेषताएँ (Characteristics of Constitutionalism):

| 1. | ****कानून का शासन (Rule of Law)**** |सरकार
और नागरिक दोनों ही कानून के अधीन रहते हैं; कोई भी कानून से ऊपर नहीं होता।

2. | ****सत्ता का विभाजन (Separation of Powers)****
|विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच सत्ता का बंटवारा – शक्ति का संतुलन बनाए रखना। |

3. ****संवैधानिक सीमाएँ (Constitutional Limits on Power)**** सरकार की
शक्तियों को संविधान द्वारा स्पष्ट रूप से सीमित किया जाता है। | 4.

****मौलिक अधिकारों की गारंटी (Guarantee of Fundamental Rights)**** |नागरिकों को
स्वतंत्रता, समानता, अभिव्यक्ति, धर्म आदि के अधिकार प्राप्त होते हैं।

5. ****न्यायिक समीक्षा (Judicial Review)**** न्यायपालिका को यह अधिकार होता है
कि वह सरकारी कार्यों की संवैधानिकता की समीक्षा कर सके। |

6. ****लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व (Democratic Accountability)**** शासक जनता के प्रति
जवाबदेह होते हैं – चुनावों, संसद और मीडिया के माध्यम से।

7. ****संवैधानिक नैतिकता (Constitutional Morality)**** संविधान के आदर्शों का
पालन केवल कानूनी रूप से नहीं, नैतिक रूप से भी किया जाना चाहिए।

8. ****संस्थाओं की स्वायत्तता (Institutional Autonomy)**** न्यायपालिका, चुनाव आयोग,
आदि संस्थाएं स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

****निष्कर्ष:****संविधानवाद की प्रकृति और विशेषताएँ**** इसे एक सामान्य संविधान से अलग
बनाती हैं। यह केवल शासन की व्यवस्था नहीं, बल्कि एक ****मूल्य आधारित व्यवस्था (value-
based system)**** है जो ****व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्याय, उत्तरदायित्व और शासन की वैधता****
को सुनिश्चित करती है। संविधानवाद का उद्देश्य है – ऐसा शासन जहाँ सरकार स्वयं को कानून
से ऊपर न समझे।

****संविधानवाद (Constitutionalism)**** का अर्थ है - शासन की ऐसी व्यवस्था जिसमें सरकार
के अधिकारों और कार्यों को संविधान द्वारा सीमित किया गया हो, और नागरिकों के मूल
अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की गई हो। संविधानवाद केवल लिखित संविधान की उपस्थिति

नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी वैचारिक और राजनीतिक परंपरा है जो कानून के शासन, लोकतंत्र, न्याय और मानवाधिकारों की रक्षा पर आधारित होती है।

अब आइए संविधानवाद के इतिहास का क्रमबद्ध वर्णन करें:

****संविधानवाद का इतिहास:****

****1. प्राचीन काल:****ग्रीक सभ्यता:**** संविधानवाद की अवधारणा का बीज प्राचीन ग्रीस में देखा जा सकता है। प्लेटो और अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने शासन की सीमाओं और कानून के शासन की बात की थी। अरस्तू ने 'राज्य' को संविधान आधारित शासन व्यवस्था माना।

रोम साम्राज्य:** रोमनों ने लिखित कानून की परंपरा शुरू की थी, जैसे कि "Twelve Tables", जो नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता था।

**2. मध्यकालीन काल:**

*** **मैग्ना कार्टा (Magna Carta), 1215 - इंग्लैंड:****

यह दस्तावेज़ ब्रिटिश संविधानवाद का आधार माना जाता है। इसमें राजा की शक्तियों को सीमित करने और नागरिकों (विशेष रूप से सामंतों) के अधिकारों की रक्षा की बात की गई थी। यह "कानून के शासन" (Rule of Law) की दिशा में पहला बड़ा कदम था।

3. आधुनिक काल:

*(क) 17वीं सदी - इंग्लैंड में संवैधानिक विकास:**

* **ग्लोरियस रिवोल्यूशन (1688):**

इसके बाद "Bill of Rights, 1689" पारित हुआ, जिसने संसद को सर्वोच्चता दी और राजा की शक्तियों को सीमित किया।

* **जॉन लॉक का सामाजिक संविदा सिद्धांत:**

उसने सरकार की वैधता को नागरिकों की सहमति से जोड़ा और मौलिक अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) की बात की - जो आधुनिक संविधानवाद का आधार बने।

*(ख) 18वीं सदी - अमेरिका और फ्रांस में क्रांति:**

* **अमेरिकी क्रांति (1776):**

अमेरिका ने दुनिया का पहला लिखित संविधान (1787) अपनाया जिसमें सत्ता का विभाजन (separation of powers), मौलिक अधिकार, और न्यायपालिका की स्वतंत्रता की अवधारणा शामिल थी।

* **फ्रांसीसी क्रांति (1789):**

"मानव और नागरिक अधिकारों की उद्घोषणा" (Declaration of the Rights of Man and of the Citizen) ने समानता, स्वतंत्रता, और बंधुत्व की भावना को संविधानवाद के मूल में रखा।

4. 19वीं - 20वीं सदी: वैश्विक प्रसार:

* धीरे-धीरे संविधानवाद की अवधारणा यूरोप, एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देशों में फैलने लगी।

* **संविधानवाद का उद्देश्य था:**

निरंकुश राजशक्ति को समाप्त करना, लोकतंत्र को स्थापित करना, और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना।

5. भारत में संविधानवाद:

* ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में संविधानवाद के बीज बोए गए, जैसे कि ****भारतीय परिषद अधिनियम 1861****, ****1909 का अधिनियम****, ****1919 का अधिनियम****, और ****1935 का भारत सरकार अधिनियम****।

****भारतीय संविधान (1950):****

भारतीय संविधान ने संविधानवाद को एक व्यावहारिक रूप दिया - जिसमें मौलिक अधिकार, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, विधायिका की सीमाएं और एक उत्तरदायी सरकार सुनिश्चित की गई।

****निष्कर्ष:**** संविधानवाद केवल एक शासन प्रणाली नहीं, बल्कि यह एक राजनीतिक और नैतिक दर्शन है जो यह सुनिश्चित करता है कि सरकार सीमित हो, कानून के अधीन हो, और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा हो। यह इतिहास में निरंकुशता के विरुद्ध मानवता की एक सतत लड़ाई का परिणाम है।

****विकासशील समाजों में संविधानवाद की समस्या**** एक जटिल और बहुपक्षीय विषय है। हालांकि कई विकासशील देशों ने लोकतांत्रिक ढांचे, मौलिक अधिकारों, और संवैधानिक संस्थाओं को अपनाया है, लेकिन व्यवहार में संविधानवाद को सफलतापूर्वक लागू करना कठिन साबित होता है।

****विकासशील समाजों में संविधानवाद की प्रमुख समस्याएँ:****

1. ****लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरी**** विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका अक्सर स्वतंत्र रूप से काम नहीं करतीं। सत्ता का केंद्रीकरण होता है, जिससे संविधान में दिए गए "सत्ता के विभाजन" (Separation of Powers) के सिद्धांत का उल्लंघन होता है।

2. ****राजनीतिक अस्थिरता और तख्तापलट**** कई विकासशील देशों में सैन्य शासन या बार-बार की सरकारों का गिरना आम रहा है, जिससे संवैधानिक शासन बाधित होता है।

* तख्तापलट के दौरान संविधान को निलंबित कर दिया जाता है या उसकी अनदेखी होती है।

3. ****कानून का शासन (Rule of Law) कमजोर**** नेताओं और प्रभावशाली वर्गों के लिए कानूनों का समान अनुपालन नहीं होता। * भ्रष्टाचार, पक्षपात और प्रभावशाली लोगों के लिए "विशेष न्याय" संविधानवाद की भावना को कमजोर करता है। 4. ****न्यायपालिका की स्वतंत्रता**

में बाधा*** सरकारें न्यायपालिका पर दबाव डालती हैं या न्यायाधीशों की नियुक्तियों में हस्तक्षेप करती हैं।* इससे न्यायपालिका जनता के अधिकारों की रक्षा में असफल रहती है।

5. **साक्षरता और नागरिक चेतना की कमी*** संविधान के अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति आम जनता में जागरूकता की कमी होती है। लोकतंत्र में जनता की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है, जो निरक्षरता और गरीबी के कारण बाधित होती है।

6. **जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता आधारित विभाजन*** संविधान सभी नागरिकों को समान अधिकार देता है, लेकिन सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं के कारण विभाजनकारी ताकतें संविधानवाद के खिलाफ काम करती हैं।* धार्मिक कट्टरता, जातीय हिंसा आदि से संविधान में निहित "धर्मनिरपेक्षता" और "समानता" की अवधारणाएँ कमजोर पड़ती हैं।

7. **राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी**नेताओं का प्राथमिक उद्देश्य सत्ता में बने रहना होता है, न कि संविधान के आदर्शों को लागू करना।* चुनाव सुधार, पुलिस सुधार, न्यायिक सुधार जैसे जरूरी बदलावों को नजरअंदाज किया जाता है।

8. **भ्रष्टाचार*** सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार संविधान में निर्धारित "उत्तरदायी और पारदर्शी शासन" के सिद्धांत के विपरीत जाता है।

* लोक सेवक अपने कर्तव्यों से अधिक निजी हितों को प्राथमिकता देते हैं।

□ **भारत में उदाहरण सहित कुछ चुनौतियाँ:*** **आपातकाल (1975-77):** मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, जो संविधानवाद के खिलाफ था।

* **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर नियंत्रण:** आलोचकों, पत्रकारों, और सामाजिक कार्यकर्ताओं पर मुकदमे या दमन।

* **लोकपाल जैसे संस्थानों का कमजोर कार्यान्वयन।**

संभावित समाधान:

| समस्या | समाधान

| संस्थाओं की कमजोरी | संस्थाओं को स्वतंत्र, पारदर्शी और जवाबदेह बनाया जाए।

| जनता की अनभिज्ञता | संविधानिक शिक्षा और नागरिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।

| भ्रष्टाचार | मजबूत और स्वतंत्र निगरानी तंत्र बनाया जाए।

| न्याय में देरी | न्यायिक सुधार किए जाएं और न्यायपालिका को डिजिटल व सुलभ बनाया जाए। |

| सामाजिक विभाजन | सामाजिक समरसता और समावेशी नीतियों को बढ़ावा दिया जाए।

****निष्कर्ष:**** विकासशील समाजों में संविधानवाद केवल एक वैधानिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक ****संवेदनशील सामाजिक प्रक्रिया**** है। जब तक राजनीतिक इच्छाशक्ति, जन-जागरूकता, और सशक्त संस्थाएं एक साथ कार्य नहीं करेंगी, तब तक संविधान के आदर्श केवल कागजों तक सीमित रह जाएंगे। संविधानवाद को जीवंत बनाना ****हर नागरिक, नेता और संस्था**** की साझा जिम्मेदारी है।

****आधुनिक संविधानवाद की समस्याएँ**** (Problems of Modern Constitutionalism) वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय संदर्भों में अत्यंत प्रासंगिक विषय है। यद्यपि संविधानवाद का उद्देश्य ****सीमित सरकार****, ****न्याय का शासन****, और ****नागरिक अधिकारों की सुरक्षा**** है, फिर भी आज की जटिल राजनीतिक, सामाजिक और तकनीकी स्थितियाँ कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं।

****आधुनिक संविधानवाद की प्रमुख समस्याएँ:****

1. ****लोकतंत्र की "औपचारिकता"**, न कि वास्तविकता** बहुत से देशों में चुनाव होते हैं, संविधान है, लेकिन सत्ता पर एक ही पार्टी या नेता का वर्चस्व बना रहता है।

* ****"इलिबरल डेमोक्रेसी" (Illiberal Democracy)** का उदय हो रहा है – जहाँ चुनाव तो होते हैं, लेकिन नागरिक स्वतंत्रताएँ सीमित होती जा रही हैं।

2. ****कार्यपालिका का अति-विस्तार (Executive Overreach)**** * आधुनिक शासन में कार्यपालिका (सरकार) कई बार संसद और न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्रों में हस्तक्षेप करती है।* विशेषकर ****आपातकाल****, ****अधिनियमों के तहत विशेष शक्तियाँ****, और ****विधायी प्रक्रियाओं को दरकिनार करना**** संविधानवाद को कमजोर करता है।

3. ****न्यायपालिका का राजनीतिकरण**** न्यायपालिका पर राजनीतिक दबाव, पक्षपातपूर्ण निर्णय, और नियुक्तियों में पारदर्शिता की कमी – ये न्याय की स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं। ****"ज्यूडिशियल एक्टिविज्म" बनाम "ज्यूडिशियल ओवररीच" की बहस आधुनिक संविधानवाद के लिए चुनौती है।**

4. ****मीडिया और सूचना का दुरुपयोग**** मीडिया को "लोकतंत्र का चौथा स्तंभ" माना जाता है, लेकिन फेक न्यूज़, प्रचार तंत्र और ट्रोल संस्कृति संविधानवाद के मूल्यों को क्षति पहुँचाती हैं।

* मीडिया का सरकारी नियंत्रण या कॉरपोरेट दबाव संविधानवादी पारदर्शिता को खत्म करता है।

5. ****नागरिक अधिकारों पर नियंत्रण**** सुरक्षा, देशभक्ति या कानून-व्यवस्था के नाम पर ****अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता****, ****विरोध का अधिकार****, आदि को सीमित किया जा रहा है।

* डिजिटल निगरानी, डेटा प्राइवैसी उल्लंघन जैसे नए खतरे नागरिक स्वतंत्रताओं के विरुद्ध हैं।

6. ****संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता में गिरावट**** चुनाव आयोग, मानवाधिकार आयोग, लोकपाल आदि जैसी संस्थाओं की निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं।

* संवैधानिक संस्थाएं यदि स्वतंत्र और निष्पक्ष न रहें तो संविधानवाद का पतन निश्चित है।

7. ****संविधान में बार-बार संशोधन**** बार-बार संशोधनों से संविधान की मूल आत्मा और स्थायित्व पर खतरा उत्पन्न होता है। कई बार संशोधन राजनीतिक हितों को ध्यान में रखकर किए जाते हैं, न कि जनता के व्यापक हित में।

8. ****तकनीकी विकास और संविधानवाद**** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा, और डिजिटल सर्विलांस जैसे मुद्दे – जिनका संविधान में स्पष्ट उल्लेख नहीं है – नई चुनौतियाँ हैं।

****डिजिटल अधिकार**** एक नया क्षेत्र बन रहा है, जिसे संविधानवाद में समाहित करना आवश्यक है।

9. ****ग्लोबलाइज़ेशन और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ**** वैश्विक कॉरपोरेट ताकतें अक्सर राष्ट्रों की नीतियों को प्रभावित करती हैं, जिससे संवैधानिक स्वायत्तता कमजोर होती है। * कॉरपोरेट लॉबिंग, पूंजीवादी हित संविधान के सामाजिक न्याय के लक्ष्य के विरुद्ध हो सकते हैं।

10. ****जनता की उदासीनता और अधिकारों का दुरुपयोग**** आम नागरिक संविधान को समझे बिना केवल अपने अधिकारों की माँग करता है, लेकिन कर्तव्यों की अनदेखी करता है।

मतदाता अगर जाति, धर्म या भावनाओं के आधार पर वोट दे तो संविधानवाद का उद्देश्य कमजोर होता है।

****भारत के संदर्भ में उदाहरण:****

| समस्या

उदाहरण

| कार्यपालिका का वर्चस्व

अध्यादेशों का बार-बार प्रयोग

| न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर प्रश्न | कोलेजियम प्रणाली की आलोचना, न्यायाधीशों के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव |

| अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर संकट

| UAPA, देशद्रोह जैसे कानूनों का दुरुपयोग

| डिजिटल अधिकारों की कमी

| पेगासस जासूसी प्रकरण, डेटा संरक्षण कानून में

खामियाँ

□ ****निष्कर्ष:****आधुनिक संविधानवाद की सबसे बड़ी समस्या यह है कि ****संविधान केवल दस्तावेज़ बनता जा रहा है, जबकि उसकी आत्मा कमजोर होती जा रही है।**** लोकतंत्र के बाहरी रूप को बनाए रखते हुए भी सरकारें और संस्थाएँ उसके मूल तत्वों - ****स्वतंत्रता, समानता, न्याय, उत्तरदायित्व और नागरिक भागीदारी**** - को क्षीण कर रही हैं।

Chapter-8

शक्ति, सत्ता, व औचित्यता

□ **राजनीतिक शक्ति (Political Power)**

****परिभाषा:***** राजनीतिक शक्ति वह क्षमता या अधिकार है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति, समूह या संस्था समाज में निर्णय ले सकती है, नीतियाँ बना सकती है और दूसरों के व्यवहार को प्रभावित या नियंत्रित कर सकती है।

****राजनीतिक शक्ति के प्रमुख तत्व:*****

1. ****प्रभाव (Influence):***** दूसरों के निर्णय या व्यवहार को प्रभावित करना।
2. ****प्राधिकरण (Authority):***** किसी कानूनी या वैधानिक ढांचे के अंतर्गत शक्ति का प्रयोग करना। (जैसे - प्रधानमंत्री की शक्ति)
3. ****बल प्रयोग की क्षमता (Coercion):***** ज़रूरत पड़ने पर शक्ति का प्रयोग बलपूर्वक करना (जैसे - पुलिस या सेना द्वारा कानून लागू कराना)।
4. ****वैधता (Legitimacy):***** लोगों द्वारा उस शक्ति को मान्यता देना और उसका पालन करना।

□ ****राजनीतिक शक्ति के स्रोत:*****

स्रोत	उदाहरण
वैधानिक अधिकार	सरकार, राष्ट्रपति, संसद
सामाजिक स्वीकृति	धर्मगुरु, समुदाय के नेता
आर्थिक शक्ति	पूंजीपति वर्ग, कॉर्पोरेट संस्थाएँ
जन समर्थन	लोकप्रिय नेता, आंदोलनकारी

ज्ञान या सूचना विशेषज्ञ, मीडिया |

□ ****राजनीतिक विचारकों के अनुसार:****

1. ****मैक्स वेबर (Max Weber):**** वेबर ने ****तीन प्रकार के अधिकार**** बताए:****पारंपरिक अधिकार**** (जैसे - राजा)
2. ****वैधानिक अधिकार**** (जैसे - लोकतांत्रिक सरकार) ****करिश्माई अधिकार**** (जैसे - गांधी, नेल्सन मंडेला)

2. ****रॉबर्ट डाहल (Robert Dahl):**** डाहल के अनुसार, "A has power over B to the extent that A can get B to do something that B would not otherwise do." □

****राजनीतिक शक्ति का प्रयोग:****

क्षेत्र	प्रयोग का प्रकार
सरकार	नीतियाँ बनाना, कानून लागू करना
चुनाव	जन समर्थन प्राप्त कर सत्ता में आना
आंदोलनों में	दबाव बनाकर सरकार से निर्णय करवाना
अंतरराष्ट्रीय संबंध	एक देश का दूसरे पर प्रभाव

****राजनीतिक शक्ति की समस्याएँ:****

****शक्ति का दुरुपयोग**** (Corruption, तानाशाही)

* ****असमान शक्ति वितरण**** (अमीर बनाम गरीब)

* ****जनहित की उपेक्षा**** (नीतियाँ केवल कुछ वर्ग के हित में)

* ****लोकतंत्र के सिद्धांतों का उल्लंघन****

****निष्कर्ष:**** राजनीतिक शक्ति समाज की दिशा तय करने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। यदि यह ****जनहित****, ****नैतिकता****, और ****संवैधानिक मूल्यों**** के अनुरूप हो तो समाज में

****न्याय, समानता और शांति**** स्थापित होती है। लेकिन यदि इसका दुरुपयोग हो तो यह ****तानाशाही, शोषण और असंतुलन**** को जन्म देती है।

****राजनीतिक शक्ति की विशेषताएँ**** (Characteristics of Political Power) उस शक्ति की प्रकृति को समझने में सहायक होती हैं जो किसी व्यक्ति, संस्था या समूह को राजनीतिक निर्णय लेने, नीतियाँ बनाने और समाज को नियंत्रित करने की क्षमता प्रदान करती है।

****राजनीतिक शक्ति की प्रमुख विशेषताएँ:**** 1. ****प्रभाव डालने की क्षमता (Ability to Influence)****

राजनीतिक शक्ति का मुख्य तत्व यह है कि वह दूसरों के विचार, निर्णय या व्यवहार को प्रभावित कर सकती है, चाहे वह सहमति से हो या दबाव में।

2. ****प्राधिकार और वैधता से युक्त (Backed by Authority and Legitimacy)**** यह शक्ति अधिकतर ****कानूनी या वैधानिक अधिकार**** (Authority) पर आधारित होती है। शक्ति को तभी स्थायी माना जाता है जब वह ****जनता द्वारा मान्य**** (Legitimate) हो।

3. ****निर्णय लेने की शक्ति (Decision-Making Power)**** राजनीतिक शक्ति का प्रयोग नीति निर्माण, कानून बनाने, युद्ध/शांति के निर्णय जैसे महत्वपूर्ण मामलों में होता है।

4. ****प्रशासन पर नियंत्रण (Control Over Administration)**** राजनीतिक शक्ति रखने वाले व्यक्तियों या संस्थाओं का शासन और प्रशासन पर प्रभाव होता है।

5. ****सामूहिक जीवन को प्रभावित करने वाली (Affects Collective Life)**** * यह केवल व्यक्तिगत नहीं होती, बल्कि ****समाज के बड़े वर्ग**** या पूरे राष्ट्र को प्रभावित करती है।

6. ****शक्ति का स्रोत विविध होता है (Multiple Sources of Power)**** यह शक्ति केवल संविधान से नहीं आती, बल्कि ****जन समर्थन****, ****आर्थिक संसाधन****, ****धार्मिक प्रभाव****, या ****मीडिया**** से भी प्राप्त हो सकती है।

7. ****बल प्रयोग की संभावना (Possibility of Coercion)**** यदि आवश्यक हो, तो राजनीतिक शक्ति ****बल प्रयोग**** (जैसे पुलिस, सेना, कानून) के माध्यम से अपने आदेश लागू करवा सकती है।

8. ****गतिशील होती है (Dynamic in Nature)****

राजनीतिक शक्ति स्थिर नहीं होती; यह समय, परिस्थितियों और जनभावनाओं के अनुसार बदलती रहती है।

9. ****राजनीतिक शक्ति संघर्ष का कारण बन सकती है (Leads to Power Struggles)****

जहाँ शक्ति है, वहाँ उसका विरोध या प्रतिस्पर्धा भी होती है।

10. ****प्रभावित करने के लिए संसाधनों का प्रयोग (Use of Resources to Maintain Power)****

****निष्कर्ष:**** राजनीतिक शक्ति केवल शासन करने की शक्ति नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो समाज को दिशा देने, नियम बनाने और उन्हें लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी विशेषताओं को समझना राजनीतिक तंत्र की प्रकृति को समझने के लिए आवश्यक है।

के विभिन्न स्तरों (अधरों) का परीक्षण

****परिभाषा:**** सत्ता (Power) समाज में किसी व्यक्ति, संस्था या समूह द्वारा दूसरों के व्यवहार, निर्णय या कार्यों को प्रभावित करने की क्षमता है। सत्ता केवल एक ही रूप में नहीं होती, यह विभिन्न स्तरों (Layers/Adhars) पर कार्य करती है।

****सत्ता के विभिन्न अधरों (स्तरों) का विश्लेषण:**** *1. व्यक्तिगत स्तर पर सत्ता (Individual Level of Power):

* यह उस स्थिति को दर्शाता है जहाँ एक व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।

*2. सामाजिक स्तर पर सत्ता (Social Level of Power): समाज में विभिन्न जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आदि के आधार पर सत्ता का वितरण होता है।

* सामाजिक सत्ता अमूर्त (invisible) हो सकती है, लेकिन इसका प्रभाव गहरा होता है।

पितृसत्ता (Patriarchy) - पुरुषों का महिलाओं पर सामाजिक नियंत्रण जातीय वर्चस्व - ऊँची जातियों का सामाजिक प्रभुत्व

□ **3. आर्थिक स्तर पर सत्ता (Economic Level of Power):**

* जिनके पास आर्थिक संसाधन होते हैं, वे समाज में सत्ता का उपयोग कर सकते हैं।

* यह सत्ता **नौकरियों, व्यापार, धन और संसाधनों** को नियंत्रित करने से आती है।

□ **4. राजनीतिक स्तर पर सत्ता (Political Level of Power):** यह सत्ता वह होती है जो **राजनीतिक निर्णय लेने**, **नीतियाँ बनाने**, और **सरकारी संस्थाओं को नियंत्रित करने** की शक्ति देती है। यह सत्ता अक्सर वैधानिक होती है।

□ **5. वैधानिक और संस्थागत सत्ता (Legal & Institutional Power):**

* यह संविधान, कानून और संस्थाओं (जैसे न्यायपालिका, चुनाव आयोग) से मिलने वाली शक्ति होती है। यह सत्ता **नियमों के अधीन** और **कानून द्वारा निर्देशित** होती है।

□ **6. सांस्कृतिक एवं वैचारिक सत्ता (Cultural & Ideological Power):** यह वह सत्ता है जो **विचारधारा, परंपराओं, धर्म, मीडिया** आदि के माध्यम से लोगों के सोचने और व्यवहार करने के तरीके को नियंत्रित करती है। यह अक्सर छिपी होती है और लोगों को बिना दबाव के नियंत्रित करती है।

संक्षेप में - सत्ता के अधरों की तालिका:

| क्रम | स्तर (अधर) | विशेषता

उदाहरण

1	व्यक्तिगत	व्यक्ति का दूसरों पर प्रभाव	नेता, शिक्षक
2	सामाजिक	जाति, लिंग, धर्म आधारित सत्ता	जातीय वर्चस्व
3	आर्थिक	धन-संपत्ति से मिलने वाली सत्ता	उद्योगपति, कॉर्पोरेट
4	राजनीतिक	सरकार व निर्णय लेने की शक्ति	सांसद, मंत्री

5 □ | वैधानिक | कानून व संस्थागत अधिकार | न्यायालय, आयोग

| 6 □ | सांस्कृतिक/वैचारिक | विचारों व मान्यताओं से सत्ता | मीडिया, धर्म

□ ****विशेष टिप्पणी:**** आधुनिक समाज में ये सभी स्तर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

****निष्कर्ष:**** सत्ता केवल राजनीतिक शक्ति तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह ****सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैधानिक**** अधरों में बटी होती है। जब हम सत्ता का समग्र परीक्षण करते हैं, तो हमें समझ आता है कि समाज में सत्ता किस तरह से विभिन्न रूपों में काम करती है, और कैसे यह सत्ता अक्सर असमानता, नियंत्रण और संघर्ष का कारण बनती है।

□ ****सत्ता की सीमाओं की व्याख्या****

****परिभाषा:**** सत्ता (Power) किसी व्यक्ति, संस्था या समूह की वह क्षमता है जिससे वह दूसरों के विचारों, निर्णयों और कार्यों को प्रभावित या नियंत्रित कर सके। लेकिन यह शक्ति असीम नहीं होती – इसे कई ****सीमाओं (limitations)**** से बाँधा जाता है, ताकि उसका ****दुरुपयोग**** न हो और ****लोकतांत्रिक मूल्यों**** की रक्षा हो सके।

****सत्ता की सीमाओं की आवश्यकता क्यों है?***** सत्ता अगर ****बिना नियंत्रण**** के हो तो वह ****तानाशाही**** बन सकती है। ****लोकतंत्र, स्वतंत्रता, न्याय और मानव अधिकारों**** की रक्षा के लिए सत्ता पर सीमाएं आवश्यक हैं।

****सत्ता की प्रमुख सीमाएँ (Major Limits on Power):****

1. □ ****कानूनी सीमाएँ (Legal Limits)**** हर सत्ता संविधान और कानून के अधीन होती है।

* उदाहरण: ► भारत में संसद कोई भी कानून बना सकती है, लेकिन वह ****संविधान के मूल ढाँचे**** के खिलाफ नहीं हो सकता। ► सरकारें अदालत के फैसलों से बंधी होती हैं।

2. □ ****संवैधानिक सीमाएँ (Constitutional Limits)**** संविधान ही सत्ता का स्रोत है और उसी में उसकी सीमाएं तय की गई हैं।

3. □ ****नैतिक सीमाएँ (Moral Limits)**** सत्ता का प्रयोग ****नैतिकता, न्याय और मानवता**** के सिद्धांतों के अनुसार होना चाहिए।

4. □ **लोकतांत्रिक सीमाएँ (Democratic Limits)** लोकतांत्रिक व्यवस्था में सत्ता **जनता की इच्छा** से सीमित होती है।

5. □ **जनता की जागरूकता और प्रतिरोध (Public Resistance & Awareness)** जब जनता सत्ता के दुरुपयोग को पहचानती है, तो वह **विरोध**, **आंदोलन**, और **मतदान** के माध्यम से उसे सीमित कर सकती है।

6. □ **अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ (International Limits)** एक देश की सत्ता पर **संयुक्त राष्ट्र**, **अंतरराष्ट्रीय कानूनों**, और **मानव अधिकार संधियों** के कारण सीमाएं होती हैं।

□ **निष्कर्ष:** सत्ता जितनी जरूरी है, उतनी ही खतरनाक भी हो सकती है यदि उस पर सीमाएं न हों।

इसलिए लोकतांत्रिक समाजों में सत्ता की **कानूनी**, **संवैधानिक**, **नैतिक** और **सामाजिक सीमाएं** तय की जाती हैं ताकि वह जनहित में नियंत्रित रहे और उसका दुरुपयोग न हो।

वैधता के स्रोत (Sources of Legitimacy) (**Legitimacy** का अर्थ है: शासन या सत्ता के उस रूप को जनता द्वारा **स्वीकार्यता** या **स्वीकृति** मिलना।)

□ **वैधता क्या है?** वैधता (Legitimacy) वह स्थिति है जब जनता किसी व्यक्ति, संस्था या सरकार के **सत्ता में बने रहने के अधिकार** को उचित, न्यायसंगत और स्वीकार्य मानती है। यह केवल शक्ति का प्रयोग नहीं, बल्कि उस शक्ति को **जनता द्वारा नैतिक, सामाजिक और कानूनी समर्थन** प्राप्त होना है।

वैधता के प्रमुख स्रोत (Major Sources of Legitimacy):

1. □ **पारंपरिक वैधता (Traditional Legitimacy)** यह उस **परंपरा, रीति-रिवाज** या ऐतिहासिक मान्यता पर आधारित होती है, जो लंबे समय से चली आ रही हो। जनता किसी शासन को इसलिए वैध मानती है क्योंकि वह "हमेशा से ऐसा ही होता आया है।"

* **उदाहरण:**

➤ राजशाही (मोनार्की) प्रणाली ➤ भारत में ग्राम पंचायतों की परंपरागत भूमिका

2. □ ****कानूनी-वैधानिक वैधता (Legal-Rational Legitimacy)****

* यह वैधता ****संविधान, कानून और नियमों**** पर आधारित होती है।

* जब सत्ता का प्रयोग संविधान और विधिक प्रक्रिया के अनुसार होता है, तो उसे वैध माना जाता है।

* ****उदाहरण:**** > भारत में चुनी हुई सरकार > अदालत द्वारा दिए गए आदेश

3. □ ****करिश्माई वैधता (Charismatic Legitimacy)**** जब किसी नेता में ****व्यक्तिगत आकर्षण, नेतृत्व क्षमता, और प्रेरणादायक गुण**** होते हैं, तो लोग उसकी सत्ता को वैध मानते हैं।* यह वैधता व्यक्ति-केंद्रित होती है और लंबे समय तक टिकाऊ नहीं होती।

* ****उदाहरण:**** > महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर-

4. □ ****जन-सहमति आधारित वैधता (Democratic/Popular Legitimacy)**** जब किसी सरकार या शासक को ****जनता के मत (चुनाव)**** के माध्यम से सत्ता मिलती है, तो उसे वैध माना जाता है।* यह आधुनिक लोकतंत्रों में सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।

* ****उदाहरण:**** > आम चुनावों में विजयी सरकार > जनमत संग्रह (Referendum) द्वारा नीति निर्धारण

5. □ ****प्रदर्शन आधारित वैधता (Performance-Based Legitimacy)**** जब कोई सरकार या संस्था ****जनता के हित में अच्छा प्रदर्शन**** करती है, तो लोग उसे वैध मानते हैं।* यह वैधता ****सुशासन****, ****विकास****, ****जनकल्याण****, और ****सुरक्षा**** जैसे मापदंडों पर आधारित होती है।* ****उदाहरण:**** > अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार देने वाली सरकार > कोविड-19 महामारी में प्रभावी कार्य करने वाली संस्थाएँ

6. □ ****वैचारिक/धार्मिक वैधता (Ideological/Religious Legitimacy)**** जब सत्ता किसी ****धर्म, विचारधारा या दर्शन**** पर आधारित होती है, और जनता उसे धार्मिक या वैचारिक रूप से स्वीकार करती है।

□ ****निष्कर्ष:****वैधता सत्ता को स्थायित्व और स्वीकार्यता प्रदान करती है।****

जब सत्ता जनता के विश्वास और सहमति पर टिकी होती है, तभी वह ****स्थायी, उत्तरदायी और न्यायसंगत शासन**** का आधार बनती है।

आज के समय में ****कानूनी****, ****लोकतांत्रिक****, और ****प्रदर्शन आधारित वैधता**** सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।

Chapter-9

सरकार के रूप : एकात्मक एवं संघात्मक, संरचना एवं कार्य

****एकात्मक सरकार (Unitary Government)** का अर्थ है – ऐसा शासन प्रणाली जिसमें संपूर्ण सत्ता एक ही केन्द्रीय सरकार में निहित होती है। इसमें राज्यों या प्रान्तों को स्वतंत्र सत्ता नहीं होती, बल्कि वे केन्द्रीय सरकार के अधीन होते हैं और केवल वही अधिकार रखते हैं जो केन्द्र उन्हें प्रदान करता है।**

****एकात्मक सरकार की परिभाषा:**> ****"एकात्मक सरकार वह शासन प्रणाली है जिसमें सभी संवैधानिक शक्तियाँ केन्द्र सरकार में निहित होती हैं और राज्य/प्रान्त केवल प्रशासनिक इकाइयाँ होती हैं।"****

यहाँ पर ****एकात्मक सरकार की प्रमुख परिभाषाएँ**** दी गई हैं जो विभिन्न विद्वानों और सामान्य राजनीतिक सिद्धांतों पर आधारित हैं:

□ ****एकात्मक सरकार की परिभाषाएँ:**** 1. ****गैटन महोदय (Gettell)** के अनुसार: > "एकात्मक सरकार वह है जिसमें शासन की समस्त शक्तियाँ एक केन्द्रिय प्राधिकारी में निहित होती हैं।"**

2. ****ए. वी. डाइसि (A. V. Dicey)** के अनुसार: > "एकात्मक राज्य वह होता है जिसमें सम्प्रभुता अविभाजित होती है और एक ही केन्द्र सरकार में निहित होती है।"**

3. ****गार्नर (Garner)** के अनुसार: > "एकात्मक सरकार में राज्य की सभी शक्तियाँ एक ही केन्द्रीय प्राधिकारी के हाथों में निहित होती हैं, जो अपनी इच्छा से कुछ शक्तियाँ स्थानीय इकाइयों को सौंप सकती है।"**

4. ****जे. डब्ल्यू. ग्रीन (J.W. Green)** के अनुसार: > "एकात्मक सरकार वह प्रणाली है जहाँ केन्द्रीय सरकार सर्वोच्च प्राधिकारी होती है और कोई भी प्रशासनिक इकाई केवल वही शक्तियाँ प्रयोग करती है जो उसे केन्द्र द्वारा सौंपी जाती हैं।"******एकात्मक सरकार की विशेषताएँ** (Features of Unitary Government) को समझना उसके ढांचे और कार्यप्रणाली**

को समझने के लिए बहुत आवश्यक है। यह शासन प्रणाली "एक राष्ट्र, एक सरकार, एक कानून" की भावना पर आधारित होती है।

****एकात्मक सरकार की मुख्य विशेषताएँ:****

1. □ ****केन्द्रीय सत्ता की एकता (Centralization of Power):**** सभी शासकीय शक्तियाँ केन्द्र सरकार में निहित होती हैं। राज्य या स्थानीय सरकारें केवल केन्द्र के द्वारा सौंपे गए अधिकारों का ही प्रयोग करती हैं।

2. □ ****एक समान कानून प्रणाली (Uniform Legal System):**** देश भर में एक समान कानून और न्याय प्रणाली लागू होती है। सभी नागरिकों के लिए एक जैसे अधिकार और कर्तव्य होते हैं।

3. □ ****राज्य/प्रांत केवल प्रशासनिक इकाइयाँ होते हैं:**** राज्य या प्रान्त स्वतंत्र नहीं होते, वे केवल प्रशासन के लिए बनाए गए क्षेत्रीय विभाग होते हैं और उनकी शक्तियाँ केन्द्र सरकार से निर्धारित होती हैं।

4. □ ****एक ही संविधान (Single Constitution):**** आमतौर पर एकात्मक सरकार वाले देशों में एक ही संविधान होता है, जो पूरे देश में लागू होता है। (हालांकि कुछ देशों में स्थानीय कानून हो सकते हैं, लेकिन वे केन्द्र के अधीन रहते हैं।)

5. □ ****शक्तियों का प्रत्यायोजन (Delegation of Powers):**** यदि राज्य या स्थानीय निकायों को कोई अधिकार दिया जाता है, तो वह स्थायी नहीं होता – केन्द्र जब चाहे, उसे वापस ले सकता है।

6. □ ****सरल शासन व्यवस्था (Simple and Flexible Government):**** एकात्मक सरकार की संरचना सरल होती है और इसमें निर्णय लेना और लागू करना अधिक आसान और शीघ्र होता है।

7. □ ****राष्ट्रीय एकता पर बल (Emphasis on National Unity):**** इस प्रणाली में सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में बाँधने की कोशिश होती है। इससे क्षेत्रीय अलगाववाद की संभावना कम होती है।

8. □ **वित्तीय नियंत्रण केन्द्र के पास (Central Financial Control):** राजकोषीय नीति और वित्तीय संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण केन्द्र सरकार का होता है। राज्य अपने स्तर पर स्वतंत्र रूप से कर नहीं लगा सकते।

9. □ **एक ही स्तर की संप्रभुता (Undivided Sovereignty):** संप्रभुता पूरी तरह से केन्द्र में निहित होती है – न कि राज्यों या प्रान्तों में।

एकात्मक सरकार के गुण (Merits of Unitary Government) उस प्रणाली की सकारात्मक विशेषताएँ होती हैं जो इसे प्रभावशाली, सरल और सशक्त बनाती हैं। यह शासन प्रणाली मुख्यतः केन्द्रीय सत्ता की एकता पर आधारित होती है।

□ **एकात्मक सरकार के मुख्य गुण (Merits of Unitary Government):**

1. □ **सरल शासन प्रणाली (Simple Form of Government):** इस प्रणाली की संरचना सीधी और स्पष्ट होती है क्योंकि सत्ता एक ही केन्द्र में निहित होती है। इससे निर्णय लेना और लागू करना आसान हो जाता है।

2. □ **राष्ट्रीय एकता को बल (Strengthens National Unity):** जब पूरे देश में एक ही सरकार और एक जैसे कानून होते हैं, तो क्षेत्रीयता, जातीयता, या प्रांतीयता की भावना कम होती है। इससे देश की एकता और अखंडता मजबूत होती है।

3. □ **कम खर्चीली व्यवस्था (Economical Administration):** इस प्रणाली में दोहरी सरकारों की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए प्रशासन पर होने वाला खर्च कम हो जाता है।

4. □ **शीघ्र निर्णय एवं कार्यान्वयन (Quick Decision Making and Implementation):** सभी निर्णय केन्द्र में लिए जाते हैं, जिससे निर्णय प्रक्रिया में तेजी आती है और नीति क्रियान्वयन भी जल्दी होता है।

5. □ **प्रशासनिक एकरूपता (Administrative Uniformity):** देश भर में एक जैसी प्रशासनिक प्रणाली लागू होती है, जिससे भ्रम या टकराव की स्थिति नहीं होती।

6. □ **लचीलापन (Flexibility):** क्योंकि केन्द्र के पास सम्पूर्ण अधिकार होते हैं, इसलिए वह आवश्यकता अनुसार प्रशासनिक ढांचे में आसानी से बदलाव कर सकता है।

7. □ ****समान कानून व्यवस्था (Uniform Law System):**** देश भर में सभी नागरिकों के लिए समान कानून होते हैं, जिससे न्याय व्यवस्था में एकरूपता आती है।

8. □ ****जनता को उत्तरदायी सरकार (Responsible Government):**** एकात्मक प्रणाली में सरकार सीधी जनता के प्रति उत्तरदायी होती है, क्योंकि सत्ता केन्द्र में केंद्रित होती है और चुनाव भी वहीं से नियंत्रित होते हैं।

****एकात्मक सरकार के अवगुण**** (Demerits of Unitary Government) वे कमियाँ हैं जो इस शासन प्रणाली को कुछ स्थितियों में अनुपयुक्त या कम प्रभावी बनाती हैं, खासकर बड़े, विविध या बहुजातीय देशों के लिए।

****एकात्मक सरकार के मुख्य अवगुण (Demerits of Unitary Government):****

1. □ ****अत्यधिक केंद्रीकरण (Excessive Centralization):**** सभी शक्तियाँ केवल केन्द्र में होने के कारण प्रशासनिक बोझ बढ़ता है, जिससे निर्णय लेने में देरी और जटिलता आ सकती है।

2. □ ****स्थानीय समस्याओं की उपेक्षा (Neglect of Local Needs):**** केन्द्रीय सरकार हर क्षेत्र की विशेष आवश्यकताओं को अच्छी तरह नहीं समझ पाती, जिससे स्थानीय समस्याओं का समाधान प्रभावी ढंग से नहीं हो पाता।

3. □ ****लोकतांत्रिक भागीदारी में कमी (Less Local Participation):**** राज्य या प्रान्तों को अधिकार न होने से स्थानीय जनता की भागीदारी कम हो जाती है, जिससे लोगों का सरकार पर विश्वास घट सकता है।

4. □ ****अधिनायकवाद की संभावना (Possibility of Despotism):**** जब सारी शक्ति एक ही केन्द्र में हो, तो तानाशाही प्रवृत्ति या शक्ति का दुरुपयोग होने की आशंका बढ़ जाती है।

5. □ ****राज्यों की स्वायत्तता का अभाव (Lack of State Autonomy):**** राज्यों को कोई वास्तविक संवैधानिक शक्ति नहीं होती। वे केवल केन्द्र पर निर्भर रहते हैं, जिससे उनकी स्वायत्तता समाप्त हो जाती है।

****न्यायिक भार में वृद्धि (Increased Judicial Burden):**** सभी कानून एक जैसे होने से और कोई विकेंद्रीकरण न होने से न्यायिक संस्थाओं पर भार अधिक पड़ सकता है।

7. □ ****परिवर्तनशीलता की कमी (Lack of Flexibility for Diversity):**** जातीय, सांस्कृतिक या भाषाई विविधताओं वाले देशों में एकसमान नीतियाँ काम नहीं करतीं। यह विविध समाजों में असंतोष पैदा कर सकती है।

8. □ ****संवेदनशील क्षेत्रों में विद्रोह की आशंका (Risk of Regional Discontent):**** यदि किसी क्षेत्र की पहचान, भाषा या संस्कृति की अनदेखी की जाती है, तो वहाँ अलगाववाद या असंतोष बढ़ सकता है।

□ ****संघात्मक सरकार का अर्थ एवं परिभाषाएँ****

****□ अर्थ (Meaning):**** ****संघात्मक सरकार**** (Federal Government) एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें शासन की शक्तियाँ दो या दो से अधिक स्तरों में विभाजित होती हैं – जैसे कि ****केन्द्र सरकार**** और ****राज्य सरकारें****। इसमें प्रत्येक स्तर की सरकार को संविधान द्वारा कुछ निश्चित शक्तियाँ और अधिकार दिए गए होते हैं, और वे अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।

□ ****परिभाषाएँ (Definitions of Federal Government):****

1. ****ए. वी. डाइसि (A. V. Dicey):****

> "संघात्मक सरकार एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली है जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और राज्य के अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।"

2. ****के. सी. व्हीयर (K. C. Wheare):****

> ****अनुवाद:**** > "संघात्मक सरकार वह शासन व्यवस्था है जिसमें सम्प्रभुता को केन्द्र और क्षेत्रीय सरकारों के बीच इस प्रकार विभाजित किया जाता है कि दोनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र होती हैं।"

3. ****गार्नर (Garner):**** > "संघात्मक सरकार एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें शासकीय शक्तियाँ केन्द्र और संघीय इकाइयों के बीच विभाजित होती हैं।"

4. **ब्रायस (Bryce):** > "संघवाद एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें शासकीय शक्तियाँ राष्ट्रीय सरकार और राज्यों के बीच विभाजित होती हैं।"

□ **संघात्मक सरकार के कुछ उदाहरण (Examples of Federal Governments):**

* भारत □□

* अमेरिका □□

* कनाडा □□

* ऑस्ट्रेलिया □□

* जर्मनी □□

यहाँ पर **संघात्मक सरकार की विशेषताएँ (Features of Federal Government)** विस्तार से दी गई हैं:

संघात्मक सरकार की प्रमुख विशेषताएँ: 1. □ **शक्तियों का संविधानिक विभाजन (Constitutional Division of Powers):**

संघात्मक शासन प्रणाली में केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का स्पष्ट और लिखित रूप से विभाजन होता है। जैसे – भारत में संविधान की सातवीं अनुसूची में **केंद्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची** के माध्यम से यह विभाजन किया गया है।

2. □ **लिखित संविधान (Written Constitution):** संघात्मक शासन प्रणाली में एक **लिखित संविधान** होता है जो दोनों स्तरों की सरकारों की शक्तियों और अधिकारों को निर्धारित करता है। यह संविधान दोनों के लिए सर्वोच्च होता है।

3. □ **संविधान की सर्वोच्चता (Supremacy of the Constitution):** संविधान ही सर्वोच्च कानून होता है। कोई भी सरकार, चाहे वह केन्द्र की हो या राज्य की, संविधान के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकती।

4. □□ ****संविधान की कठोरता (Rigidity of Constitution):**** संविधान को बदलना कठिन होता है। आमतौर पर इसमें संशोधन करने के लिए केन्द्र और राज्यों दोनों की सहमति आवश्यक होती है।

5. □□ ****स्वतंत्र न्यायपालिका (Independent Judiciary):**** संघात्मक प्रणाली में एक ****स्वतंत्र न्यायपालिका**** होती है जो केन्द्र और राज्यों के बीच होने वाले विवादों को संविधान के अनुसार सुलझाती है।

भारत में – ****भारत का सर्वोच्च न्यायालय**** इस कार्य को करता है।

6. □ ****दोहरा शासन तंत्र (Dual Polity):**** इसमें दो स्तर की सरकारें होती हैं:

* ****केन्द्र सरकार**** (राष्ट्र स्तर पर)

* ****राज्य सरकारें**** (राज्य स्तर पर)

दोनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

7. □ ****दोहरी नागरिकता (कुछ देशों में) (Dual Citizenship - in some countries):**** कुछ संघात्मक देशों में नागरिकों को दोहरी नागरिकता प्राप्त होती है – जैसे अमेरिका में, व्यक्ति राज्य और संघ दोनों का नागरिक होता है। भारत में हालांकि, केवल ****एकल नागरिकता**** होती है।

8. □ ****वित्तीय विभाजन (Financial Distribution of Powers):**** राजस्व और कर संग्रहण के अधिकार भी संविधान में स्पष्ट रूप से विभाजित होते हैं। इससे दोनों स्तरों की सरकारें स्वतंत्र रूप से कार्य कर पाती हैं।

9. □ ****राज्यों की स्वायत्तता (Autonomy of States):**** राज्य सरकारों को अपने निर्धारित क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कानून बनाने और प्रशासन चलाने का अधिकार होता है।

यहाँ ****संघात्मक सरकार की विशेषताएँ**** (Features of Federal Government in Hindi) सरल और स्पष्ट रूप में दी गई हैं:

****संघात्मक सरकार की प्रमुख विशेषताएँ:**** 1. □ ****शक्तियों का विभाजन (Division of**

Powers):**संघात्मक शासन प्रणाली में शासन की शक्तियाँ **केंद्र सरकार** और **राज्य सरकारों** के बीच संविधान द्वारा विभाजित होती हैं।

2. □ **लिखित संविधान (Written Constitution)**:संघात्मक सरकार के पास एक **लिखित संविधान** होता है, जिसमें केंद्र और राज्यों के अधिकार व सीमाएँ स्पष्ट रूप से निर्धारित होती

3. □ **संविधान की सर्वोच्चता (Supremacy of Constitution)**:संविधान सर्वोच्च होता है, और सभी सरकारी इकाइयाँ (केंद्र और राज्य) उसी के अनुसार कार्य करती हैं। कोई भी कानून संविधान के विरुद्ध नहीं बनाया जा सकता।

4. □ **संविधान की कठोरता (Rigidity of Constitution)**:संविधान को संशोधित करना आसान नहीं होता। इसमें केंद्र और राज्यों – दोनों की सहमति आवश्यक होती है। इससे संघात्मक ढाँचे की स्थिरता बनी रहती है।

5. □ **स्वतंत्र न्यायपालिका (Independent Judiciary)**:संघात्मक प्रणाली में न्यायपालिका स्वतंत्र होती है, जो केंद्र और राज्यों के बीच विवादों का समाधान निष्पक्ष रूप से करती है।

6. □ **दोहरा शासन तंत्र (Dual Polity)**:इस व्यवस्था में दो स्तरों की सरकारें होती हैं:

* केंद्र सरकार (राष्ट्रीय स्तर पर)

* राज्य सरकारें (राज्य स्तर पर)

दोनों अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र होती हैं।

7. □ **राज्यों की स्वायत्तता (Autonomy of States)**:राज्य सरकारें अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कानून बना सकती हैं और प्रशासन चला सकती हैं। केंद्र सरकार इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती (जब तक संविधान अनुमति न दे)।

8. □ **वित्तीय स्वायत्तता (Financial Autonomy)**:राज्यों और केंद्र के बीच राजस्व और कर लगाने के अधिकारों का भी स्पष्ट बंटवारा होता है।

9. □ **द्वैध नागरिकता (कुछ देशों में) (Dual Citizenship - in some countries):** कुछ संघात्मक देशों जैसे **अमेरिका** में नागरिकों को दोहरी नागरिकता प्राप्त होती है – एक राज्य की और एक केंद्र की। भारत में केवल **एकल नागरिकता** है।

यहाँ पर **संघात्मक सरकार के गुण** (Merits of Federal Government in Hindi) सरल भाषा में बताए गए हैं:

संघात्मक सरकार के मुख्य गुण (Merits of Federal Government):

1. □ **शक्तियों का संतुलित वितरण (Balanced Distribution of Powers):**

संघात्मक प्रणाली में शक्तियाँ केंद्र और राज्यों के बीच विभाजित होती हैं, जिससे सत्ता का केंद्रीकरण नहीं होता और **तानाशाही की संभावना कम** हो जाती है।

2. □ **स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति (Satisfaction of Local Needs):**

राज्य सरकारें अपने क्षेत्र की जरूरतों को बेहतर समझती हैं और स्थानीय स्तर पर योजनाएँ और नीतियाँ बनाकर लोगों को बेहतर सेवाएँ प्रदान कर सकती हैं।

3. □ **राज्य स्वायत्तता (Autonomy of States):** हर राज्य को संविधान के अनुसार स्वायत्तता प्राप्त होती है। वे अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कानून बना सकते हैं और प्रशासन चला सकते हैं।

4. □ **विविधता में एकता (Unity in Diversity):** संघात्मक शासन प्रणाली **विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं** वाले देशों के लिए उपयुक्त होती है। इससे क्षेत्रीय पहचान को सम्मान मिलता है।

5. □ **प्रशासनिक कुशलता (Administrative Efficiency):** राज्य सरकारें अपने-अपने क्षेत्र का प्रशासन स्वयं देखती हैं, जिससे प्रशासन अधिक तेज, प्रभावी और जिम्मेदार बनता है।

6. □ **राजनीतिक प्रशिक्षण (Political Training):** राज्य सरकारों के माध्यम से नागरिकों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने और शासन का अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

7. □□ ****संवैधानिक सुरक्षा (Constitutional Safeguards):****संघात्मक प्रणाली में संविधान सर्वोच्च होता है और उसमें केंद्र तथा राज्यों दोनों के अधिकार सुरक्षित होते हैं।

कोई सरकार दूसरे के अधिकार में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

8. □ ****बड़े देशों के लिए उपयुक्त (Ideal for Large Countries):****विशाल क्षेत्रफल और जनसंख्या वाले देशों जैसे भारत, अमेरिका, ब्राजील आदि के लिए संघात्मक शासन प्रणाली अधिक उपयुक्त होती है।

9. □ ****नवाचार और प्रयोग की स्वतंत्रता (Scope for Innovation):****राज्य सरकारें अपने-अपने क्षेत्र में नए प्रयोग और योजनाएं लागू कर सकती हैं, जिससे सफल योजनाओं को अन्य राज्यों में भी अपनाया जा सकता है।

यहाँ पर ****संघात्मक सरकार के अवगुण**** (Demerits of Federal Government in Hindi) दिए गए हैं जो इस शासन प्रणाली की कुछ कमियों को दर्शाते हैं:

****संघात्मक सरकार के मुख्य अवगुण (Demerits of Federal Government):****

1. □ ****प्रशासन में जटिलता (Complexity in Administration):****शक्तियों के विभाजन के कारण केंद्र और राज्यों के बीच कार्यों और जिम्मेदारियों का तालमेल बनाए रखना मुश्किल होता है। इससे निर्णय प्रक्रिया धीमी हो सकती है।

2. □ ****व्यय अधिक होना (Higher Expenses):****दो स्तर की सरकारें होने के कारण प्रशासनिक खर्च बढ़ जाता है, क्योंकि प्रत्येक स्तर के लिए अलग-अलग सरकारी मशीनरी, कर्मचारी और संसाधन चाहिए होते हैं।

3. □ ****केन्द्र और राज्यों के बीच संघर्ष (Conflict Between Centre and States):****शक्तियों के विभाजन की वजह से केन्द्र और राज्यों के बीच अक्सर मतभेद और संघर्ष होते रहते हैं, जो शासन को प्रभावित कर सकते हैं।

4. □ ****देश में असमानता (Inequality Among States):****कुछ राज्य विकासशील हो सकते हैं और कुछ पिछड़े रह सकते हैं, जिससे आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक असमानता बढ़ती है।

5. □ ****नीति निर्धारण में विलंब (Delay in Policy Making):**** कई बार केन्द्र और राज्यों के बीच सहमति न होने की वजह से योजनाओं और नीतियों को लागू करने में देरी हो जाती है।

6. □ ****विभाजन की संभावनाएँ (Risk of Secession or Division):**** अगर किसी राज्य को पर्याप्त स्वायत्तता नहीं दी जाती या उसकी मांगें पूरी नहीं होतीं, तो वह अलगाववादी प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है।

7. □ ****संवैधानिक संशोधन में कठिनाई (Difficulty in Constitutional Amendments):**** संघीय संविधान को संशोधित करना कठिन होता है क्योंकि इसमें केन्द्र और अधिकांश राज्यों की सहमति जरूरी होती है।

8. □ ****नीति में असंगति (Inconsistency in Policies):**** राज्यों के अलग-अलग कानून और नीतियाँ होने से देश भर में असमानता और भ्रम की स्थिति बन सकती है।

9. □ ****राज्य सरकारों में भ्रष्टाचार (Corruption in State Governments):****

स्वायत्तता के कारण कुछ राज्यों में भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अक्षमता बढ़ सकती है।

Chapter-10

सरकार के रूप: संसदीय एवं अध्यक्षतात्मक, संरचना एवं कार्य

□ संसदीय सरकार का अर्थ एवं परिभाषाएँ

****संसदीय सरकार का अर्थ (Meaning):****संसदीय सरकार** (Parliamentary Government) एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है। इसमें कार्यपालिका (सरकार) और विधायिका (संसद) के बीच गहरा सम्बन्ध होता है।**

सरकार संसद में बहुमत रखने वाली पार्टी या दल द्वारा बनती है और प्रधानमंत्री उसका प्रमुख होता है।

□ ****संसदीय सरकार की परिभाषाएँ (Definitions):****

1. ****एल. बी. मॉर्फी (L.B. Murphy):**> "संसदीय सरकार वह है जिसमें कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है।"**

2. ****ए. पीयू. गेलेउ (A. P. U. Galloway):**> "संसदीय सरकार वह शासन प्रणाली है जिसमें कार्यपालिका, विधायिका से चुनी जाती है और उसी के प्रति उत्तरदायी होती है।"**

3. ****विलियम स्टैनलेन (William Stanley):**> "संसदीय प्रणाली में कार्यपालिका विधायिका के समर्थन पर निर्भर होती है और उसके प्रति जवाबदेह होती है।"**

4. ****रसेल (Russell):**> "संसदीय सरकार में कार्यपालिका विधायिका से चुनी जाती है और उसके प्रति उत्तरदायी होती है; दोनों शाखाएँ परस्पर निर्भर होती हैं।"**

□ ****संसदीय सरकार के उदाहरण:****

*** भारत* यूनाइटेड किंगडम (यूके)* कनाडा* ऑस्ट्रेलिया* जापान**

यहाँ पर ****संसदीय शासन प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ** (Features of Parliamentary System)** सरल और स्पष्ट रूप में दी गई हैं:

****संसदीय शासन प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ:**** 1. □□ ****कार्यपालिका और विधायिका का घनिष्ठ संबंध (Close Relationship between Executive and Legislature):****

कार्यपालिका (कैबिनेट या मंत्रिमंडल) विधायिका (संसद) की सदस्य होती है और उसके प्रति उत्तरदायी होती है। दोनों के बीच गहरा सम्बन्ध होता है।

2. □ ****प्रधानमंत्री और कैबिनेट का नेतृत्व (Prime Minister and Cabinet Leadership):****

प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है और कैबिनेट में मंत्रिगण उसके सहयोगी होते हैं। प्रधानमंत्री संसद में बहुमत वाली पार्टी या गठबंधन का नेता होता है।

3. □ ****संसद के प्रति जवाबदेही (Responsibility to the Legislature):**** सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है। यदि सरकार को संसद का विश्वास प्राप्त नहीं होता, तो उसे इस्तीफा देना पड़ता है।

4. □ ****संसद का नियंत्रण (Parliamentary Control):**** संसद कार्यपालिका के कामकाज की निगरानी करती है और उसे जवाबदेह ठहराती है। इसे ****विश्वास प्रस्ताव**** और ****अविश्वास प्रस्ताव**** के माध्यम से किया जाता है।

5. □ ****दो स्तर की कार्यपालिका (Two-tier Executive):****

संसदीय प्रणाली में कार्यपालिका के दो भाग होते हैं –

****saceremonial head (राष्ट्रपति/राजा/रानी)**** जो प्रतीकात्मक होता है।

****कार्यकारी प्रधान (प्रधानमंत्री)**** जो वास्तविक सत्ता रखता है।

6. □ ****असीमित कार्यकाल नहीं (No Fixed Term for Government):**** सरकार का कार्यकाल संसद के विश्वास पर निर्भर करता है। अगर विश्वास खो गया तो सरकार गिर सकती है, भले ही चुनाव का समय न आया हो।

7. □□ ****विभाजित कार्यपालिका (Collective Responsibility):**** कैबिनेट के सभी सदस्य संसद के प्रति संयुक्त रूप से जिम्मेदार होते हैं। यदि सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है, तो सभी मंत्री भी जवाबदेह होते हैं।

8. □ ****बहुमत आधारित सरकार (Majority Government):****सरकार संसद में बहुमत वाली पार्टी या गठबंधन के नेतृत्व में बनती है, जिससे राजनीतिक स्थिरता आती है।

9. □ ****कार्यपालिका का विधायिका में समावेश (Executive is part of Legislature):**** कार्यपालिका के सदस्य आमतौर पर विधायिका के सदस्य भी होते हैं।

10. □ ****न्यायपालिका से स्वतंत्रता (Separation from Judiciary):****संसदीय शासन में कार्यपालिका और विधायिका एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, लेकिन न्यायपालिका स्वतंत्र होती है।

बिल्कुल! यहाँ ****संसदीय शासन प्रणाली के गुण और अवगुण**** (Merits and Demerits of Parliamentary System) सरल भाषा में दिए गए हैं:

****संसदीय शासन प्रणाली के गुण (Merits):****

1. ****सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है:**** इससे लोकतंत्र मजबूत होता है क्योंकि सरकार को जनता के प्रतिनिधियों के भरोसे पर बने रहना होता है।

2. ****राजनीतिक स्थिरता:****बहुमत वाली पार्टी या गठबंधन सरकार बनाती है, जिससे सरकार को प्रभावी रूप से काम करने का मौका मिलता है।

3. ****सरल और शीघ्र निर्णय प्रक्रिया:****क्योंकि कार्यपालिका विधायिका का हिस्सा होती है, इसलिए निर्णय जल्दी और प्रभावी रूप से लिए जा सकते हैं।

4. ****सरकार गिराने का स्पष्ट तरीका:**** यदि सरकार संसद का विश्वास खो दे, तो उसे इस्तीफा देना पड़ता है या नए चुनाव कराए जाते हैं, जो जवाबदेही को सुनिश्चित करता है।

5. ****मंत्रिमंडल की सामूहिक जिम्मेदारी:**** सभी मंत्री एक साथ संसद के प्रति जवाबदेह होते हैं, जिससे जिम्मेदारी साझा होती है।

6. ****राजनीतिक नेतृत्व में लचीलापन:****प्रधानमंत्री को बदला जा सकता है बिना पूरे देश में चुनाव कराए, जिससे नेतृत्व में बदलाव आसान होता है। 7. ****लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा:****संसद में विभिन्न दल और विचारधाराएँ शामिल होती हैं, जिससे जनता की विविध आवाजें सुनवाई जाती हैं। □ ****संसदीय शासन प्रणाली के अवगुण (Demerits):****

1. ****सरकार का अस्थिर होना:**** बहुमत न होने पर गठबंधन सरकारें बनती हैं जो कमजोर और अस्थिर हो सकती हैं।
2. ****राजनीतिक संघर्ष और दल-बदल:**** राजनीतिक दलों के बीच सत्ता पाने के लिए संघर्ष और मंत्री बदलने की प्रवृत्ति से शासन प्रभावित हो सकता है।
3. ****अल्पमत की उपेक्षा:**** बहुमत वाली पार्टी या गठबंधन अल्पमत की आवाज़ों को नजरअंदाज कर सकता है।
4. ****व्यवस्था में जटिलता:**** संसद और सरकार के बीच सत्ता के घनिष्ठ संबंध से कभी-कभी निर्णय लेने में विवाद और जटिलता आ सकती है।
5. ****प्रधानमंत्री पर अत्यधिक निर्भरता:**** प्रधानमंत्री के नेतृत्व में ही सरकार चलती है, यदि प्रधानमंत्री कमजोर हो तो सरकार पर असर पड़ता है।
6. ****अति-पार्टीवाद (Excessive Partisanship):**** विभिन्न दलों के बीच राजनीतिक विरोधाभास से संसद का कामकाज बाधित हो सकता है।
7. ****स्थानीय हितों का अधिमूल्यन:**** राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में स्थानीय या क्षेत्रीय मुद्दे पीछे छूट सकते हैं।

अध्यक्षतामक प्रणाली का अर्थ एवं परिभाषाएँ

****अध्यक्षतामक प्रणाली का अर्थ (Meaning):**** ****अध्यक्षतामक प्रणाली**** (Presidential System) एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें कार्यपालिका (प्रशासन) और विधायिका (संसद) दोनों अलग-अलग और स्वतंत्र होती हैं। इस प्रणाली में राष्ट्रपति देश का प्रमुख होता है और वह सीधे जनता द्वारा निर्वाचित होता है। राष्ट्रपति सरकार का प्रमुख होता है और वह अपने मंत्रिमंडल के साथ मिलकर शासन चलाता है, लेकिन वह विधायिका के प्रति सीधे जवाबदेह नहीं होता।

□ ****अध्यक्षतामक प्रणाली की परिभाषाएँ (Definitions):**** 1. ****जेम्स मैडिसन (James Madison):****

> "अध्यक्षतामक प्रणाली वह है जिसमें कार्यपालिका और विधायिका अलग-अलग और स्वतंत्र होती हैं।"

2. ****ए. लिंडसे (A. Lindsay):**** > "अध्यक्षतामक शासन में कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी नहीं होती और इसे विधायिका द्वारा हटाया नहीं जा सकता।"

3. ****ए. पॉल वाटसन (A. Poll Watson):****

> "अध्यक्षतामक सरकार में कार्यपालिका और विधायिका के बीच सत्ता का पृथक्करण प्रमुख विशेषता होती है।"

4. ****रिकर्ड्सन (Richardson):**** > "अध्यक्षतामक प्रणाली वह शासन प्रणाली है जिसमें कार्यपालिका को विधायिका से स्वतंत्र रूप से चुना जाता है।"

□ ****अध्यक्षतामक प्रणाली के उदाहरण:****

* संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)

* ब्राज़ील

* फ्रांस (कुछ हद तक)

* फिलीपींस

यहाँ पर ****अध्यक्षतामक प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ**** (Main Features of Presidential System) सरल और स्पष्ट रूप में दी गई हैं:

****अध्यक्षतामक प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ:**** 1. □ ****शक्तियों का पृथक्करण (Separation of Powers):**** कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के अधिकार स्पष्टरूपसे विभाजित

होते हैं और वे एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं।

2. □ ****राष्ट्रपति का**

निर्वाचित प्रमुख होना (Directly Elected President):**

राष्ट्रपति को आम जनता द्वारा सीधे निर्वाचित किया जाता है और वह सरकार का प्रमुख होता है।

3. □ ****कार्यपालिका और विधायिका की स्वतंत्रता (Independence of Executive and Legislature):****कार्यपालिका और विधायिका एक-दूसरे से स्वतंत्र होती हैं। राष्ट्रपति संसद के प्रति जवाबदेह नहीं होता।

4. □ ****निश्चित कार्यकाल (Fixed Tenure):****राष्ट्रपति और संसद का कार्यकाल निश्चित होता है, और उन्हें बीच में हटाना कठिन होता है।

5. □ ****मंत्रिमंडल का राष्ट्रपति के प्रति जवाबदेह होना (Cabinet Responsible to the President):****मंत्रिमंडल राष्ट्रपति को जवाबदेह होता है, न कि संसद को।

6. □ ****न्यायपालिका की स्वतंत्रता (Independent Judiciary):****न्यायपालिका स्वतंत्र होती है और संविधान की रक्षा करती है। 7. □ ****राष्ट्रपति दोहरी भूमिका निभाता है (Dual Role of President):****राष्ट्रपति एक साथ राज्य प्रमुख और सरकार का प्रमुख होता है।

8. □ ****विधायिका संसद को बिना राष्ट्रपति की मंजूरी के कानून लागू नहीं कर सकती (No Legislative Power Without President's Approval):****कई मामलों में कानून को लागू करने के लिए राष्ट्रपति की स्वीकृति आवश्यक होती है।

9. □ ****विधानिक संकट का जोखिम कम (Reduced Risk of Constitutional Crisis):****कार्यपालिका और विधायिका के बीच स्पष्ट सीमाओं के कारण सत्ता संघर्ष कम होता है।

10. □ ****राष्ट्रपति का व्यापक कार्य क्षेत्र (Wide Powers of the President):****राष्ट्रपति के पास महत्वपूर्ण कार्यकारी शक्तियाँ होती हैं, जैसे सेना का सर्वोच्च कमांडर होना।

बिल्कुल! यहाँ ****अध्यक्षतामक प्रणाली के गुण और अवगुण**** (Merits and Demerits of Presidential System) सरल भाषा में दिए गए हैं:

□ ****अध्यक्षतामक प्रणाली के गुण (Merits):****

1. ****शक्तियों का स्पष्ट पृथक्करण (Clear Separation of Powers):**** कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका अलग-अलग और स्वतंत्र होती हैं, जिससे सत्ता का दुरुपयोग कम होता है।
2. ****राष्ट्रपति का स्थिर नेतृत्व (Stable Leadership):**** राष्ट्रपति का कार्यकाल निश्चित होता है, इसलिए सरकार स्थिर रहती है और अचानक गिरने का खतरा कम होता है।
3. ****निर्णय लेने में तीव्रता (Efficient Decision Making):**** कार्यपालिका स्वतंत्र होती है, इसलिए निर्णय शीघ्र और प्रभावी रूप से लिए जा सकते हैं।
4. ****लोकतांत्रिक जवाबदेही (Direct Democratic Accountability):**** राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जाता है, जिससे वह जनता के प्रति अधिक जवाबदेह होता है।
5. ****राजनीतिक स्थिरता (Political Stability):**** राष्ट्रपति और विधायिका के अलग होने के कारण राजनीतिक अस्थिरता कम होती है।
6. ****न्यायपालिका की स्वतंत्रता (Independent Judiciary):**** न्यायपालिका स्वतंत्र रहती है और संविधान की रक्षा करती है।
7. ****अधिकारों का संतुलन (Balance of Power):**** विभिन्न शाखाओं के बीच संतुलन बना रहता है, जो तानाशाही को रोकता है।

□ ****अध्यक्षतामक प्रणाली के अवगुण (Demerits):**** 1. ****शक्तियों के बीच संघर्ष (Conflict Between Branches):**** कार्यपालिका और विधायिका के अलग होने के कारण कभी-कभी उनके बीच टकराव और गतिरोध की स्थिति पैदा हो सकती है।

2. ****अल्पमत की उपेक्षा (Neglect of Minority):**** राष्ट्रपति के पास व्यापक अधिकार होने से अल्पमत की आवाज़ दब सकती है।

3. ****अधिकृत सत्ता का दुरुपयोग (Possibility of Authoritarianism):**** राष्ट्रपति के पास व्यापक शक्तियाँ होने की वजह से सत्ता का दुरुपयोग हो सकता है।
4. ****सरकार गिराने का कठिन तरीका (Difficulty in Removing the Executive):*** राष्ट्रपति को बीच में हटाना मुश्किल होता है, इसलिए यदि वह खराब शासन करे तो सुधार में बाधा आ सकती है।
5. ****बहुमत की आवश्यकता (Need for Majority Support):**** राष्ट्रपति को सफल शासन के लिए संसद का समर्थन जरूरी होता है, और अगर समर्थन न मिले तो गतिरोध हो सकता है।
6. ****राजनीतिक गतिरोध (Political Deadlock):**** जब राष्ट्रपति और संसद अलग-अलग दलों के नियंत्रण में होते हैं, तो नीति निर्धारण में बाधा आ सकती है।

यहाँ अध्यक्षतामक प्रणाली के मुख्य दोष (Defects of Presidential System) दिए गए हैं, जिन्हें समझना जरूरी है:

****अध्यक्षतामक प्रणाली के दोष (Defects of Presidential System):****

1. □ ****शक्तियों के बीच संघर्ष (Conflict Between Branches):**** कार्यपालिका और विधायिका पूरी तरह स्वतंत्र होने के कारण कभी-कभी उनके बीच टकराव और गतिरोध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे शासन अस्थिर हो सकता है।
2. □ ****राजनीतिक गतिरोध (Political Deadlock):**** अगर राष्ट्रपति और संसद अलग-अलग राजनीतिक दलों से संबंधित हों, तो वे अक्सर सहमति पर नहीं पहुंच पाते, जिससे निर्णय लेने में रुकावट आती है।
3. □ ****राष्ट्रपति की सत्ता का केंद्रीकरण (Concentration of Power in President):**** राष्ट्रपति के पास व्यापक कार्यकारी अधिकार होते हैं, जिससे सत्ता का दुरुपयोग और तानाशाही का खतरा बढ़ सकता है।
4. □ ****कार्यपालिका को हटाना कठिन (Difficulty in Removing Executive):**** राष्ट्रपति को बीच में हटाना बहुत मुश्किल होता है, भले ही वह शासन में विफल हो या जनता का समर्थन खो चुका हो।

5. □ ****अल्पमत की उपेक्षा (Neglect of Minority):**** राष्ट्रपति के व्यापक अधिकारों के कारण अल्पसंख्यकों की आवाज दब सकती है और उनकी समस्याएँ अनसुनी रह सकती हैं।

6. □ ****नियमित चुनावों की महत्ता (Overemphasis on Regular Elections):**** राष्ट्रपति के हटाने के लिए चुनाव का इंतजार करना पड़ता है, जिससे शासन में सुधार की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

7. □ ****संवैधानिक विवाद की संभावना (Possibility of Constitutional Crisis):**** शक्तियों के स्पष्ट पृथक्करण के कारण सत्ता के दावों को लेकर संवैधानिक संकट उत्पन्न हो सकता है।

8. □ ****प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति (Absence of a Prime Minister):**** अधिकांश अध्यक्षतामक प्रणालियों में प्रधानमंत्री नहीं होता, जिससे शासन में एकल व्यक्तित्व पर अधिक निर्भरता बढ़ जाती है। Systems) सरल और स्पष्ट तालिका के रूप में दिया गया है:

| ****विशेषता**** | ****अध्यक्षतामक प्रणाली****

| ****संसदीय प्रणाली****

| ****कार्यपालिका का गठन**** | राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जाता है।

| प्रधानमंत्री संसद के सदस्यों में से चुना जाता है।

| ****शक्तियों का संबंध**** | कार्यपालिका और विधायिका स्वतंत्र होती हैं।

| कार्यपालिका विधायिका की सदस्य होती है और उससे उत्तरदायी होती है।

| ****प्रधानमंत्री का अस्तित्व**** | आमतौर पर प्रधानमंत्री नहीं होता।

| प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है।

| ****सरकार का स्थायित्व**** | राष्ट्रपति का कार्यकाल निश्चित होता है।

| सरकार संसद के विश्वास पर निर्भर होती है, अस्थिर भी हो सकती है।

| ****कार्यपालिका की जवाबदेही**** | राष्ट्रपति सीधे जनता को जवाबदेह होता है, संसद को

नहीं। | सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी होती है।

| ****मंत्रिमंडल की जिम्मेदारी**** | मंत्रिमंडल राष्ट्रपति को उत्तरदायी होता है। |
मंत्रिमंडल संसद को उत्तरदायी होता है।

| ****शक्तियों का पृथक्करण**** | शक्तियाँ स्पष्ट रूप से पृथक होती हैं।
| शक्तियों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

| ****सरकार गिराने की प्रक्रिया**** | राष्ट्रपति को हटाना कठिन होता है।
| संसद के अविश्वास प्रस्ताव के माध्यम से सरकार गिर सकती है।

| ****राजनीतिक गतिरोध की संभावना**** | अधिक होती है, खासकर जब राष्ट्रपति और संसद
अलग दलों के हों। | कम होती है, क्योंकि कार्यपालिका संसद का हिस्सा होती है।

| ****निर्णय लेने की गति**** | निर्णय लेने में धीमी गति हो सकती है।
| निर्णय लेने में तेज़ी होती है।

| ****नागरिकों की भागीदारी**** | राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जाता है।
| जनता के प्रतिनिधि संसद में होते हैं, जिससे अप्रत्यक्ष भागीदारी।

| ****न्यायपालिका की स्वतंत्रता**** | स्वतंत्र और शक्तिशाली होती है।
| स्वतंत्र होती है लेकिन कार्यपालिका के संपर्क में होती है।

| ****उदाहरण**** | अमेरिका, ब्राजील, फिलीपींस
| भारत, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा

बिल्कुल! यहाँ ****अध्यक्षतामक प्रणाली और संसदीय प्रणाली में मुख्य अंतर**** (Differences between Presidential and Parliamentary Systems) सरल और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत हैं:

| ****क्र.सं.**** | ****विषय**** | ****अध्यक्षतामक प्रणाली****
| ****संसदीय प्रणाली****

1 | ****कार्यपालिका का गठन**** | राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जाता है।
| प्रधानमंत्री संसद के सदस्यों में से चुना जाता है।

| 2 | ****शक्तियों का संबंध**** | कार्यपालिका और विधायिका स्वतंत्र होती हैं।
कार्यपालिका विधायिका की सदस्य होती है और उससे जवाबदेह होती है। |

3 ****सरकार का स्थायित्व**** | राष्ट्रपति का कार्यकाल निश्चित होता है।
सरकार संसद के विश्वास पर निर्भर होती है।

4****प्रधानमंत्री का होना**** | आमतौर पर प्रधानमंत्री नहीं होता।
प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है।

5 ****कार्यपालिका की जवाबदेही**** | राष्ट्रपति संसद के प्रति जवाबदेह नहीं होता।
सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है।

6 ****मंत्रिमंडल की जिम्मेदारी**** | मंत्रिमंडल राष्ट्रपति को जवाबदेह होता है।
मंत्रिमंडल संसद को जवाबदेह होता है।

7 ****सरकार गिराने का तरीका**** राष्ट्रपति को बीच में हटाना कठिन होता है।
संसद के अविश्वास प्रस्ताव से सरकार गिर सकती है।

8 ****निर्णय लेने की गति**** निर्णय लेने में धीमी हो सकती है।
निर्णय लेने में तीव्रता होती है।

9 ***राजनीतिक गतिरोध*** | अधिक हो सकता है, विशेषकर जब राष्ट्रपति और संसद अलग
दलों से हों। | कम होता है, क्योंकि कार्यपालिका संसद का हिस्सा होती है।

10 ****नागरिकों की भागीदारी**** राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जाता है।
जनता के प्रतिनिधि संसद में होते हैं।

Chapter-11

सरकार के अंग: कार्यपालिका

कार्यपालिका (Executive) एक शासन की वह शाखा है जो सरकार के नियमों, नीतियों और कानूनों को लागू करती है और प्रशासनिक कार्यों का संचालन करती है। यह विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों को व्यावहारिक रूप से लागू करने का कार्य करती है।

कार्यपालिका का अर्थ **कार्यपालिका वह अंग है जो राज्य के प्रशासनिक कार्यों को निष्पादित करती है और विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों को लागू करती है।** सरल शब्दों में, कार्यपालिका शासन का वह हिस्सा है जो **सरकार चलाती है**, निर्णय लेती है, योजनाएँ बनाती है और उन्हें धरातल पर उतारती है।

कार्यपालिका की परिभाषा: 1. **डाइस (Dicey)** के अनुसार: **कार्यपालिका राज्य की वह शाखा है जो देश के सामान्य प्रशासन के लिए उत्तरदायी होती है और जो यह सुनिश्चित करती है कि कानूनों का पालन हो।**

गैरेटसन (Garner) के अनुसार: **कार्यपालिका उस सरकार को कहते हैं जो कानूनों को लागू करती है और सामान्य प्रशासन का संचालन करती है।**

3. **विल्सन (Woodrow Wilson)** के अनुसार: **कार्यपालिका शासन की वह शाखा है जो यह सुनिश्चित करती है कि प्रशासन सुचारु रूप से चले और लोगों को आवश्यक सेवाएँ मिलती रहें।**

कार्यपालिका के प्रकार: 1. **राजनीतिक कार्यपालिका (Political Executive)** - चुने हुए नेता जैसे प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री आदि।

2. **स्थायी कार्यपालिका (Permanent Executive)** - प्रशासनिक अधिकारी जैसे आईएएस, आईपीएस आदि, जो सरकार की योजनाओं को लागू करते हैं। कार्यपालिका के कार्य बहुत व्यापक और महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि यह शासन तंत्र का वह हिस्सा है जो **देश को चलाने का**

वास्तविक कार्य** करता है। इसके मुख्य कार्य नीचे दिए गए हैं:**कार्यपालिका के प्रमुख कार्य:**

1. **कानूनों का कार्यान्वयन (Implementation of Laws):** विधायिका द्वारा बनाए गए कानूनों को लागू करना कार्यपालिका का मूल कार्य है। यह सुनिश्चित करती है कि नागरिकों और संस्थानों द्वारा इन कानूनों का पालन किया जाए।

2. **नीति निर्माण और क्रियान्वयन (Policy Making and Execution):** योजना बनाना और नीतियाँ तय करना - जैसे शिक्षा नीति, स्वास्थ्य नीति, विदेश नीति आदि - और फिर उन्हें लागू करना।

3. **प्रशासनिक कार्य (Administrative Functions):** देश के सभी सरकारी विभागों और संस्थाओं का संचालन करना, जैसे-रेलवे, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, आदि।

4. **शासन और नियंत्रण (Governance and Control):** राज्य के सुचारु संचालन के लिए कानून-व्यवस्था बनाए रखना, भ्रष्टाचार रोकना, और सरकारी योजनाओं का निरीक्षण करना।

5. **वित्तीय कार्य (Financial Functions):** बजट तैयार करना, कर प्रणाली का संचालन करना, राजस्व एकत्र करना और संसाधनों का उचित वितरण करना।

6. **विदेश नीति का संचालन (Conduct of Foreign Affairs):** अन्य देशों से संबंध बनाना, समझौते करना, राजनयिक प्रतिनिधियों की नियुक्ति करना आदि कार्य।

7. **रक्षा और सुरक्षा (Defense and Security):** देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा सुनिश्चित करना। सेना, पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों का संचालन करना।

8. **न्यायपालिका का सहयोग (Support to Judiciary):** अदालती आदेशों का पालन सुनिश्चित करना और न्यायिक कार्यों में प्रशासनिक सहयोग देना।

9. **आपदा प्रबंधन और राहत कार्य (Disaster Management and Relief):** प्राकृतिक आपदाओं, महामारी या युद्ध जैसे संकटों में राहत कार्य करना। **कार्यपालिका के अंतर्गत कौन-कौन आता है? ** राष्ट्रपति / राज्यपाल** (संवैधानिक प्रमुख)* **प्रधानमंत्री / मुख्यमंत्री** (वास्तविक कार्यकारी प्रमुख)

* **मंत्रिपरिषद**

* **प्रशासनिक अधिकारी** (IAS, IPS, आदि)

****कार्यपालिका में शक्तियों का केंद्रण (Concentration of Powers in the Executive)****
एक महत्वपूर्ण राजनीतिक अवधारणा है, जो बताती है कि किस प्रकार शासन व्यवस्था में कार्यपालिका के पास अनेक शक्तियाँ एकत्रित हो जाती हैं – कभी-कभी इतनी अधिक कि वह ****लोकतंत्र के संतुलन**** को प्रभावित कर सकती है।

□ ****शक्तियों का केंद्रण: अर्थ****शक्तियों का केंद्रण**** का अर्थ है – शासन की विभिन्न शक्तियों (जैसे विधायी, कार्यकारी, न्यायिक) का ****एक ही संस्था या व्यक्ति में एकत्र हो जाना****। कार्यपालिका में शक्तियों का केंद्रण तब होता है जब कार्यपालिका न केवल प्रशासनिक कार्य करती है, बल्कि विधायी और न्यायिक क्षेत्रों में भी हस्तक्षेप करने लगती है।

□ ****कार्यपालिका में शक्तियों के केंद्रण के मुख्य कारण****:

1. ****प्रधानमंत्री / मुख्यमंत्री की प्रमुख भूमिका**** * संसदीय प्रणाली में प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री के हाथ में पूरी कार्यपालिका की वास्तविक शक्ति होती है।

* मंत्रियों की नियुक्ति और बर्खास्तगी का अधिकार भी उन्हीं के पास होता है।

2. ****लोकप्रिय जनादेश का प्रभाव***** भारी बहुमत से चुनी गई सरकार कार्यपालिका को अधिक आत्मविश्वास और शक्ति देती है। * इससे वह अन्य संस्थाओं पर भी प्रभाव डाल सकती है।

3. ****नियमों और नीतियों का निर्धारण**** * कार्यपालिका नीतियाँ बनाती है और उन्हें लागू करती है। कई बार यह प्रक्रिया विधायिका को दरकिनार करके भी होती है।

4. ****आपातकालीन शक्तियाँ***** संविधान के अनुच्छेद 352, 356, और 360 के तहत कार्यपालिका को विशेष शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, जो लोकतांत्रिक अधिकारों को सीमित कर सकती हैं।

5. ****ब्यूरोक्रेसी पर नियंत्रण**** * कार्यपालिका के पास नौकरशाही का सीधा नियंत्रण होता है, जिससे वह प्रशासनिक मशीनरी को अपनी इच्छानुसार चला सकती है।

6. ****न्यायपालिका में हस्तक्षेप (कभी-कभी)***** जब कार्यपालिका न्यायपालिका के कार्यों में दखल देने की कोशिश करती है, तब शक्तियों का संतुलन बिगड़ता है।

□ ****इसका प्रभाव क्या होता है?***

| सकारात्मक पक्ष

| नकारात्मक पक्ष

| निर्णय लेने की गति तेज होती है

| सत्ता का दुरुपयोग हो सकता है

| योजनाओं का त्वरित क्रियान्वयन होता है | लोकतंत्र कमजोर हो सकता है

| संकट के समय सशक्त नेतृत्व मिलता है | विधायिका और न्यायपालिका का महत्व घटता

है | ब्रिटिश प्रधानमंत्री (British Prime Minister) यूनाइटेड किंगडम की शासन प्रणाली में

****सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति**** होता है। वह देश की कार्यपालिका का

****वास्तविक प्रमुख (Real Executive Head)**** होता है, जबकि ब्रिटेन का राजा या रानी

केवल ****संवैधानिक प्रमुख (Constitutional Head)**** होता है।

****ब्रिटिश प्रधानमंत्री: पद की स्थिति**** ब्रिटिश प्रधानमंत्री ****संसदीय प्रणाली**** के अंतर्गत

कार्य करता है।* वह ****हाउस ऑफ कॉमन्स (लोकसभा के समकक्ष)**** में सत्तारूढ़ दल का नेता

होता है।* वह ****राजा/रानी द्वारा नियुक्त**** किया जाता है, लेकिन वही नेता प्रधानमंत्री बनता

है जिसके पास हाउस ऑफ कॉमन्स में बहुमत होता है।

****ब्रिटिश प्रधानमंत्री की शक्तियाँ:*** 1. □ ****कार्यपालिका पर नियंत्रण****

* प्रधानमंत्री पूरी ****कैबिनेट (मंत्रिपरिषद)**** का प्रमुख होता है।

* मंत्रियों की नियुक्ति, बर्खास्तगी और विभागों का आवंटन प्रधानमंत्री करता है।

* कैबिनेट की बैठकों की अध्यक्षता करता है और निर्णयों का मार्गदर्शन करता है।

2. □ ****नीति निर्धारण की शक्ति**** देश की ****आंतरिक और विदेश नीति**** का निर्माण करता

है।* बजट और प्रमुख योजनाओं की दिशा तय करता है।

3. □ ****संसद पर प्रभाव**** प्रधानमंत्री हाउस ऑफ कॉमन्स का सदस्य होता है और वहीं से

सरकार का संचालन करता है।* बहुमत होने के कारण विधेयकों को पारित कराना सरल होता है।

* यदि संसद में विश्वास मत हार जाए, तो प्रधानमंत्री को इस्तीफा देना पड़ता है।

4. □ ****राज्य प्रमुख पर प्रभाव**** यद्यपि राजा/रानी औपचारिक रूप से प्रधानमंत्री को नियुक्त करते हैं, लेकिन वे प्रधानमंत्री के परामर्श से ही कार्य करते हैं। सभी शाही कार्य जैसे संसद का सत्र बुलाना, भंग करना आदि प्रधानमंत्री की सलाह पर होते हैं।

5. □ ****विदेश नीति और रक्षा**** प्रधानमंत्री ****विदेशों से संबंधों**** की देखरेख करता है।

* वह रक्षा, युद्ध और शांति के निर्णयों में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

6. □ ****नियंत्रण और समन्वय**** सरकार के सभी विभागों और मंत्रालयों में ****समन्वय और नियंत्रण**** बनाए रखता है। नौकरशाही पर भी उसका प्रभाव होता है।

****ब्रिटिश प्रधानमंत्री की स्थिति:**** ब्रिटेन में प्रधानमंत्री को कहा गया है:

****"Primus inter pares" - अर्थात् 'समानों में प्रथम'।****

इसका मतलब है कि वह कैबिनेट के अन्य मंत्रियों के समान होता है, लेकिन सबसे प्रभावशाली होता है। उसकी शक्ति ****राजनीतिक दल, संसद और जनता के समर्थन पर**** आधारित होती है, न कि किसी संवैधानिक विशेषाधिकार पर।

****कुछ सीमाएँ (Limitations)**** अगर प्रधानमंत्री संसद का विश्वास खो देता है, तो उसे इस्तीफा देना पड़ता है।

* उसकी शक्तियाँ ****राजा/रानी, संसद, न्यायपालिका और जनता द्वारा सीमित**** होती हैं।

* ****कैबिनेट के सामूहिक उत्तरदायित्व**** के सिद्धांत के कारण वह अकेले निर्णय नहीं ले सकता। ****अमेरिकी राष्ट्रपति**** (President of the United States) अमेरिका का ****प्रमुख कार्यकारी (Chief Executive)****, ****राज्य का प्रमुख (Head of State)**** और ****सरकार का प्रमुख (Head of Government)**** होता है। वह दुनिया के सबसे शक्तिशाली पदों में से एक है, और अमेरिका के संघीय शासन तंत्र में उसका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

****अमेरिकी राष्ट्रपति की स्थिति:**** अमेरिका में ****राष्ट्रपति प्रणाली (Presidential System)**** लागू है, जिसमें राष्ट्रपति ****कार्यपालिका का एकमात्र प्रमुख**** होता है।

* वह ****सीधे जनता द्वारा चुना जाता है**** (Electoral College प्रणाली के माध्यम से)।

* वह संविधान द्वारा निर्धारित **साफ-साफ शक्तियाँ** और **सीमाओं** के अंतर्गत कार्य करता है।* उसका कार्यकाल **4 वर्षों का** होता है (अधिकतम दो बार चुना जा सकता है)।

□ **अमेरिकी राष्ट्रपति की शक्तियाँ:**

1. □ **कार्यपालिका शक्ति (Executive Powers):**

संघीय प्रशासन का प्रमुख होता है।

कैबिनेट और संघीय एजेंसियों के प्रमुखों की नियुक्ति करता है (जैसे - विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री, CIA निदेशक आदि)।

* विभिन्न विभागों और एजेंसियों के कामकाज की निगरानी करता है।

2. □ **न्यायिक शक्ति (Judicial Powers):**

संघीय न्यायाधीशों, विशेषकर **सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों** की नियुक्ति करता है (सीनेट की सहमति से)।* दोषियों को **माफी (Pardon)**, **दंड स्थगन (Reprieve)** या **सजा में कटौती (Commutation)** दे सकता है।

3. □ **विधायी शक्ति (Legislative Powers):****कांग्रेस (Congress)** के सत्र को बुला सकता है।* कानूनों को **वीटो** करने का अधिकार होता है।

* **स्टेट ऑफ द यूनियन** (State of the Union) भाषण के माध्यम से राष्ट्रीय नीतियों की दिशा तय करता है।

4. □ **विदेश नीति संबंधी शक्ति (Foreign Policy Powers):**

अन्य देशों के साथ **संधि (Treaty)** कर सकता है (सीनेट की मंजूरी आवश्यक)।

* **राजनयिक प्रतिनिधियों** की नियुक्ति करता है।

* **अंतरराष्ट्रीय समझौतों** और **संयुक्त राष्ट्र नीति** में केंद्रीय भूमिका निभाता है

5. □ ****सैन्य शक्ति (Military Powers):**** ****सशस्त्र सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर (Commander-in-Chief)**** होता है। * युद्ध के समय सैन्य कार्रवाइयों का आदेश दे सकता है (हालाँकि युद्ध की घोषणा का अधिकार केवल कांग्रेस को है)।

6. □ ****वित्तीय शक्ति (Financial Powers):**** बजट प्रस्ताव तैयार करता है और उसे कांग्रेस में पेश करता है।

* आर्थिक नीति और कर सुधारों में नेतृत्व करता है। ****अमेरिकी राष्ट्रपति के कार्य**** बहुत व्यापक और विविध होते हैं क्योंकि वह संयुक्त राज्य अमेरिका का ****सरकार और राज्य - दोनों का प्रमुख**** होता है। अमेरिकी संविधान में राष्ट्रपति को कई ****कार्य और शक्तियाँ**** प्रदान की गई हैं, जिनके माध्यम से वह देश की कार्यपालिका चलाता है और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका का नेतृत्व करता है।

□ ****अमेरिकी राष्ट्रपति के प्रमुख कार्य (Main Functions of the U.S. President):****

1. □ ****कार्यपालिका प्रमुख के रूप में (As Chief Executive):****

संघीय सरकार के सभी विभागों और एजेंसियों का प्रमुख होता है।

* कैबिनेट मंत्रियों, विभागाध्यक्षों, राजनयिकों आदि की नियुक्ति करता है (सीनेट की मंजूरी से)।

* सरकारी नीतियों और कानूनों के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी निभाता है।

2. □ ****राज्य का प्रमुख (Head of State):****अमेरिका का ****प्रमुख प्रतिनिधि**** होता है, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नेतृत्व करता है।

* विदेशों से राजनयिक संबंध स्थापित करता है और समझौते करता है।

3. □ ****सरकार का प्रमुख (Head of Government):****नीति निर्माण, बजट प्रस्ताव, और सरकार की योजना का नेतृत्व करता है।

* प्रशासन के संचालन हेतु आदेश (Executive Orders) जारी करता है। 4. □ ****विधायी कार्य (Legislative Functions):********स्टेट ऑफ द यूनियन (State of the Union)**** भाषण के माध्यम से कांग्रेस को नीति दिशा देता है।

* कानूनों को ****वीटो**** कर सकता है या उन्हें स्वीकृति दे सकता है।

* विशेष परिस्थितियों में ****कांग्रेस का विशेष सत्र**** बुला सकता है।

5. □ ****न्यायिक कार्य (Judicial Functions):**** ****संघीय न्यायाधीशों****, विशेष रूप से ****सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों**** की नियुक्ति करता है (सीनेट की सहमति से)।

* दोषियों को ****माफी (Pardon)****, ****दंड माफी (Reprieve)**** और ****दंड कम (Commutation)**** करने का अधिकार होता है।

6. □ ****विदेश नीति और राजनयिक कार्य (Foreign Affairs & Diplomatic Functions):**** अंतरराष्ट्रीय संधियाँ करता है (सीनेट की मंजूरी के साथ)।

* राजदूतों की नियुक्ति करता है और अन्य देशों से संबंध स्थापित करता है।

* युद्ध और शांति से जुड़े निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7. □ ****सैन्य प्रमुख के रूप में (As Commander-in-Chief):****

अमेरिकी सेना, नौसेना, वायुसेना, मरीन और कोस्ट गार्ड का सर्वोच्च प्रमुख होता है।

* युद्धकालीन निर्णय, सैन्य कार्रवाई का आदेश और रणनीतिक संचालन कर सकता है (हालाँकि युद्ध की घोषणा केवल कांग्रेस कर सकती है)।

8. □ ****राजनीतिक नेता के रूप में (As Political Leader):**** वह अपनी पार्टी का शीर्ष नेता होता है। चुनावी अभियानों का नेतृत्व करता है और पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाता है।

9. □ ****संकट प्रबंधन और आपातकालीन कार्य (Crisis Management):**** प्राकृतिक आपदाओं, आतंकवादी हमलों, महामारी आदि स्थितियों में ****त्वरित निर्णय**** लेता है।

* संघीय एजेंसियों को राहत और बचाव कार्यों के लिए निर्देश देता है।

Chapter-12

सरकार के अंग- विधान पालिका

****विधानसभा (Legislature): शक्तियाँ तथा कार्य****

विधानसभा या विधानपालिका वह संस्था है जो किसी देश या राज्य के कानून बनाने का कार्य करती है। भारत में यह दो स्तरों पर होती है – केंद्र सरकार के लिए संसद और राज्य सरकारों के लिए राज्य विधानमंडल।

1. विधानपालिका की शक्तियाँ (Powers of Legislature)

(a) विधायी शक्ति (Legislative Power):** कानून बनाना, संशोधित करना या निरस्त करना। संविधान के अनुच्छेदों के अनुसार नए कानून बनाना। बजट (वित्तीय) विधेयक पास करना। केंद्र और राज्य के बीच कानून बनाने के विषयों का निर्धारण।

(b) वित्तीय शक्ति (Financial Power):** सरकार का बजट मंजूर करना।* कर लगाना, कर माफ़ करना या करों में बदलाव करना।* सरकारी खर्च की समीक्षा और स्वीकृति।

(c) नियंत्रण की शक्ति (Control Power):** कार्यपालिका (सरकार) की जांच करना।

* प्रश्नकाल, चर्चा, और विशेष समिति के माध्यम से सरकार की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखना। नो-विश्वास प्रस्ताव लाकर सरकार को गिराना।

(d) संवैधानिक शक्ति (Constitutional Power):**

संविधान में संशोधन करने की प्रक्रिया में भाग लेना। राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्य न्यायाधीश जैसे महत्वपूर्ण पदों के लिए सुझाव देना।

2. विधानपालिका के कार्य (Functions of Legislature)

(a) कानून निर्माण (Legislation):**विधानसभा का प्रमुख कार्य कानून बनाना है। यह विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक मुद्दों पर नए नियम और कानून बनाती है।

(b) बजट पारित करना (Budget Approval):**वित्तीय संसाधनों का आवंटन करना और सरकार के व्यय को नियंत्रित करना।

(c) कार्यपालिका की निगरानी (Executive Control):**

सरकार के कामकाज पर नियंत्रण रखना, सवाल पूछना, जांच समिति बनाना।

(d) जनप्रतिनिधित्व (Representation):**लोगों की समस्याओं को विधानसभा में उठाना और उनके हितों का प्रतिनिधित्व करना।

e) नीति निर्धारण (Policy Making):**देश या राज्य के विकास के लिए नीतियों का निर्धारण करना।**अमेरिकन सीनेट (American Senate): रचना, कार्य और स्थिति**

1. रचना (Composition)*संख्या:** अमेरिका की सीनेट में कुल 100 सदस्य होते हैं **प्रत्येक राज्य का प्रतिनिधित्व:** हर एक राज्य से 2-2 सीनेट सदस्य चुने जाते हैं, चाहे उस राज्य की जनसंख्या कितनी भी हो।**कार्यकाल:** सीनेट सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है।

चुनाव प्रणाली: सीनेट के सदस्य सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं। हर 2 वर्ष में लगभग एक-तिहाई सदस्य चुनाव होते हैं ताकि सदन में निरंतरता बनी रहे।

*आयु एवं योग्यता:**न्यूनतम आयु 30 वर्ष होनी चाहिए। * कम से कम 9 वर्ष तक अमेरिका का नागरिक होना आवश्यक। * जिस राज्य से चुना गया है, वहाँ निवास करता होना चाहिए।

2. कार्य (Functions)(a) विधायी कार्य (Legislative Functions):** नए कानून बनाना, संशोधन करना और पुराने कानूनों को रद्द करना।* बजट और वित्तीय बिलों पर चर्चा और अनुमोदन।

*(b) सलाह और अनुमोदन (Advice and Consent):** राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त उच्च अधिकारियों, जैसे सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश, मंत्री, और दूतावास के प्रमुखों की नियुक्ति को अनुमोदित करना।

* अंतरराष्ट्रीय संधियों को मंजूरी देना।*(c) जांच और नियंत्रण (Oversight):** कार्यपालिका की गतिविधियों की जांच करना।* विशेष समिति बनाकर सरकारी मामलों की समीक्षा करना।

(d) महाभियोग (Impeachment) कार्यवाही:** सदन में महाभियोग प्रस्ताव पारित होने पर, सीनेट अभियोग को सुनती है और दोषी पाए जाने पर राष्ट्रपति या अन्य सरकारी अधिकारियों को पद से हटाने का निर्णय लेती है।

3. स्थिति (Position) अमेरिकी संसद (Congress) दो सदनों में बंटी है: **हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स** और **सीनेट**।* सीनेट को **"Upper House"** या उच्च सदन कहा जाता है, जबकि हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स को "Lower House"।* सीनेट की स्थिति विशेष और महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि हाउस जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व करता है। संविधान में दी गई विशेष शक्तियों के कारण सीनेट की भूमिका संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण है।

* राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग कार्यवाही में सीनेट निर्णायक भूमिका निभाती है।

1. **राज्यों का समान प्रतिनिधित्व**हर राज्य, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, सीनेट में बराबर प्रतिनिधित्व (2 सदस्य) प्राप्त करता है। इससे छोटे राज्यों की आवाज़ भी बराबर सुनवाई जाती है और वे बड़े राज्यों के दबाव में नहीं आते। यह संघीय ढांचे की स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

2. **स्थायित्व और निरंतरता**सीनेट के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है, और हर दो साल में केवल एक-तिहाई सदस्य बदलते हैं। इससे सीनेट में अनुभव और स्थिरता बनी रहती है, जो प्रभावशाली निर्णय लेने में मदद करती है।

3. **महत्वपूर्ण नियुक्तियों की स्वीकृति**राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त उच्च अधिकारियों, जैसे सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश, मंत्रिमंडल के सदस्य और अन्य प्रमुख पदों पर नियुक्ति की स्वीकृति सीनेट से ही मिलती है। इससे सत्ता का संतुलन बना रहता है।

4. **अंतरराष्ट्रीय संधियों की मंजूरी** सीनेट ही अंतरराष्ट्रीय संधियों को अनुमोदित करता है, जो देश की विदेश नीति में इसकी भूमिका को महत्वपूर्ण बनाता है। 5. **महाभियोग प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका**महाभियोग कार्यवाही में, सीनेट अभियोग के फैसले का निर्णय करती है। यह कार्यपालिका को कानून के दायरे में रखने में सहायक है।

6. ****प्रभावशाली और गंभीर विचार-विमर्श का मंच**** चूंकि सदस्य कम और अनुभवी होते हैं, सीनेट में चर्चा अधिक गंभीर, सुविचारित और संतुलित होती है, जो बेहतर निर्णय लेने में मदद करती है।

7. ****फेडरल सिस्टम की रक्षा**** सीनेट संघीय प्रणाली को मजबूती प्रदान करता है क्योंकि यह राज्यों की संप्रभुता और समानता की रक्षा करता है।

****सारांश में:**** सीनेट की महत्ता इसलिए है क्योंकि यह राज्यों को समान प्रतिनिधित्व देता है, स्थिरता और अनुभव सुनिश्चित करता है, उच्च नियुक्तियों और संधियों को अनुमोदित करता है, तथा कार्यपालिका के खिलाफ संतुलन और नियंत्रण बनाए रखता है।

ज़रूर! यहाँ ****अमेरिकी सीनेट**** और ****ब्रिटिश लार्ड्स सदन**** (House of Lords) की तुलना दी गई है ताकि दोनों के बीच मुख्य अंतर और समानताएँ स्पष्ट हों:

| विषय

अमेरिकी सीनेट (American Senate)

| ब्रिटिश लार्ड्स सदन (House of Lords)

****प्रकार**** निर्वाचित प्रतिनिधि (Elected House)

| नामित या विरासत में मिली सदस्यता (Appointed & Hereditary)

****सदस्यों की संख्या**** 100 (प्रत्येक राज्य से 2 सदस्य)

| लगभग 800+ सदस्य (सदस्य संख्या में परिवर्तन होता रहता है)

****सदस्य चयन विधि**** सीधे जनता द्वारा चुनाव

| जीवन पर्यंत नियुक्ति, विरासत में मिली सीटें, या आध्यात्मिक पदों के आधार पर

****कार्यकाल****

6 वर्ष (आंशिक पुनर्निर्वाचन 2-2 वर्ष में)

जीवन पर्यंत (कुछ विरासत में मिली सीटें होती हैं)

****प्रमुख कार्य**** कानून बनाना, नियुक्तियों की स्वीकृति, संधियों की मंजूरी, महाभियोग सुनवाई | कानूनों की समीक्षा, संशोधन, परामर्श, लेकिन सामान्यतः विधायी शक्ति सीमित

****विधायी शक्ति**** पूर्ण विधायी शक्ति
विधायी शक्ति सीमित, संसद के निचले सदन (Commons) के अधीन

****महाभियोग में भूमिका**** महाभियोग सुनवाई और फैसला करना
महाभियोग में कोई भूमिका नहीं

****राज्यों/क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व****

प्रत्येक राज्य को बराबर प्रतिनिधित्व

कोई क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व नहीं; व्यक्तिगत या पदाधिकार आधारित

****अंतरराष्ट्रीय संधियों की स्वीकृति**** हां
नहीं

****विधायी प्रक्रिया में स्थान**** उच्च सदन (Upper House)
उच्च सदन (Upper House)

****महत्त्व****

संघीय प्रणाली में राज्यों का प्रतिनिधित्व, स्थिरता, एवं सत्ता संतुलन विधायी जांच-परख का मंच, कानूनों को परिष्कृत करना, परामर्शदाता

सारांश: * ****सीनेट**** एक निर्वाचित, पूर्ण विधायी शक्तियाँ रखने वाला उच्च सदन है जो राज्यों का समान प्रतिनिधित्व करता है। ****लार्ड्स सदन**** अधिकतर नामित या विरासत में मिली सदस्यता वाला है, जिसका मुख्य कार्य विधायी बिलों की समीक्षा और संशोधन करना है, और इसकी शक्ति हाउस ऑफ कॉमन्स से कम होती है।

Chapter-13

सरकार के अंग- न्याय पालिका

****न्यायपालिका का अर्थ और कार्य****

1. ****न्यायपालिका का अर्थ (Meaning of Judiciary)**** न्यायपालिका वह अंग है जो कानूनों की व्याख्या करता है, लागू करता है और किसी विवाद को न्यायसंगत तरीके से सुलझाता है। यह सरकार का वह विभाग है जो न्याय प्रदान करता है और सुनिश्चित करता है कि सभी कानूनों का पालन हो।

2. ****न्यायपालिका के कार्य (Functions of Judiciary)****

(a) कानून की व्याख्या (Interpretation of Laws):**

न्यायपालिका यह तय करती है कि कानूनों का मतलब क्या है और उन्हें कैसे लागू किया जाना चाहिए।

b) विवादों का निपटारा (Dispute Resolution):** यह व्यक्तियों, संस्थाओं, या सरकार के बीच कानूनी विवादों को न्यायसंगत तरीके से सुलझाती है।

(c) न्याय प्रदान करना (Dispensing Justice):** न्यायपालिका न्याय सुनिश्चित करती है ताकि सभी को उनके अधिकार मिलें और अन्याय से बचाव हो।

(d) संवैधानिक समीक्षा (Judicial Review):** यदि कोई कानून या सरकारी कार्रवाई संविधान के खिलाफ होती है, तो न्यायपालिका उसे अमान्य घोषित कर सकती है।

(e) कानूनों का पालन सुनिश्चित करना (Enforcement of Laws):* न्यायपालिका यह सुनिश्चित करती है कि सभी नागरिक और संस्थाएं कानून का पालन करें।

(f) अधिकारों की रक्षा (Protection of Rights):** यह नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है और सरकार की मनमानी से बचाती है।

3. ****न्यायपालिका की विशेषताएँ**** स्वतंत्र और निष्पक्ष होती है।* सरकार की अन्य शाखाओं से स्वतंत्र रहती है। न्यायाधीशों की नियुक्ति संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार होती है।

* उसका निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होता है।

सारांश

| विषय | विवरण

| अर्थ | कानून की व्याख्या और न्याय प्रदान करने वाली संस्था |

| मुख्य कार्य | कानून की व्याख्या, विवाद निपटारा, न्याय देना, संवैधानिक समीक्षा

| विशेषता | स्वतंत्र, निष्पक्ष, संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करती है

****आधुनिक युग में न्यायपालिका का महत्व****

1. ****कानून और व्यवस्था बनाए रखना**** आधुनिक समाज जटिल और विविधतापूर्ण हो गया है। ऐसे में न्यायपालिका समाज में शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने का अहम साधन है। यह सुनिश्चित करती है कि नियम-कानून का पालन हो और अनुशासन बना रहे।

2. ****संविधान की रक्षा**** आधुनिक लोकतांत्रिक देशों में संविधान सर्वोच्च होता है। न्यायपालिका संविधान की रक्षा करती है और सरकार या किसी भी व्यक्ति द्वारा संविधान के उल्लंघन को रोकती है। यह संवैधानिक मामलों में अंतिम फैसला देने वाली संस्था होती है।

3. ****मौलिक अधिकारों की रक्षा**** आधुनिक युग में नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है। न्यायपालिका नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है और अगर ये अधिकार किसी से छीनने की कोशिश हो तो न्यायालय हस्तक्षेप करता है।

4. ****सरकार पर नियंत्रण**** न्यायपालिका कार्यपालिका और विधायिका की शक्तियों पर नियंत्रण रखती है। यह सुनिश्चित करती है कि सरकार अपनी शक्तियों का दुरुपयोग न करे और लोकतांत्रिक व्यवस्था सही तरीके से चले।
5. ****विवादों का शांतिपूर्ण समाधान**** आधुनिक समाज में विभिन्न प्रकार के विवाद और संघर्ष होते हैं – व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक। न्यायपालिका इन विवादों को शांतिपूर्ण और कानूनी तरीके से हल करती है।
6. ****न्याय की सार्वभौमिकता**** आधुनिक न्यायपालिका का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि यह सभी के लिए न्याय सुनिश्चित करती है – चाहे वह अमीर हो या गरीब, बड़ा हो या छोटा।
7. ****कानून की व्याख्या और विकास**** समय के साथ समाज बदलता रहता है, नए मुद्दे सामने आते हैं। न्यायपालिका ऐसे समय में कानूनों की व्याख्या करती है और आवश्यकतानुसार नए मानदंड स्थापित करती है।